CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

G-36

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संसार के सम्वत्

(ऋषि दयानन्द की शतसांवत्सरिक जयन्ति का सुलभ संस्करण)

सम्वत्सरोऽसि परिवत्सरोऽसी दावत्सरोऽसी द्वत्सरोऽसि वत्सरोऽसि । उषस्ते कल्पान्ताम् होरात्रास्ते कल्पन्ताम-र्द्धमासास्ते कल्पन्ताम् मासास्ते कल्पन्तामृत वस्ते कल्पन्तां सम्वत्सरस्ते कल्पताम् । यजु० २७ । ४५

State Museum Library Lucknow

लेखक

जगन्नलाल गुप्त मुख्तार

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY

Acc. No.

Book No.

Digitized by Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

॥ ओ३म् ॥

ऋतवस्ते यज्ञं वितन्वन्तु मासा रक्षन्तु ते हविः ।
संवत्सरस्ते यज्ञं दधातु नः प्रजां च परिधातु नः ।

यजु २६ । १४

ऐतिहासिक ग्रन्थमाला—पुस्तकाङ्क १

संसार के संवत

जिसमें

संसार के प्रायः सब ही इतिहासोपयोगी संवतों का वर्णन, तत्तद्देशीय पञ्चांग और उन सम्वतादि को विक्रम पञ्चांग से मिलाने के नियम और सारिणियें दीगई हैं ।

जगन्नाथ गुप्त मुख्तार द्वारा रचित और प्रकाशित

मु० हरप्रसाद प्रेस बुलन्दशहर में मु० हरप्रसाद के प्रबन्ध से मुद्रित

श्री मद्दयानन्दाब्द १०१ । विक्रमाब्द १९८१

प्रथमवार १००० मूल्य ॥-)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विषय सूची।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुक्रम०	विषय	पृष्ठ
	भूमिका	क-ग
१	वर्ष और उसका मान	१
२	योरोप के वर्षका मान	३
३	अंग्रेज़ी महीनों की उत्पत्ति	४
४	वैदिक काल का पञ्चांग	५
५	संवत	७
६	मुख्य २ संवतों की सूची	७
७	आर्य संवत	९
८	बार्हस्पत्यमान और ६० वर्ष का युग	१०
९	युधिष्ठिरीय और कलि संवत	१२
१०	सप्तर्षि संवत	१३
११	शककाल या बौद्ध संवत	१५
१२	महावीर या जैन संवत	२१
१३	मौर्य काल	२२
१४	सत्यकेतु का संवत	२२
१५	पार्थ संवत	२६
१६	विक्रम संवत और शाके शालिवाहन	३२
१७	चेदि या कलिचुरि संवत	२६
१८	गुप्त संवत	२७
१९	वल्लभी संवत	२८
२०	श्री हर्ष सम्वत	२९
२१	नैपाल का संवत	२९
२२	कोलम्बी संवत	३०
२३	सिंह संवत	३१
२४	लक्ष्मणसेनाब्द	३१
२५	राजशक या श्री शिव संवत	३३
२६	श्री मद्दयानन्दाब्द	३३
२७	ब्रह्मा का सम्वत	
२८	मगी सम्वत	३४
२९	रोमन संवत	३४
३०	यूनानी संवत	३७
३१	सन ईस्वी	४०
३२	जावा और बालीके संवत	४२
३३	सन हिजरी	४३
३४	सन हिजरी से सन ईस्वी बनाना	४७
३५	हिजरी सन का शाका और संवत से मिलान	४८
३६	हिजरी तारीख़के वार जानना	५१
३७	पारसी या ईरानी संवत	५३
३८	पारसी दिनों के नाम	५४
३९	पारसी दिनोंके अनुसार वार मिलाना	५५
४०	चीनी पञ्चांग	५६
४१	तुर्की सन	५८
४२	हिजरी से पीछे के सन-सूर-बंगला-विलायती-बमली-फ़स्ली और इलाही सन	५९
४३	जुलूसी सन-आदिलशाही	६३
४४	मुग़ल बादशाहोंके जुलूसी सन	६४
४५	सौर पञ्चांग	६७
४६	सन ईस्वीकी तारीख़के दिन जानना	६९
४७	सौर तिथिका वार जानना	६९
४८	चान्द्र वर्ष और तिथि का सन ईस्वी से मिलान	७०
४९	अधिमास	७०
५०	क्षयमास	७१
५१	सारिणियां	७१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षमा प्रार्थना ॥

खेद है कि कई कारणों से प्रूफ की बहुत सी और शोचनीय अशुद्धियां रह गई जैसे पृष्ठ २६ पर "वर्धत" के स्थान में "वर्ध" छप गया है; ऐसी अशुद्धियां विशेष कर पृष्ठ २६ से ३६ तक ही अधिक हैं। पाठकगण क्षमा करें।

विनीत

प्रकाशक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

देश में इस समय सर्वत्र जागृति हो रही है। राष्ट्र 'अपना' 'पराया' समझने लग गया है, फिर आश्चर्य ही क्या है यदि वह अपने संवत् की रक्षा करने की चिन्ता भी करे।

प्रायः देखने में आता है कि राष्ट्र के पढ़े लिखे नवयुवक, विशेष कर अंग्रेज़ी शिक्षित विद्वान, अपने संवत् और राष्ट्रीय पञ्चांगके परिचय से शून्य होते हैं, क्योंकि उन्हें अपने शिक्षण-कालमें उससे काम ही नहीं पड़ता, परन्तु साथ ही राष्ट्रीय लेखकों की प्रवृति नित्य संवत् और देशी पञ्चांग को प्रचार में लाने की होती जा रही है। बनारस का ज्ञानमण्डल, प्रयाग का हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन आदि कई संस्थायें इस ओर विशेष रूप से दत्तचित्त हो रही हैं। वास्तव में अपना संवत् और पञ्चांग हैं भी ऐसी ही चीज़ कि उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उन्हें भुला देने का अभिप्राय अपना महत्व, अपनी प्राचीनता, अपना इतिहास और अपनी पुराणपवित्र स्मृति को भुला देने का है। मुझे बड़ा खेद हुआ जब कि मेरे एक अनुभवी ग्रेजुएट मित्र ने (जो वकील और ब्राह्मण हैं) चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को मुझे नये वर्ष की बधाई दी, परन्तु उस समय मुझे दुःख हुआ जब मैंने उनकी भूल उन्हें बताई तो उन्हों ने उसे स्वीकार न करके स्वयं मुझसे अधिक 'हिन्दू' होने का दावा किया! अस्तु-

यह शुभ लक्षण है कि राष्ट्र के साहित्य सेवियों का ध्यान राष्ट्र-रचना के इस अंग पर भी लगा हुआ है, क्योंकि प्रायः नई छपने वाली पुस्तकों में अब देशी तारीख़ (अर्थात् तिथि) देने की चाल भी देखने में आने लगी है। परन्तु सब से अधिक यह आवश्यकता इतिहास की पुस्तकों में पड़ती है कि तारीख़ देशी लिखी जावें। इधर ऐसा कोई साधन नहीं दृष्ट पड़ता जिस से दस पांच हज़ार वर्ष के पञ्चांगों की कठिनता दूर होजावे। कदाच इतने लंबे समय के पञ्चांग तैयार किये भी जावें तो उनका निर्माण और प्रकाशन बहुत व्यय-साध्य और दीर्घ कालीन काम होगा तिसपर इतने अधिक पञ्चांग सब कोई रख भी न सकेंगे, और बहुतों को तो यह कल्पना भी एक बड़ी सी जान पड़ेगी।

परन्तु आवश्यकता अवश्य एक ऐसे साधन की थी जिस के द्वारा भारत का इतिहास अपने संवत और पञ्चांग के अनुसार लिखा और पढ़ा जा सके। जहां देश में राष्ट्रीय शिक्षा के संबंध में और २ बातें हो रही हैं वहां असली और पुरानी किताबों के आधार पर नई इतिहास की पुस्तक लिखने और पढ़ने की ओर भी शिक्षण-कला विशेषज्ञ ज़ोर देते जारहे हैं। हिन्दी भाषा ने निर्विवाद रूप से पिछले २० वर्ष की प्रति-द्वन्द्वता में राष्ट्र या भारत की मुख्य भाषा (Lingua Indica) के पद पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षमा प्रार्थना ॥

खेद है कि कई कारणों से प्रूफ़ की बहुत सी और शोचनीय अशुद्धियां रह गई हैं जैसे पृष्ठ २६ पर "वर्धत" के स्थान में "वर्ध" छप गया है; ऐसी अशुद्धियां विशेष कर पृष्ठ २६ से ३६ तक ही अधिक हैं। पाठकगण क्षमा करें।

विनीत

प्रकाशक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

देश में इस समय सर्वत्र जागृति हो रही है। राष्ट्र 'अपना' 'पराया' समझने लग गया है, फिर आश्चर्य ही क्या है यदि वह अपने संवत् की रक्षा करने की चिन्ता भी करे।

प्रायः देखने में आता है कि राष्ट्र के पढ़े लिखे नवयुवक, विशेष कर अंग्रेज़ी शिक्षित विद्वान, अपने संवत् और राष्ट्रीय पञ्चांगके परिचय से शून्य होते हैं, क्योंकि उन्हें अपने शिक्षण-कालमें उससे काम ही नहीं पड़ता, परन्तु साथ ही राष्ट्रीय लेखकों की प्रवृति नित्य संवत् और देशी पञ्चांग को प्रचार में लाने की होती जा रही है। बनारस का ज्ञानमण्डल, प्रयाग का हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन आदि कई संस्थायें इस ओर विशेष रूप से दत्तचित्त हो रही हैं। वास्तव में अपना संवत् और पञ्चांग हैं भी ऐसी ही चीज़ कि उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। उन्हें भुला देने का अभिप्राय अपना महत्व, अपनी प्राचीनता, अपना इतिहास और अपनी पुराणपवित्र स्मृति को भुला देने का है। मुझे बड़ा खेद हुआ जब कि मेरे एक अनुभवी ग्रेजूएट मित्र ने (जो वकील और ब्राह्मण हैं) चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को मुझे नये वर्ष की बधाई दी, परन्तु उस समय मुझे दुःख हुआ जब मैंने उनकी भूल उन्हें बताई तो उन्हों ने उसे स्वीकार न करके स्वयं मुझसे अधिक 'हिन्दू' होने का दावा किया! अस्तु-

यह शुभ लक्षण है कि राष्ट्र के साहित्य सेवियों का ध्यान राष्ट्र-रचना के इस अंग पर भी लगा हुआ है, क्योंकि प्रायः नई छपने वाली पुस्तकों में अब देशी तारीख़ (अर्थात् तिथि) देने की चाल भी देखने में आने लगी है। परन्तु सब से अधिक यह आवश्यकता इतिहास की पुस्तकों में पड़ती है कि तारीख़ देशी लिखी जावें। इधर ऐसा कोई साधन नहीं दृष्ट पड़ता जिस से दस पांच हज़ार वर्ष के पञ्चांगों की कठिनता दूर होजावे। कदाच इतने लंबे समय के पञ्चांग तैयार किये भी जावें तो उनका निर्माण और प्रकाशन बहुत व्यय-साध्य और दीर्घ कालीन काम होगा तिसपर इतने अधिक पञ्चांग सब कोई रख भी न सकेंगे, और बहुतों को तो यह कल्पना भी एक बड़ी सी जान पड़ेगी।

परन्तु आवश्यकता अवश्य एक ऐसे साधन की थी जिस के द्वारा भारत का इतिहास अपने संवत और पञ्चांग के अनुसार लिखा और पढ़ा जा सके। जहां देश में राष्ट्रीय शिक्षा के संबंध में और २ बातें हो रही हैं वहां असली और पुरानी किताबों के आधार पर नई इतिहास की पुस्तक लिखने और पढ़ने की ओर भी शिक्षण-कला विशेषज्ञ ज़ोर देते जारहे हैं। हिन्दी भाषा ने निर्विवाद रूप से पिछले २० वर्ष की प्रति-द्वन्द्वता में 'राष्ट्र या भारत की मुख्य भाषा (Lingua Indica) के पद पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बल पूर्वक अधिकार जमा लिया है। ऐसे अवसर पर इस बातकी बहुत बड़ी आवश्यकता है कि इस भाषा में भारत सम्बन्धी प्रत्येक प्राचीन, और हिन्दी से भिन्न भाषा की पुस्तकों के प्रामाणिक अनुवाद प्रकाशित हो जावें, फ़रिश्ता, अलबेरूनी, सैरुल-मुताखरीन, आईन अकबरी और गज़ेटीयर आदि ग्रन्थों के हिन्दी संस्करण भी तैयार हों, और और २ देशों के स्वतंत्र इतिहास भी लिखकर तैयार कर दिये जावें। परन्तु ऐसे अवसर पर मुख्य अड़चन यही पड़ती है कि जिन २ देशों के विद्वानों ने वे पुस्तकें लिखी हैं उन्हों ने अपने ही देश के प्रचलित पञ्चांगों का व्यौहार उन पुस्तकों में किया है, और उन पञ्चांगों को अपने पञ्चांग में परिवर्तन करने का कोई उपाय नहीं है।

पुरातत्व सम्बन्धी खोज का साहित्य भी हिन्दी में होना चाहिये। ऐसे साहित्य में भी भिन्न २ प्रकार के सन्-संवत् और पञ्चांगों का ज्ञान आवश्यक है और राष्ट्रीय दृष्टि से पुरातत्व को न तो भुलाया जा सकता है और न विदेशियों अथवा दूसरों के पञ्चांगों के आधार पर लिख कर, भंगे हुये वस्त्रों से सज्जित, रहने दिया जा सकता है।

इन्हीं जैसी और भी दो चार अड़चनों के कारण लेखक को यह पुस्तक लिखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस पुस्तक में लगभग ५० संवतों का उल्लेख किया गया है। इनमें प्रायः वे सब संवत् या सन् भी सम्मिलित हैं जिनका प्रचार भारत या उसके किसी भाग में है अथवा भारत सम्बन्धी इतिहास की असली किताबों में (Source Books) उनका उपयोग किया गया है। प्रत्येक संवत् को भारतीय (विक्रम) बनाने के लिये गणित के नियम और आवश्यक सारिणी भी दी हैं। पञ्चांग संबन्धी विवरणमें सौर और चान्द्र दोनों प्रकार के संवतों की गणना देकर लेखक ने सौर और चान्द्र दोनों प्रकार के संवतों को सन ईस्वी से (और हिजरी से भी) मिलाना सरल कर दिया है।

जहां तक हो सका है, साधारण नियमों का ही उपयोग किया गया है और वे सीधी सादी भाषा में लिखे गये हैं। उदाहरणों और प्रत्युदाहरणों से उन की उपयोग-विधि भी सरल और सुबोध करदी गई है। तिस पर भी लेखक इस बात के लिये क्षमा प्रार्थी है कि यदि कहीं कुछ जटिलता आगई हो तो महानुभाव क्षमा करें। लेखक को खेद है कि चान्द्र वर्ष सम्बन्धी गणना का नियम उसे और कोई सीधा और सरल न मिल सका। तो भी सोचने की बात है कि यदि इन नियमों के आधार पर १०००० वर्ष का पञ्चांग २०। २५ पृष्ठों में आगया और यदि उसे उपयोग में लाने के लिये कुछ मिहनत करनी भी पड़े तो विशेष हानि नहीं है। वास्तव में लेखक का यह प्रयास 'गागर में सागरको भरना' है और पाठकों का प्रयास उस सागरमय गागरको उठाकर उसे सागर की नाईं बर्तना है-गागर में ही उन्हें बड़े २ थाल चलाने होंगे।

संवतों का इतिहास, जो हमने प्रत्येक संवत के साथ दिया है, यद्यपि मनोरञ्जक भी है तो भी कई दृष्टि से ध्येय है। संसार भर के प्रायः सब ही सभ्य राष्ट्रों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संवतों का उल्लेख इस इतिहास में आ गया है। उसमें कई नई खोज भी सम्मिलित हैं जिन पर, सम्भव है, किन्हीं का मतभेद भी हो।

अन्तमें हम उन ग्रन्थकारोंके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिनके ग्रन्थोंसे इस पुस्तकके लिखने में हमें सहायता मिली है और जिनकी सूची हम यहां देते हैं। विज्ञ पाठकों से निवेदन है कि यदि उन्हें इस पुस्तक में दिये नियमों में कुछ दोष जान पड़े या इन से अच्छे नियम उनके पास हों तो अनुग्रह पूर्वक वे लेखक को सूचित करें, नये संस्करण में उनकी उचित सूचनाओं का समावेश धन्यवाद सहित कर दिया जावेगा।

जिन पुस्तकों से सहायता ली है उनकी सूची

हिन्दी विश्वकोष
बंगला विश्वकोष
गयास-उल्लुग़ात
तारीख़ दुनिया
आर्य जन्त्री सन् १९०३
नक्षत्र-सूची
बृहत्संहिता
ज्योतिः सार
राज-तरंगिणी
ज्योतिर्गणितम्

विनीत
जगतलाल गुप्त मुख़्तार

बुलन्दशहर
वैशाख शुक्ला ८ सम्वत् तदनु १२-५-२४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संसार के सम्वत्

वर्ष

जिस प्रकार वर्तमान काल में 'वर्ष' के प्रमाणसे कालकी गणना कीजाती है, वैसी गणना, हमारा विचार है, इतिहासातीत-कालसे पहिले नहीं थी। 'वर्ष' की इकाई, कालमानके लिये ऐतिहासिक काल की शोध है। इससे पूर्व काल की गणना 'वर्ष' द्वारा नहीं होती थी किन्तु ऋतुओं के चक्रों द्वारा की जाती थी।

एक शरद् ऋतु के आरम्भ से दूसरी शरद् ऋतु के आरम्भ होने तक का नाम उस समय 'शरद्' होता था। 'वर्ष', जो साल का पर्याय है, स्वयं एक ऐसा ही शब्द है जिसका अभिप्राय 'एक वर्षा-काल के आरम्भ से दूसरी वर्षा के आरम्भ होने तक का अन्तर्हित काल' समझा जाता है। कमसे कम संसार के पुस्तकालय में सब से प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद से तो हमारे इस विचार की पुष्टि होती है। ऋग्वेद के एक मंत्र में 'शरद्' पद ही वर्ष या संवत्सर के अर्थ में नहीं आया है किन्तु 'वसन्त' और 'हेमन्त' भी इसी अर्थ में प्रयुक्त हुये हैं *।

काल को नापने के लिये वास्तव में वह गणना एक वैज्ञानिक 'मान दण्ड' कही जा सकती है।

यह ऋतु-चक्र ही वैदिक भाषा में 'यज्ञ' और प्रजापति भी कहा गया है। इस की उत्पत्ति सूर्य से होती है अर्थात् ऋतुएँ सूर्य से उत्पन्न होती हैं इसी लिये सूर्य को (ऋतुओं का) 'उत्पादक' 'पिता' तथा 'सविता' कहा गया है और उस सविता का पुत्र उक्त ऋतुचक्र 'वत्स' 'वत्सर' या 'संवत्सर' कहा गया है। ये संवत्सर पांच प्रकार के होते थे इस लिये सूर्य को 'पञ्चपादं पितरं' (ऋ० १।१६४।१२) भी वर्णित किया है।

---

*शतं जीव शरदो वर्धमानः
शतं हेमन्ताञ्छतमु वसन्तान्।

ऋग्वेद मंडल १०।१६१।४

इस मंत्र में एक वर्षात्मक काल को 'शरद' 'हेमन्त' और 'वसन्त' तीन नामों से प्रकट किया गया है। तीनों ही पदों का अर्थ एक ऐसा युग या चक्र है जिसमें सब ही ऋतुएँ एक बार बर्त जाती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक 'संवत्सर' में पांच ऋतु होती हैं इस लिये "पञ्च देवाँ ऋतुशः सप्त सप्त" (ऋ० १० । ५५ । ३) भी उसका विशेषण नियत किया गया । एक संवत्सर में पांच ऋतु होती हैं और ऐसे पांच ऋतु-चक्रों का एक युग माना गया है । इन पांच ऋतु-चक्रों के नाम अलग २ इस प्रकार हैं: १ संवत्सर २ परिवत्सर ३ इडावत्सर ४ अनुवत्सर और ५ उद्वत्सर । इन पांच वर्षों के ऋतु सम्बन्धी सूक्ष्म विभागों का, गणित द्वारा, अनुसन्धान किया जाता था । यह अनुसन्धान ही 'पञ्चांग' कहा जाता था । पञ्चांग शब्द की व्युत्पत्ति वैदिक काल में यह ही थी कि उसमें पांच अंगों या (या वत्सरों) का वर्णन एकत्र होता था ।

ऋतु-चक्र की गणित में ज्यादः अन्तर न पड़ने देने के लिये प्राचीनों ने एक ऋतु-चक्र के १२ भाग किये थे "द्वादशाकृति दिव आहुः" (ऋग्वेद १ । १६४ । १२) । यह ऋतु-चक्र अवश्य ही सौर वर्ष होगा क्योंकि बिना सौर वर्ष की गणना के ऋतुओं की सुव्यवस्था नहीं रह सकती । अतः इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल में-इतिहास-कालसे बहुत पूर्व-सौर वर्ष सम्बन्धी सूक्ष्म गणित का आविष्कार इसी ऋतु-चक्र के कारण हुआ था ।

सूर्य के एक चक्र या एक ऋतुचक्र को भगण कहते हैं । इस भगण को ३६० भागों या सौर, तिथियों एवं ७२० सौर दिन-रात्रियों में विभाजित किये जाने का उल्लेख भी ऋग्वेद में मिलता है ।

द्वादश प्रधयश्चक्रमेकम् त्रीणि नभ्यानि क उ तच्चिकेत ।

तस्मिन्त्साकं त्रिशता न शंकवोऽर्पिताः षष्टिर्न चलाचलासः । ऋ० १ । १६४ ।४८

द्वादशारं नहि तज्जराय वर्वर्ति चक्रं परिद्यामृतस्य ।

आ पुत्रा अग्ने मिथुनासो अत्र सप्त शतानि विंशतिश्च तस्थुः । ऋ० १ ।.१६४ । ११

सूर्य की ये द्वादश 'प्रधयः' 'आर' या आकृतियें ही सूर्य की १२ संक्रान्तियें या सौर मास हैं जिनके नाम और सौर दिनों की संख्या इस तरह है ।

३० दिन मेष	३० दिन सिंह	३० दिन धनु
३० दिन वृष	३० दिन कन्या	३० दिन मकर
३० दिन मिथुन	३० दिन तुला	३० दिन कुम्भ
३० दिन कर्क	३० दिन वृश्चिक	३० दिन मीन

परन्तु ये सूर्य के ३६० दिन (या तिथियें) साधारण ३६० दिन से कुछ अधिक होते हैं और यह परिमाण ही सौर वर्ष का परिमाण (या प्रमाण) समझा जाता है । यह प्रमाण इस तरह माना जाता है ।

	दिन	घड़ी	पल	विपल
सूर्य सिद्धान्त के मत से	३६५	१५	३१	३०
सिद्धान्त शिरोमणि के मत से	३६५	१५	३०	२२ । ३०
		घण्टा	मि०	सि
योरोपियन विद्वानों का मतसे	३६५	१	४८	४६.०५४४४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस विवरणसे प्रकट होता है कि सूर्य के ३६० दिन साधारण ३६५¼ के लगभग होते हैं, इसी लिये सूर्य के ३० दिन भी साधारण ३० दिन से कुछ ज्यादा होते होंगे। वास्तव में सूर्य की भ्रमण-गणना करने से यह अन्तर उत्पन्न होता है और यह अन्तर प्रतिमास भूमि की गतिके अनुसार नीचे लिखे अनुसार न्यूनाधिक होता है।

सौरमास	दिन संख्या		सौर मास	दिन संख्या		सौर मास	दिन संख्या	
	सौर	साधारण		सौर	साधारण		सौर	साधारण
मेष	३०	३१	सिंह	३०	३१	धनु	३०	३१
वृष	३०	३१	कन्या	३०	३१	मकर	३०	३१
मिथुन	३०	३२	तुला	३०	३१	कुम्भ	३०	३१
कर्क	३०	३१	वृश्चिक	३०	३१	मीन	३०	३१

भारतवर्ष में (और पश्चिमी देशों में भी) लम्बी काल-गणना इसी संवत्सर या सौर वर्ष के अनुसार होती है। ज्योतिः शास्त्रों में युगों का हिसाब, ग्रहोंके भ्रमण और इतिहासों में सम्वत् भी इसी हिसाबके अनुसार, वर्षका मान मान कर, लिखे जाते हैं।

योरोप के सन्-सम्वत्—पाश्चात्य देशों में ईसवी सन् का रिवाज है। इस समय उसकी गणना सौर वर्ष के मान के अनुसार की जाती है, परन्तु पहिले ऐसा नहीं होता था। ईसवी सन् का मूल रोमन सम्वत् है। यूनान में ओलम्पियद् नामक वर्ष का प्रचार था जो जुलाई में शुरू होता था। फिर यह सम्वत् २१ वीं अप्रेल से, रोमन नगर की प्रतिष्ठा-दिवस की स्मृति में, गिना जाने लगा। किसी समय यह वर्ष ३६० दिन का माना जाता था। जूलियस सीज़र नामी रोमन सम्राट् ने इसे ३६५¼ दिन का ठहराया और प्रति चौथे वर्ष १ दिन बढ़ाने का नियम बनाकर उसने निश्चय किया कि प्रति वर्ष ३६५ दिन गिने जावें और चौथे वर्ष ३६६ दिन गिने जावें। पर इस हिसाब से एक वर्ष में ११ मिनट १० सिकण्ड (३१ पल ३० विपल) अधिक गिने जाते थे और ईसवी सन् हर वर्ष ३१ पल ३० विपल पीछे शुरू होता था जिस से असल में यह वर्ष वास्तविक वर्षसे इतना बड़ा होगया था और यह अन्तर इसी तरह बढ़ता गया यहां तक कि विक्रम सम्वत् १६३६ में यह बढ़ोत्तरी ११ दिन की हो गई। उस वर्ष पोप ग्रेगोरी ने इसे ठीक किया-उसने एक नियत तिथि के आगे एक साथ ११ श्रेणक दिन घटा कर गणित ठीक की। उसके बीज-संस्कार का प्रचार उस समय केवल इटलीमें ही हुआ था। इंगलैण्डने इसे सम्वत् १८०६ वि० में सितंबरके ११ दिन घटा कर

*और चौथे वर्ष कुम्भ में ७ दिन और बढ़ाकर ३१ दिन गिनते हैं। यह भेद स्थूल मान से दिया है। जितने साधारण दिनों में सूर्य की एक संक्रान्ति पूरी होती है उतने दिनों की संख्या ऊपर दी गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वीकार किया। पोपग्रेगोरी का वर्ष ३६५ दिन ५ घण्टे, ४६ मिनट और १२ सिकण्ड (३६५ दिन १४ घड़ी ३७ पल ३० विपल) का होता है जो वास्तविक सौर वर्ष से कुछ न्यूनाधिक है। इस ग़लती को इस तरह दूर किया जाता है कि प्रति ४ से बट जाने वाले वर्ष में ३६६ दिन तो मानते हैं पर पूर्ण शताब्दि पर ऐसा नहीं करते अर्थात् केवल उसी पूर्ण शताब्दि में ३६६ दिन माने जाते हैं जो ४०० से पूरी बंट जाती है जैसे, १२००, १६००, २८०० आदि।

अंग्रेज़ी महीने—अंगरेज़ी या योरोप में प्रचलित १२ महीनों का विवरण नीचे दिया जाता है। देश भेद, लिपि-भेद, तथा उच्चारण भेद से इन महीनों को कहीं २ और तरहसे भी बोलते हैं, परन्तु और बातों में भेद नहीं हैं :—

जनवरी (January) ३१ दिन; अपोलो के पुत्र का नाम जेनस था। इस के दो मुख थे। इस देवता के अधिष्ठान सिंहद्वार और राजमार्ग हैं। उसी की स्मृति में यह नाम है। रूस में इस नाम की एक पहाड़ी भी थी।

फ़रवरी (February) २८ दिन; इस मास में एक दिन बढ़ाकर ही क्षेपक वर्षों में ३६६ दिन गिने जाते हैं। विक्रमाब्द से ६५७ वर्ष पूर्व नूमा ने पहिले पहिल इसे रोमन पञ्चांगमें मिलाया। विक्रमाब्द से ४०० वर्ष पहिले तक यह मास वर्ष का अन्तिम मास गिना जाता था उस समय रोमन पत्रे में १० महीने ही थे। विक्रमाब्द से ३६६ वर्ष पूर्व, जनवरी वर्ष का पहिला महीना और फरवरी दूसरा गिने जाते हैं।

मार्च (March) ३१ दिन; पुराना रोमन वर्ष इसी मास से आरम्भ होता था। यह महीना मार्स (युद्धदेवता = मंगल की स्मृतिमें) मार्च कहा जाता है।

एप्रिल (April) ३० दिन; यह रोमन पञ्चांग में दूसरा महीना था।

मे (May) ३१ दिन; इस महीने की पहिली तारीख़ को रोमन लोग बुध की माता मया देवी (Maia) देवी को बलिदेते थे इस लिये इसका यह नाम है। प्राचीन रोमन इसे तीसरा महीना गिनते थे।

जून (June) ३० दिन; शनिदेवकी पुत्री और देवगुरु बृहस्पतिकी पत्नि (Juno) जूनो थी, उसकी पवित्र स्मृति और प्रतिष्ठा का यह महीना है।

जूलाई (July) ३१ दिन; रोमन पञ्चांग में इसे जूलियस ने अपनी स्मृति में बढ़ाया था।

अगस्ट (August) ३१ दिन; यह नाम रोमन सम्राट् आगस्टस की स्मृति में है।

सैप्टेम्बर (September) ३० दिन; रोमन लोगों का सातवां महीना था, परन्तु यह जनवरी से नवां पड़ता है। रोम के महाराजाओं ने कई बार इसके नाम बदले, परन्तु कोई भी बाक़ी न रहा, यह पुराना नाम ही रोमन पञ्चांग का इतिहास बताने के लिये जीवित है।

आक्टूबर (October) ३१ दिन; प्राचीन रोमन लोगों का आठवाँ महीना और वर्तमान पञ्चांग का दसवां महीना है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नौवम्बर (November) ३० दिन; जनवरी और फ़रवरी मिलाये जानेसे पहिले यह नवां महीना गिना जाता था; विक्रम से ६१७ वर्ष पहिले नूमा ने उक्त दो महीने बढ़ाये तब से यह ११वां हो गया।

डिसैम्बर (December) ३१ दिन : प्राचीन रोमन वर्ष का दसवां और अंतिम मास। कुछ दिनों तक जनवरी ११वां और फ़र्वरी १२ वां महीना भी गिने जाते थे। परन्तु उस समय वर्ष मार्च से आरम्भ होता था।

वैदिक मास और तिथि—सत्यनाम श्री सत्यव्रत सामश्रमीजी ने बड़े परिश्रम से वैदिक पञ्चांग की तिथि आदि का विवरण अपनी वैदिक पत्रिका 'उषा' के प्रथम भाग के ११वें और १२वें खण्डों में प्रकाशित किया था। वहींसे हम अनेक धन्यवाद पूर्वक नीचे हिन्दी अनुवाद उद्धृत करते हैं:—

संवत्सर, प्रजापति, महान् क = वर्ष।

मुहूर्त्त = दिन-रात का $\frac{1}{30}$ वां भाग; प्रातः = दिन का पहिला भाग; संगव = दिन का दूसरा भाग; मध्यान्ह = दिन का तीसरा भाग; अपरान्ह = दिन का चौथा भाग सायान्ह = दिन का पांचवां भाग

एक मुहुर्त्त के १५ भाग और उनके नाम-(१) इदानीं (पहिले आठ पल); (२) तदानीम् (९-१६ पल); (३) एतर्हि (१७-२४ पल); (४) क्षिप्रं (२५-३२ पल); (५) अजिरं ३३-४० पल); (६) आशु (४१-४८ पल); (७) निमेश (४९-५६ पल) (८) फण (५७-६४ पल); ९ द्रवन् (६५-७२ पल); (१०) अतिद्रवन् (७३-८० पल) (११ त्वरा (८१-८८ पल ; (१२) त्वरमाण (८९-९६ पल); (१३) आशु (९७-१०४ पल) (१४) आशीयान् (१०५-११२ पल); (१५ उच्च (११३-१२० पल)। एक मुहुर्त्त = दो घड़ी = १२० पल।

ऋतुएं—अग्नि = हेमन्त और शिशिर
सूर्य = वसन्त और निदाघ
चन्द्र = वर्षा और शरद्

महीने—(१) अरुण (अगहन); २ अरुणरज (पौष); (३) पुण्डरीक (माघ); (४) विश्वजित फाल्गुन); (५) अभिजित चैत्र ; (६) आर्द्र (वैशाख); (७) पिन्वान (ज्येष्ठ ; (८) अन्नवान (आषाढ़ ; ९ रसवान (श्रावण); (१०) इरावान (भाद्रपद); (११) सर्वौषधि (क्वाँर); (१२) सम्भर (कार्तिक); सहस्वान (अधिमास)।

पक्षों के नाम—

मास	शुक्ल पक्ष	कृष्ण पक्ष
अगहन	पवित्र	सहस्वान्
पौष	पवयिष्यन्	सहीयान्
माघ	पूत	ओजस्वान्
फागुन	मेध्य	सहवान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मास	शुक्ला पक्ष	कृष्ण पक्ष
चैत	यशः	जय
वैसाख	यशस्वन्	अभिजयन्
ज्येष्ठ	आयुः	सुद्रविणः
असाढ़	अमृत	द्रविणोदा
श्रावण	जीव	आद्र, पवित्र
भाद्रों	जीवयिष्यन्	हरिकेश
क्वार	स्वर्ग	मोद
कार्तिक	लोक	प्रमोद

दिन और रात के नाम

तिथि	शुक्ल पक्ष		कृष्ण पक्ष	
	दिन	रात्रि	दिन	रात्रि
प्रतिपद	संज्ञानं	दर्शा	प्रस्तुत	सुता
द्वितीया	विज्ञानं	दृष्टा	विष्टुत	सुन्वती
तृतीया	प्रज्ञानं	दर्शता	संस्तुत	प्रसुत
चतुर्थी	जानत	विश्वरूपा	कल्याण	सूयमाना
पञ्चमी	अभिजानत	सुदर्शना	विश्वरूप	अभिषूयमाना
षष्ठी	संकल्पमान	आप्यायमाना	शुक्र	प्रीति
सप्तमी	प्रकल्पमान	प्याय्यमाना	अमृत	प्रपा
अष्टमी	उपकल्पमान	प्याया	तेजस्वी	संपा
नवमी	उपक्लृप्त	सूनृता	तेजः	तृप्ति
दशमी	क्लृप्त	इरा	समृद्ध	तर्पयन्ति
एकादशी	श्रेयः	आपूर्यमाणा	अर्कक	कान्ता
द्वादशी	वसीयः (वशीयः)	पूर्यमाणा	भानुमान	काम्या
त्रयोदशी	आयत	पूरयन्ती	मरीचिमान्	कामजाता
चतुर्दशी	सम्भूत	पूर्णा	अभितपत्	आयुष्मती
पौर्णमा (अमावस्या)	भूत	पौर्णमासी	तपस्यत्	कामदुघा

मुहूर्त्तों के नाम

संख्या मुहूर्त	शुक्ल पक्ष		कृष्ण पक्ष	
	दिन	रात	दिन	रात
१	मित्र	दाता	सविता	अभिशास्ता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संख्या मुहूर्त	शुक्ल पक्ष		कृष्ण पक्ष	
	दिन	रात	दिन	रात
२	केतु	प्रदाता	प्रसविता	अनुमता
३	प्रभा	नन्द	दीप्त	नन्द
४	नाभान	मोद	दीप्यन	मोद
५	सम्भान	प्रमोद	दीपमान्	प्रमोद
६	ज्योतिष्मान्	आवेशयन	ज्वलन्	आसादयन
७	तेजस्वान्	निवेशयन	ज्वलिता	निषादयन
८	अतपन्	संवेशयन	तपत्	संसादयन
९	तपन्	संशान्त	वितपन्	संसन्न
१०	अर्चितपन	शान्त	संतपन्	सन्न
११	रोचन	आभवन	रोचन	आभू
१२	रोचमान	प्रभवन	रोचमान	विभु
१३	शोभन	सम्भवन	शुम्भु	प्रभू
१४	शोभमान	सम्भूत	शुम्भान	शम्भू
१५	कल्याण	भूत	वाम	भुवः

उदाहरण—वर्ष के हेमन्त ऋतु, अगहन शुक्ला प्रतिपदा के प्रातः काल के आठ बजे के पीछे का समय इस तरह, इस पञ्चांग के क्रमानुसार, प्रकट किया जावेगाः—कस्य अग्नौ आरुण पवित्रे संज्ञाने चित्रस्येदानीम् जातः। इतिहास के ग्रन्थों में इस पञ्चांगका उपयोग यद्यपि देखा नहीं जाता है, तो भी वैदिक साहित्य में इसका प्रयोग पाया जाना सम्भव है, इस लिये जानकारी के लिये यह पञ्चांग यहां दे दिया गया है।

संवत्

वर्षकी आनुक्रमिक परम्परा को सम्वत् कहते हैं। सम्वत् प्रत्येक राष्ट्र और जाति की सभ्यता और उन्नति की स्मृति है। संसार की सब ही जातियों और देशों में किसी न किसी सम्वत् का चलन देखा जाता है, और जिस राष्ट्र या जाति का सम्वत् जितना पुराना है वह जाति उतनीही पुरानी समझी जाती है। मुख्य २ सम्वत्, जिन का चलन संसार में है, यहां दिये जाते है।

क्रम संख्या	नाम सम्वत्	कब से गिना जाता है	अब तक कितने वर्ष बीते
१	आर्य सम्वत, वैदिक संवत्, कल्पाब्द या सृष्टि सम्वत्	सृष्टि के उत्पन्न होनेके साथ साथ	१९७२९४९०२५
२	कलि सम्वत्	कलियुग के शुरू होने से	५०२५
३	सप्तर्षि, लौकिक या कच्चा पहाड़ी सम्वत्	विक्रम से ६७५० वर्ष पहिले से	८७५१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रम संख्या	नाम सम्वत्	कब से गिना जाता	अबतक कितने वर्ष बीते
४	युधिष्ठिरी संवत्	महाराज युधिष्ठिरके राज्याभिषेक से	५०२५
५	विक्रम सम्वत्	कलि के ३०४४ वर्ष पीछे से	१९८१
६	बौद्ध सम्वत् या शक काल (शाक्य मुनि का काल)	महात्मा बुद्ध के "बुद्धपद" प्राप्त करने से	२४९९
७	महावीर सम्वत् (जैन संवत)	विक्रम से ४७० वर्ष पहिले से	२४५१
८	मौर्य या चन्द्रगुप्त का सम्वत्	विक्रम से ३१५ वर्ष पहिले से	२२९६
९	मलयकेतु या सलवकेतु का सम्वत्	विक्रम से २५५ वर्ष पहिले से	२२३४
१०	पार्थियन संवत्	विक्रम से १९० वर्ष पहिले से	२१७१
११	शाक्य सम्वत् या शाकाब्द	विक्रम से १३५ वर्ष पीछे से	१८४३
१२	परशुरामचक्र (सहस्र-सम्वत्)	विक्रम से ११२० वर्ष पहिले से	३१२१
१३	शताब्द (ग्रहपरिवृत्ति चक्र)	विक्रम से ३३ वर्ष पीछे से	१९४८
१४	चेदि (कलचुरि) सम्वत्	विक्रम से ३०५ वर्ष पीछे से	१६७६
१५	गुप्त सम्वत्	विक्रम से ३७५ वर्ष पीछे से	१६०६
१६	वल्लभी सम्वत्	" " "	१६०६
१७	हर्षाब्द	विक्रमाब्द ६६४ से	१३१७
१८	कोलम्बाब्द या कोलम अन्दु अथवा परशुरामी सम्वत्	विक्रमाब्द ८८१ से	११००
१९	नैपाली सम्वत् (नेवारी)	विक्र० ९३७ से	१०४५
२०	चालुक्य सम्वत्	विक्र० ११३३ से	८४८
२१	सिंह सम्वत्	विक्र० ११७१ से	८१०
२२	लक्ष्मणसेनाब्द या बंगाली सम्वत्	विक्र० ११७६ से	८०५
२३	श्री चैतन्य सम्वत्	विक्रमाब्द १४४३ से	५३८
२४	शिव सम्वत्	महाराज शिवाजीके राज्याभिषेक से	३३०
२५	दयानन्दाब्द	विक्रम० १९४० से	४१

ये सम्वत् भारत में ही प्रचलित हुये हैं और किसी न किसी रूप में हिन्दू-सभ्यता और वैदिक धर्मानुयायियों से सम्बन्ध रखते हैं। नीचे वे सम्वत् दिये जाते हैं जो भारतमें विदेशियों के संसर्गसे भारत वासियों में प्रचलित हो गये हैं या विदेशियों ने उन्हें अपने ही देशों में प्रचलित किया है तथा भारत के इतिहास से उनका सम्बन्ध है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्रम संख्या	नाम सम्वत्	कब से गिना जाता है	अब तक कितने वर्ष बीते
१	ब्रह्मा का सम्वत् या मगी सम्वत	महात्मा बुद्ध के समय से (विम से ४८४ वर्ष पूर्व से)	२४६४
२	दूसरा ब्रह्मी सम्वत्	६९६ विक्रमाब्द से	१२७२
३	सन् ईस्वी	ईसा मसीह के जन्म से (विक्रमाब्द से ५७ वर्ष पीछे)	१९२४
४	जावा का सम्वत	१३१ विक्रमा० से	१८५०
५	बालो का सम्वत्	१३२ ,, ,,	१८३९
६	हिजरी सन्	सम्वत ६७९ विक्रम से	१३४९
७	पारसी सम्वत् (यज़दी ज़र्द का सम्वत्	सम्वत ६८९ से	१२९६
८	सूर सम्वत्	सम्वत १४०१ विक्रम से	५८०
९	साहू सम्वत्	,, ,, ,,	५८०
१०	बंगला सम्वत्	,, १५५७ ,,	१३३६
११	फ़सली सन्	,, १६१३ ,,	१३३२
१२	विलायती या अमली सम्वत्	,, ,, ,,	१३३२
१३	इलाही या अकबरी सम्वत्	,, १६४१ ,,	३४०
१४	बीजापुर या आदिल शाही सन्	,, १७०३ ,,	२७६
१५	परिगणाति सम्वत्	,, १२५७ ,,	१२४
१६	तुर्क या कुस्तुन्तुनिया का सम्वत	सृष्टि की उत्पत्ति से (तुर्कों के मत में	७१८८
१७	नूह का सम्वत	नूह के तोफ़ान के पीछे से	
१८	आदम का सम्वत	आदम के समय से (वि० पू० ५२९५)	७२७६
१९	चीनी सम्वत	विक्रम से २३०० वर्ष पूर्व	४२८१
२०	रोमन सम्वत	रोमन नगर की स्थापना से	२७३३
२१	ओलम्पियद सन	विक्रम से ७३० वर्ष पहिले	२७१०
२२	जूलियन सम्वत	विक्रम सम्वत १२ से	१९९८
२३	यहूदी सम्वत	विक्रम सम्वत से ३६४२ वर्ष पहिले	५६२५

इन सम्वतोंका विवरण।

आर्य सम्वत

आर्य सम्वत को वैदिक सम्वत और कल्पाब्द भी कहते हैं क्योंकि इसका हिसाब इस वर्तमान कल्प के साथ साथ रक्खा जाता है। सृष्टि-सम्वत भी वैदिक गणना के अनुसार यही है। संकल्प का पाठ इस तरह है—

ओ३म् तत्सत ब्रह्मणोन्हः द्वितीये परार्द्धे श्री श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि प्रथमचरणे कलि गतवर्षे ५०२६.....

अर्थात् इस कल्प का नाम श्वेत वाराह है। उसके ६ मन्वन्तर बीत गये। अब इस कल्प या ब्रह्मा के दिन का दूसरा पहर है। इस सातवें मन्वन्तर की २८वीं चतुर्युगी का यह कलियुग हैं (अर्थात् २७ चतुर्युगी बीत चुकीं) और कलियुग का अब शताब्द ५०२५ है। इसका हिसाब नीचे देते हैं—

एक चतुर्युगी =	सत्ययुग	१७२८००० वर्ष
	त्रेता	१२९६००० वर्ष
	द्वापर	८६४००० वर्ष
	कलियुग	४३२००० वर्ष
		४३२००४० वर्ष
एक मन्वन्तर =	७१ चतुर्युगी	७१
		३०६७२००००० वर्ष
एक सन्धिकाल =		१७२८००० वर्ष
छः मन्वन्तर =	६ ×	३०८४४८०००० वर्ष
=		१८५०६८८०००० वर्ष
पहिले आरम्भ के मन्वन्तर की सन्धि		१७२८००० वर्ष
		१८५२४१६००० वर्ष
२७ चतुर्युगी =		११६६४००००० वर्ष
२८वीं चतुर्युगी का सत्ययुग		१७२८००० वर्ष
,, ,,	त्रेता	१२९६००० वर्ष
,, ,,	द्वापर	८३२००० वर्ष
,, ,,	गत कलियुग	५०२५ वर्ष
	योग	१९७२९४९०२५ वर्ष

इस सम्वत् की सौर मेषादि और चान्द्र चैत्रादि की मास गणना होती है। चान्द्र मास पौर्णमान्त गिना जाता है, परन्तु दक्षिण और पश्चिम भारतवर्ष में अमान्त मास गिना जाता है तथा वर्ष कार्तिकादि माना जाता है। यह सम्वत् केवल संस्कृत के ज्योतिष ग्रन्थों में प्रयुक्त हुआ मिलता है।

बार्हस्पत्य युगका मान।

एक मन्वन्तर को प्राजापत्य काल भी कहते हैं, परन्तु प्रजापति के नाम से कोई सम्वत् नहीं पाया जाता हाँ भारतवर्षके पञ्चांगोंमें एक बार्हस्पत्य युगका उल्लेख पाया जाता है। यह युग १२ वर्षका होता है और हरएक वर्ष का नाम उसी नक्षत्रके अनुसार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होता है जिस नक्षत्र के भोगकालमें बृहस्पति उस वर्ष उदय होता है। यह हिसाब सौर गणित से होता है। बृहस्पति एक वर्ष में २। नक्षत्र भोग कर लगभग १२ वर्ष में अपना भगण या युग पूरा करता है। वर्षों के नाम ये हैं—

मु क्र	वर्ष का नाम	बृहस्पति के उदय होने का नक्षत्र	मु क्र	वर्ष का नाम	बृहस्पति के उदय होने का समय
१	कार्तिक	कृतिका–रोहणी	७	वैशाख	विशाखा-अनुराधा
२	मार्गशीर्ष	मृग०–आर्द्रा	८	ज्येष्ठ	ज्येष्ठा मूल
३	पौष	पुन०-पुष्य	९	आषाढ़	दोनों आषाढ़
४	माघ	श्लेषा–मघा	१०	श्रावण	श्रवणा धनिष्ठा
५	फाल्गुन	उभय फाल्गुनी–हस्त	११	भाद्रपद	शत०–दोनों भाद्र०
६	चैत्र	चित्रा–स्वाति	१२	आश्विन्	रेवती–भरणी

साठ वर्षका युग।

भारत के पञ्चांगों और शिला लेख आदि में एक और युग का भी उल्लेख पाया जाता है जो साठ वर्ष का माना गया है। बराहमिहर ने इसकी गणित इस तरह दी है।

इष्ट शककाल में ११ × ४ से गुणा दें; गुणनफल में ८५८९ जोड़े; योगफल को ३६५० से भागदे। भागफल को उसी इष्ट शक-काल में जोड़े और उसे ६० से भाग कर दे। बाक़ी को ५ से भाग करके भागफल के अंकके अनुसार पंचवर्षीय युग में शेषांक वाले वर्ष को उस युग का वर्ष समझना चाहिये।

ब्राह्मविंशति		वैष्णवीय विंशति		रौद्र विंशति	
पञ्चवर्षीय युग के देवता	प्रति पांच वर्षके नाम	पञ्चवर्षीय युग के देवता	प्रति पांच वर्षके नाम	पञ्चवर्षीय युग के देवता	प्रति पांच वर्ष के नाम
१ विष्णु	प्रभव १ विभव २ शुक्ल ३ प्रमोद ४ प्रजापति	५ त्वष्टा	सर्वजित १ सर्वधारी २ विरोधी ३ विकृति ४ खर ५	९ सोम	प्लवंग १ कीलक २ सौम्य ३ साधारण ४ बोधकृत ५
२ बृहस्पति	अंगिरा १ श्रीमुख २ भाव ३ युवा ४ धाता ५	६ मित्र	नन्दन १ विजय २ जय ३ मन्मथ ४ दुर्मुख ५	१० रुद्र	परिधावी १ प्रमाथी २ आनन्द ३ राक्षस ४ अनल ५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्राह्म विंशति		वैष्णवीय विंशति		रौद्र विंशति	
पञ्चवर्षीय युग के देवता	प्रति पांच वर्ष के नाम	पञ्चवर्षीय युग के देवता	प्रति पांच वर्ष के नाम	पञ्चवर्षीय युग के देवता	प्रतिपांच वर्ष के नाम
३ इन्द्र	ईश्वर १ बहुधान्य २ प्रमाथी ३ विक्रम ४ वृष ५	७ पितर	हेमलंब १ विल २ विकारी ३ शर्वरी ४ प्लव ५	१ अश्विनी कुमार	पिंगल १ कालयुक्त २ सिद्धार्थ ३ रौद्र ४ दुर्मति ५
४ अग्नि	चित्रभानु १ सुभानु २ तारण ३ पार्थव ४ व्यय ५	८ विश्वदेव	शोभन १ शुभकृत क्रोधी ३ विश्वावसु ४ पराभव ५	२ भग	दुंदुभि १ उद्गारि २ रक्तोद्गार ३ क्रोध ४ क्षय ५

टिप्पणी—नवीन ज्योतिषियों के मत में कलियुग का आरम्भ प्रभव नामी वर्ष में हुआ था, परन्तु वराह मिहिर के मतानुसार ऐसा नहीं है किन्तु उस समय इस युग का २ वां वर्ष विकृति था। अस्तु।

उदाहरण—सम्वत् १९८१ में कौन सा वर्ष इस ६० वर्षीय युग का बीतता था?

संवत् १९८१ में शककाल २४९९ था।

२४९९ × ४ × ११ = १०९९५६ × ८५८९ = ११५५४५ ÷ ३७५० = भागफल ३१ + २४९९ = २५३० ÷ ६१ = १० बाकी अर्थात् दूसरे पञ्चवर्षीय युग का अन्तिम वर्ष धाता उस वर्ष बीतता था।

युधिष्ठिरीय और कलि संवत्।

कलि संवत् का प्रचार भारत में विक्रम, शककाल और शाके की गणना से पहिलेसे है। कलिका आरम्भ युधिष्ठिरीय संवत् अर्थात् उनके वनप्रस्थी होनेसे ३६ वर्ष पहिले हुआ था। युधिष्ठिरीय संवत् वास्तवमें उनका अभिषेक संवत है। कलिका संवत् इस समय संवत् १९८१ विक्रममें ५०२५ है, यही युधिष्ठिरीय संवत् भी है।

विक्रम संवत् में ३०४४ जोड़ने से ये संवत् निकलते हैं। इसकी गिनती चान्द्र-वर्ष से होती है, परन्तु हर तीसरे वर्ष मलमास की विधि से सौर वर्ष के लगभग इस की गणित रक्खी जाती है। अधिक समय बढ़ने पर कभी कभी क्षय मास भी किया जाता है और उस वर्ष में केवल ११ महीने होते हैं, परन्तु क्षय मास वाले वर्ष में दो बार अधिकमास हो जाता है। इसके नियम आगे दिये हैं। सम्वत् जान लेनेके पीछे इच्छानुसार चान्द्र या सौर तिथियों की गणना, आगे दिये नियमों के अनुसार, की जा सकती है। कलि और युधिष्ठिरीय सम्वतके नये वर्षका आरम्भ चैत्र शुक्ला प्रतिपत् और मेष संक्रमण से होता है।

सन् ईस्वी में ३१०१ जोड़नेसे भी ये संवत् निकल आते हैं। अगर कलिसंवत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में से अभीष्ट सन् ईसवी में से वर्तमान काल तकके वर्ष घटाये जावें तो भी ये दोनों सम्वत् निकल आते हैं। कलियुग का आरम्भ माघशुक्ला पौर्णिमा शुक्रवारको मध्यान्ह में हुआथा। उस समय शायद, यह सम्वत् फागुन बदि प्रतिपदासे ही गिना जाता था और उल्टी गणित करनेसे उस समय ३१०२ बी० सी. (B. C.) की फ़र्वरी १८, शुक्रवार तथा विक्रमाब्दसे ३०४५ वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ला प्रतिपदा थी। उसी समय मेष संक्रमण भी हुआ था।

युधिष्ठिरी सम्वत्के विषय में इतिहासों में चाहे कुछ भी गोलमाल हो, परन्तु एक आध ग्रन्थकार को छोड़ कर सब का यही मत है कि यह सम्वत् कलियुग के साथ ही चला था। बराह मिहर ने लिखा है —

षड्द्विक पञ्चद्वियुतः शककालस्तस्य राज्ञश्च

शककालमें २५२६ मिला देने से महाराज युधिष्ठर का सम्वत् बनता है। बराह-मिहिर ने अपने ग्रन्थमें सर्वत्र 'शककाल' से शाकाब्द का ग्रहण न करके शाक्य मुनि गौतम बुद्धिके सम्वत् का ही ग्रहण किया है। वह इस प्रचलित शाका का उल्लेख करभी नहीं सकते थे, क्योंकि उनके समयमें तो इस शाका (शालिवाहन) का चलन शुरू भी नहीं हुआ था। बराहमिहिर चाहे चन्द्रगुप्त के राजदर्बार में रहे हों या विक्रमादित्यकी राज-सभा के रत्न हों अथवा किसी और राजा के आश्रित रहे हों, परन्तु उनका आश्रय दाता शक कदापि नहीं था, और न वह शकोंके नवीन संवत् का ग्रहण, अ-शक आश्रय दाताके दर्बारमें ऐसे समयमें, जब भारतीय और शक राष्ट्रों में वैरस्य था, कर सकते थे। फिर, जब भी चाहे आप बराहमिहिरका समय मानिये, वह बौद्धों का समय था, और ऐसे समय में शाक्यमुनि के सम्वत् का चलन सर्वसधारण में अवश्य होगा, बुद्ध का सम्वत् एक धार्मिक सम्वत् भी था इससे भी यह अनुमान नहीं होता कि अपने स्वदेशी धर्मस्मारक और गौरव-प्रद संवत् को छोड़कर बराहमिहिर एक विदेशी, निःसार और नये सम्वत् का अवलम्बन करते। इसी लिये हमने यहां 'शककाल' से बौद्ध सम्वत् का अभिप्राय लिया है। विशेष विवरण आगे 'बौद्ध संवत्' में दिया गया है।

राजतरंगिणी के लेखकने भी वृद्ध गर्ग (और वराहमिहिर के इस श्लोक में) के 'शककाल' पद को देखकर धोखा खाया है और अपनी भूलको न समझ कर उसने दूसरे ऐतिहासिकोंकी निन्दा की है। इसी भूल में पड़ कर उसने महाराज युधिष्ठिरका कलि के ६५३ वर्ष बीत चुकने पर राज करना लिखा है। इस विषय पर अधिक प्रकाश हमने इस ग्रन्थमाला की दूसरी पुस्तक, "महाभारत और उसका समय" में डाला है।

सप्तर्षि सम्वत्

सप्तर्षि सम्वत् या लौकिक सम्वत् को कच्चा सम्वत् भी कहते हैं। उसका चलन कश्मीर के पहाड़ी प्रान्तों में है। राजतरंगिणी में कालगणना इसी संवत्से की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। इस सम्वत् का आरम्भ कलिके २५ वर्ष बीत जाने पर माना जाता हैं। यह सम्वत २७०० वर्ष में पूरा हो जाता है और फिर इसकी गिनती १ से शुरू होती है। संहिताकारों ने लिखा है —

आसन् मघासु मुनयः शासति पृथिवीं युधिष्ठिरे नृपतौ।
षड्द्विक पञ्च द्वियुतः शककालस्तस्य राज्ञश्च॥
एकस्मिन्नक्षे शतं शतं ते चरन्ति वर्षाणाम्।
प्रागुत्तरतश्चैते सदोदयन्ते ससाध्वीकाः॥
कलेर्गतैः सायक नेत्रवर्षैः सप्तर्षिवर्यास्त्रिदिवं प्रयातः।
लोके हि संवत्सरपत्रिकायां सप्तर्षिमानं प्रवदन्ति सन्तः॥

बृहत्संहिता

सप्तर्षि तारागण एक एक नक्षत्र में सौ सौ वर्ष रहते हैं। ये सप्तर्षि अरुन्धती समेत सदा उत्तर दिशा में उदित होते हैं। महाराज युधिष्ठिर के समयमें ये मघामें थे। कलिके २५ वर्ष बीतने पर मघामें उनका प्रवेश हुआ था। शककालमें २५२६ मिलाने से युधिष्ठिरी सम्वत् बनता है।

ज्योतिः शास्त्रमें इस समय अश्विनी से नक्षत्रगणना चलती है, और सब ही पुराणकार तथा संहिताकार इस सम्बन्ध में एक मत हैं कि कलियुग और महाराज युधिष्ठिरका अभ्युदय साथ साथ हुआ था तथा उस समय सप्तर्षि मघामें २५ वर्ष रह चुके थे; इससे यही अनुमान होता है कि कुरुक्षत्रके युद्धके समय तक सप्तर्षि श्लेषामें ६४ वर्ष रह लिये थे और युद्ध से ११ वर्ष पीछे कलि और युधिष्ठिरी सम्वत् आरम्भ हुआ था क्योंकि तब ही तो २५ वर्ष कलि के बीत जाने पर मघा का आरम्भ होना सम्भव है। कलि का आरम्भ ३१०१ बी० सी० या ३०४५ वि० पू० में हुआ था इसलिये ३१७६ बी० सी० या ३१२० वि० पू० में श्लेषा में रहे होंगे। मघा अश्विनी से १०वां है, अतः उक्त सप्तर्षि चक्र और भी ६०० वर्ष पहिले चला होगा। परन्तु यह भी कहा जाता है, और उसके लिये प्रमाण भी हैं, कि उस समय नक्षत्र-गणना मृगशिरा से होती थी और वर्ष-परिवर्तन मार्गशीर्ष से होता था। ऐसी दशा में यह चक्र केवल ५०० वर्ष पूर्व अर्थात् ३५२० वि० पू० से आरम्भ मानना पड़ेगा। अस्तुः

इस में सन्देह नहीं कि यह सम्वत् भारत में सबसे पुराना-वैदिक सम्वत् को छोड़ कर-है। सम्वत विक्रम से २७० वर्ष पूर्व भारत पर सिकन्दर ने चढ़ाई की थी। उस समय भी उस के सहयात्रियों ने यहां इसका प्रचार देखा था और वे उसका कुछ वृत्तान्त अपने ग्रन्थों में लिख गये हैं। कनिंगहमने उन्हीं लेखों के आधार पर अपने ग्रंथ The Indian Eras में लिखा है, 'पञ्जाबवासी अपने पूर्वज वैकससे सिकन्दर के समय तक १५४ पीढ़ी, और, उनका समय ६४५१ वर्ष ३ मास गिनते हैं'। इन ६४५१ में सिकन्दर और विक्रम का अन्तर २७० जोड़ने से ६७२१ वर्ष होते हैं, जिसका अभिप्राय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह है कि उक्तनक्षत्र-चक्र विक्रमसे ६७२१ वर्ष पूर्व चला था। इसमें से एक पूर्ण चक्रका समय २७०० वर्ष घटाने से ४०२१ शेष रहते हैं, अतः ज्ञात हो गया कि उस सप्तर्षिचक्र की पुनरावृत्ति इसी वि० पू० से हुई थी; और ऊपरमें यही बात कही गई है कि अश्विन्यादि वाला सप्तर्षि संवत युग ६०० वर्ष पहिले अर्थात् ४०२१ वि. पू. में चला था। इस वि. पू. ४०२१ में एक पूर्ण चक्रका समय २७०० वर्ष जोड़नेसे यूनानियोंके बताये वर्ष निकल आते हैं। यह घटना इस बातका पुष्ट प्रमाण है कि यूनानियोंने जिस सम्वत् की सूचना पञ्जाबियों से पाई थी और उसका उल्लेख उन्होंने अपने ग्रन्थोंमें किया था वह सम्वत् यही लौकिक या सप्तर्षि सम्वत् था और वह कम से कम विक्रम से ६७२० वर्ष पूर्व तथा ईसासे ६६६३ वर्ष पूर्व भारतमें देव-सम्वत् या व्यौकस-सम्वत् (नक्षत्र-संवत्) के नाम से प्रसिद्ध और प्रचलित था। यूनानियोंने व्यौकसको ही वैकस लिख दिया है।

पहाड़ी जगहों में प्रायः सौ वर्ष के पीछे ही फिर एक दो से गिनने लगते हैं, परन्तु तिथिपत्रों और इतिहासों में ऐसा परिवर्तन २७०० वर्षके पीछे करते हैं। अस्तु! विक्रम सम्वत् में ३०१९ जोड़नेसे और कलिमें २५ घटाने से यह सम्वत् बन जाता है। सन् ईस्वी में ३०७७ जोड़ने और शाका शालिवाहन में ३१५४ जोड़ने से भी यह ही सम्वत् निकल आता है। पर जहां वि० पू० या बी० सी० आदि से यह सम्वत् निकालना हो वहां वि० पू०, बी० सी०, शाका के वर्षों को उन्हीं अंकोंमें से घटा देना चाहिये।

उदाहरण

कलियुग	विक्रम	शाका	सन् ईस्वी
५०२४	१९८०	१८४५	१९२२-३
- २५	३०१९	३१५४	३०७७-६
४९९९	४९९९	४९९९	४९९९

सप्तर्षि सम्वत् की मास गणना कलि सम्वत् की मास गणना जैसी होती है।

कल्हणने अपनी राजतरंगिणीमें लिखा है कि लौकिकाब्दका २४वां वर्ष (शताब्दि के अंक छोड़ कर) १०७० शकाब्द में पड़ा है अतः उसके मतानुसार बिना शताब्दियों के दोनों सम्वतों का मेल करनेके लिये लौकिकाब्द में ४९ जोड़ देने से शकाब्द और २५ जोड़ देने से कल्यब्द बिना शताब्दि के निकल आवेगा।

शक-काल या बौद्ध सम्वत्।

बौद्ध धर्म के आदिप्रवर्तक महात्मा बुद्ध कपिलवस्तुके शाक्यवंशीय मानवश्रेष्ठ थे। वह शाक्यसिंह भी कहलाते हैं क्योंकि मध्य एशिया के शकोंसे उनका गोत्रज सम्बन्ध था। वास्तवमें सम्पूर्ण मध्य एशिया और ब्रह्माका नाम शक द्वीप या शाकद्वीप है क्योंकि वहां की उपज की मुख्य वस्तु शाक या साखू अथवा सागौन है। प्राचीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रथाके अनुसार वहांके रहने वाले भी शाकद्वीपी या शक कहे जाते थे। रोमन इतिहास में ये लोग 'शकी' 'शिकी' 'सिकी' और 'सीथी' या 'सीदी' कहे जाते हैं। यूनानी इतिहास लेखक हेरोडॉटस ने उन्हें इन्हीं नामों से उल्लिखित किया है। सिकन्दर के के साथ आये यूनानी विद्वानोंने शाकद्वीप को 'सॉगोडिया' और वहां की प्रजा को 'सॉगोडिआई' लिखा है। कालान्तर और देशान्तरसे तथा पारसी भाषाकी उच्चारण-विधि के अनुसार ये 'सॉगोडिआई' 'चकताई' या 'चग़ताई' कहलाये। भारत का मुग़लराज वंश भी इन 'शक' 'सॉगोडिआई' या 'चग़ताइयों' से था। इसी लिये वह चग़ताई कहलाता था। अस्तु।

शाक्यसिंह ने अपने नवीन धर्म को प्रचारित करने के पीछे अपने जीवन में कोई सम्वत् नहीं चलाया जान पड़ता है, परन्तु उनके नाम के कई सम्वत् आसाम, चीन, ब्रह्मा और लंका आदि में चलते हैं। ये सब ही उक्त महात्मा की निर्वाण तिथि से गिने जाते हैं। परन्तु "महात्मा बुद्ध के निर्वाण के समय के विषय में अभी तक कोई सर्व-सम्मत सिद्धान्त स्थिर नहीं हो सका है, तो भी भारतके विद्वानोंने जो कुछ मत निर्णय किये हैं उनमें परस्पर कुछ अधिक विरोध नहीं है। लंका, चीन, ब्रह्मा और स्याम आदि बौद्ध-प्रधान देशों में महात्मा बुद्धका निर्वाणकाल विक्रमसे ४८७ वर्ष पूर्व माना जाता है (अर्थात् ईस्वी सन् से ५४४ वर्ष पहिले)। आसाम के बौद्ध राज गुरुओंका भी यह ही मत है। यही मत जनरल कनिंगहमने भी अपनी पुस्तक कॉर्पस इंस्क्रिप्शनम् इण्डीकैरम्' की भूमिकाके पृष्ठ ७१ पर प्रकट किया है। परन्तु 'प्राचीन भारत' (ज्ञान-मण्डल, काशी से प्रकाशित, प्रथम संस्करण) के पृष्ठ ४७ पर बुद्धदेव का निर्वाण वि० पू० ४३० वर्ष (बी० सी० ४८७) में होना लिखा है। यह मत वास्तव में योरोप के ऐतिहासिक विद्वानों की खोजके निकट आपहुंचता है। डाक्टर ब्युहर और डाक्टर फर्गुसन प्रभृति ऐसा ही मानते हैं और प्रायः सबही योरोपियन ऐतिहासिक बी० सी० ४८१, ४७०, ४८७, ४७८ में से किसी वर्षमें अथवा इसके लगभग ही किसी वर्षमें, इस घटना का होना ठहराते हैं। परन्तु यह मत निर्विवाद रूप से मान्य नहीं हो सकता क्योंकि, वर्तमान काल में इस सिद्धान्त के विरुद्ध प्रमाण प्राप्त हो चुके हैं"।

डाक्टर भगवानलालजीइन्द्रने गया के सूर्य मन्दिर वाले शिलालेखके आधार पर बुद्ध निर्वाणका समय ६३८ बी० सी० स्थिर किया। बौद्ध ग्रन्थोंके आधार पर यह समय विक्रमाब्द से ४९३ वर्ष पूर्व के लगभग निश्चय होता है। उधर राजतरंगिणी-कार ने वि० पू० १४०५ में (बी० सी० १४६२) बुद्ध निर्वाण की घटना लिखी है। अस्तु।

राजतरंगिणीके लेखक ने जो शककाल के समझनेमें भूल की है उसका उल्लेख पीछे कर आये हैं। उस उलझन को सुलझाने के लिये यहां विक्रम सम्वत् और शकाब्द का कुछ विवरण दिया जाता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर कह आये हैं कि बराहमिहिरने सब से पहिले अपनी संहिता में 'शककाल' का उल्लेख किया है। वह मत उसने वृद्धगर्ग के अनुसार लिखा है*। बराहमिहिर के विषय में यह भी कहा जाता है कि वह विक्रम के राज-रत्न थे-

धन्वन्तरि क्षपणकोऽमरसिंहशंकू वैतालभट्ट खर्पर कालिदासाः।
ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिः नव विक्रमस्य॥

परन्तु बराहमिहिरने अपने किसी भी ग्रन्थमें विक्रमके सम्वत्का उल्लेख नहीं किया है। इस सम्बन्धमें दो कल्पनायें हो सकती हैं: (१) वराहमिहिर विक्रमसे पहिले हुये थे अथवा (२) उनकी ग्रन्थ रचना और मृत्युके समयके पीछे विक्रम सम्वत् चला था। जो लोग वराहमिहिरको विक्रम के पीछे हो ना मानते हैं उनसे इस समय केवल यही निवेदन है कि जिन ग्रन्थोंमें विक्रम सम्वत्से १३५ वर्ष पीछे चले सम्वत्का उल्लेख हो सकता है उनमें अत्यन्त महत्वपूर्ण विक्रमाब्द का उल्लेख क्यों नहीं हो सकता? एक बात और भी ध्यानमें रखनेके योग्य है: विक्रमादित्य शकारि थे और शकाब्द शक लोगों की विजयका स्मारक है अतः महाराज विक्रमादित्यके सम्वत् की अपेक्षा वह कदापि गौरवयुक्त नहीं माना जासकता। यद्यपि यही बात 'शककालके' सम्बन्धमें भी कही जा-सकती हैं परन्तु शककालके सम्बन्धमें दो बातें और भी हैं:- (१) महात्मा बुद्ध शक होने परभी भारतवासी थे और उनसे आजभी भारत वैसा ही गौरवान्वित है जैसा आज से २६०० वर्ष पहिले था; (२) वह एक धार्मिक और उदात्त नेता थे तथा भारत वासियों ने उन्हें विष्णु के १० बड़े अवतारों में गिना है अतः उन का सम्वत भी जो केवल एक धार्मिक युगान्तर की स्मृति थी, वैसा ही सम्मान्य है।

विक्रमादित्य शक नहीं थे किन्तु 'शकारि' (शकोंके वैरी) थे और बराहमिहिर भी शक नहीं थे किन्तु भारतीय थे, और आख्यानों के अनुसार तो वह शकारि के आश्रित थे। ऐसी दशामें विक्रम सम्वत् का अभाव एवं शक सम्वत्का उल्लेख, उनके ग्रन्थों में मिलना प्रत्यक्ष असंगत है। केवल एक तरह से ही यह बात उन लोगों के मत में संगत हो सकती है, जो उक्त 'शककाल' से शाका शालिवाहन का अर्थ लेते हैं, और वह यह है कि वराहमिहिर किसी शक नृपतिके आश्रित हों या उनके समय में शकों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ रहा हो। परन्तु इस कल्पना के लिये कुछ भी आधार नहीं है, प्रत्युत इसके प्रमाण वराहमिहिर के ग्रन्थोंमें मिलते हैं कि वह शकोंके प्रभाव से दूर थे।

---

* ध्रुवनायकोपदेशान्नरिनवर्तीवोत्तराभ्रमद्भिश्च।
येश्चारमहं तेषां कथयिष्ये वृद्धगर्गमतात्।
आसन् मघासु मुनयः शासति पृथिवीं युधिष्ठिरे नृपतौ।
षड् द्विक पञ्चद्वियुतः शककालस्तस्य राज्ञश्च।

वृहत्संहिता अध्याय १३। ३-२

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

एक ग्रन्थमें (ब्रह्मगुप्त रचित खण्डखाद्य की टीका) नीचे लिखे श्लोक के अनुसार शकाब्द ५०९ में बराहमिहिर की मृत्युका उल्लेख पाया जाता है—

नवाधिक पञ्चशतशाके वराहमिहिराचार्यो दिवंगतः ।

इस श्लोकके अनुसार सम्वत् ६४४ सन् ५८१ में वराहमिहिरकी मृत्यु हुई होगी यदि 'शाक' या 'शककाल' का अर्थ शकाब्द लिया जावे । परन्तु सम्वत् ६४४ में (या उसके कुछ पहिले भी) भारतके इतिहासमें शकों का न इतना प्राधान्य ही था और न राज्य विस्तार ही कि वराहमिहिर को उनका सम्वत् लिखना आवश्यक होता । हां उस समय उन्हें विक्रमके सम्वत्का उल्लेख अवश्य करना चाहिये था । इन युक्तियों से यही सिद्ध होता है कि वराहमिहिर का अभिप्राय शककाल से इस प्रचलित शाका शालिवाहन से कदापि नहीं था । आगे पाठक देखेंगे कि वराहमिहिर की मृत्यु विक्रमाब्द चलने से ८-९ वर्ष पहिले हो गई थी इस लिये वह इस सम्वत् का उल्लेख उस समय अपने ग्रन्थों में नहीं कर सके जो वह अपनी मृत्यु से पहिले बना चुके थे ।

गर्गसंहिता वृद्धगर्ग का रचा ज्योतिःसंहिता का ग्रन्थ है और यह ग्रन्थ विक्रम से ८४ वर्ष पूर्व (कम से कम) लिखा जा चुका था । प्रोफ़ैसर कर्ण (Dr. Kern) ने उक्त संहिता के नीचे लिखे दो श्लोकोंके आधार पर उस ग्रन्थ का समय १४४ बी० सी० निर्णय किया है –

ततः साकेतमाक्रम्य पञ्चालान्मथुरांस्तथा ।
यवना दुष्ट विक्रान्ताः प्राप्स्यन्ति कुसुमध्वजम् ।
ततः पुष्पपुरे प्राप्ते कर्दमपुष्पिते हिते ।
आकुला विषयाः सर्वे भविष्यन्ति न संशयः ।

'उस समय यवन लोग साकेत पर चढ़ाई करके पाञ्चाल और मथुरा पर अधिकार करेंगे और फिर पटना पर अपनी विजय पताका फहरावेंगे' । पाश्चात्य ऐतिहासिकों की सम्मति में यह यूनानियों का आक्रमण मिनैण्डर की अध्यक्षता में ईसासे १४४ वर्ष पहिले हुआ था । तो फिर वृद्धगर्ग किस तरह शक सम्वत् का उल्लेख कर सकता था ? और उस के आधार पर वराहमिहिर भी कैसे शाका शालिवाहन का संकेत कर सकते थे ?

एक बात इस प्रसंग में और भी याद रखनी चाहिये । शकाब्द शालिवाहन किसी शकराज के राज्याभिषेक की यादगार है और उसका संकेत विक्रम की १२वीं शताब्दि तक 'शक नृपतिराज्याभिषेक सम्वत्' 'शकनृपति संवत्सर' 'शकनृप कालीन संवत्सर' 'शक सम्वत्' 'शकवर्ष' 'शाका' अथवा केवल 'शक' ही रहा है–अर्थात लगभग ११०० वर्ष तक यह सम्वत् बिना शालिवाहन के नाम के चलता रहा था, परन्तु यह बात पहिलेसे ही ज्ञात थी कि यह सम्वत् किसी शकराजाका चलाया हुआ है । शिलालेखों में इस सम्वत्का व्यौहार सम्वत् के ढंग से विक्रमाब्द से ६५० वर्ष पीछे आरम्भ हुआ था, । इन बातों से यह अनुमान ही पुष्ट होता है कि सर्वसाधारण इस सम्वत् से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh
इतने समय तक अच्छी तरह परिचित नहीं हुये थे। परन्तु 'शककाल' के विषय में यह बात नहीं कही जासकती क्योंकि यह सम्वत् विक्रमाब्द और शाके शलिवाहनके चलने से पहिले भी और पीछे भी व्यौहार में आता रहा था किन्तु उसका प्रचार उसी समय बन्द हो गया था जब शाके शालिवाहनका प्रचार सम्वत् ६१०, विक्रम (या इसके लगभग) में प्रजा में बढ़ने लगा था। इसी शककाल का संकेत बराहमिहिरने किया है, इसी शककाल को वृद्धगर्ग ने लिखा है और इसी शककाल ५०६ में बराह मिहिरकी मृत्यु का उल्लेख ब्रह्मगुप्तने कहीं देखा था जिसे अनुवाद करते समय उसने भ्रमवश 'शाका' लिख दिया क्योंकि उसके समय में शककाल का प्रचार ही नहीं छूट गया था किन्तु लोगबाग उसके अस्तित्वको भी भूल गये थे और शककालको ही शाके समझने लगे थे। और क्योंकि इस हिसाब से सम्वत् विक्रम का चलन ५१६ शाके में हुआ था इस लिये वराहमिहिरकी मृत्युसे १० वर्ष पीछे यह सम्वत् चला और इसी कारण वराहमिहिर को इस विक्रमाब्दका उल्लेख करना असम्भव था। उसने केवल उसी सम्वत् का उल्लेख किया जो उसके सामने चल रहा था।

जिस समय महात्मा बुद्धदेव की धर्मदुन्दुभी का गम्भीर नाद धीरे धीरे अफ़-गानिस्तान, चीन स्याम, लंका, मिस्र ईरान, कन्धार और शाम तथा यूनानके आकाश में व्याप्त होता जा रहा था, जब अशोक जैसे सम्राट के सामने संसार का तत्कालीन सभ्यसमाज नत मस्तक होने में अपना गौरव समझता था उसी समय अपने दोनों धार्मिक संघों (हीनयान और महायान) की गणना और अपने इतिहास की रचना बौद्ध विद्वानों ने अन्यधर्मानुयायी विद्वानों द्वारा प्रचारित कलि और युधिष्ठिरी सम्वत् के आधार पर करनी उचित नहीं समझी तो उन्होंने उस समय इस बौद्ध सम्वत् या शककाल को ग्रहण किया था। उसी युग में यह बौद्ध सम्वत बुद्ध धर्म के साथ साथ भारतवर्षसे बाहर के सुदूरवर्ती देशों में जा पहुंचा था और उन देशों में वह सुरक्षित एवं प्रचलित रहा, परन्तु भारत में यह बौद्ध सम्वत् आदि शंकराचार्य के धर्मप्रचार और बौद्धधर्म के उच्छेद के साथ साथ विलीन हो गया। शंकराचार्यने अनुमान होता है, उसी समय अपने वैदिक धर्म की पुन-स्थापना के साथ साथ शकारि सम्वत् की स्थापना की होगी। आरम्भ में यह विक्रमसम्वत् मालव-काल या इन्हीं शब्दों के अर्थ वाले किसी वाक्यांश से अभिहित होता था। इसका कारण सम्भवतः यह था कि जिन सुधन्वा आदि राजाओं ने शंकराचार्य की सहायता की थी वे मालव गणोंमें से थे। परन्तु शंकराचार्य के पीछे शीघ्र ही फिर एकबार बौद्धों का उदय हुआ और यह पुनरुत्थान शकों की सहायता से हुआ; अतः पुनः शक सम्वत् की स्थापना की गई। इस समय तक जब दूसरी बार शक सम्वत को प्रचरित किया गया था, प्राय सर्वत्र ही उस शककाल का लोप हो चुका था-केवल ज्योतिषके कुछ ग्रन्थोंमें उसका उल्लेख बाकीथा। यही कारण है कि सर्व साधारणमें तो यह शककाल 'शक सम्वत्' आदि नामोंसे ही चलता रहा परन्तु ग्रन्थों में कहीं पहिले शककाल का और कहीं इस नये

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संवत का व्यौहार होता रहा, परन्तु कालान्तर में जब यह बात भूल गई तो राजतरंगिणी आदि ग्रन्थों के लेखक भ्रम में पड़ गये। यद्यपि यह भेद पहिले ही रखा गया कि 'शककाल' आदिम शकसंवत् या बौद्ध-संवत्का द्योतक रहै और शाका नये शक या पुनर्जीवित संवत का नाम रहै। यह बात ध्यान देने योग्य है कि १२वीं शताब्दि में ही इस संवत के साथ पहिले पहिल शालिवाहन का नाम जोड़ा गया था—उस समय से पहिले के शिलालेखों में इस संवत के साथ शालिवाहन का नाम नहीं मिलता।

विक्रम का संवत या 'मालवकाल' इसी कारण आरम्भ में अधिक प्रचार नहीं पासका था कि उसे केवल १३५ वर्ष पीछे ही पहिले और पुराने बौद्ध शककालसे उस के पुनर्जन्म-प्राप्त रूपसे प्रतिद्वन्दता करनी पड़ी थी। बौद्ध शककाल को सर्व साधारण की स्मृतिसे भुलानेके लिये आदि शंकराचार्य या सुधन्वा आदि वेद-धर्मानुयायियों में से किसी ने, शायद, उज्जैन में विक्रम संवत की स्थापना की होगी और उस संवत का साभिप्राय विशेषण शकारि भी रखा गया होगा। यही संवत शकों के अभ्युदय काल में, तथा मालवामें इसकी स्थापना होने के कारण, 'मालव संवत' 'मालवकाल' 'मालवगणस्थित्यब्द' आदि कहलाता रहा क्योंकि शकों के शासन काल में किसी भी संवत का शकारि-संवत के नाम से प्रजा में और राज्यव्यौहार में भी आना असम्भव था। शकों का यह उत्कर्ष काल जिसने शकारि संवत को रोका विक्रमाब्द १३५ से ४५७ तक रहा था क्योंकि ४५७ विक्रम संवत में ही चन्द्रगुप्त ने उन्हें हरा कर नष्ट भ्रष्ट किया था। अवश्य ही शकों का पतन और उनके सार्वभौमत्व का नाश होना १० या २० वर्ष पहिले शुरू हुआ होगा और तब ही से इस 'शकारि मालवकाल' का उद्धार आरम्भ हुआ होगा। यही कारण है कि संवत ४५० विक्रम से पहिले शिलालेखों में विक्रम संवत या मालव संवत का व्यौहार कम मिलता है। अब तक सब से पुराना उल्लेख इस संवत का मालवकाल के नाम से ४१८ वि० का प्राप्त हुआ है। अनुमान है कि संवत ८५० तक यह संवत 'मालव' ही कहलाता रहा तथा इस के पीछे इस में विक्रम का नाम जोड़ा गया था।

एक बात और भी स्मरण रखनी चाहिये। बौद्ध ग्रन्थोंके अनुसार अशोकाभिषेक से २१८ वर्ष पहिले महाराज बुद्धदेव ने निर्वाणपद प्राप्त किया था जो विक्रम संवत से ४८६ वर्ष पहिले पड़ता है। इस से जान पड़ता है कि शककाल की गणना उनकी मृत्यु से आरम्भ नहीं हुई थी किन्तु उन के बौद्ध धर्म का प्रचार और उस का संगठन-कार्य आरम्भ करने की तिथि से यह संवत गिना जाता है। धार्मिक दृष्टि से यदि देखा जावे तो महात्मा बुद्ध की मृत्यु इतनी महत्व पूर्ण घटना नहीं है जितनी महत्व पूर्ण घटना उनका धर्म प्रचार और उसके लिये संगठन की नींव रखना है।

महाराज अशोक का राज्याभिषेक राज्य-प्राप्ति से १२वें वर्ष में हुआ कहा जाता है और अगर यह उपरोक्त हिसाब राज्य-प्राप्ति के समय से लगाया जावे अर्थात् राज्य प्राप्ति को ही अभिषेक-काल समझा जावे तो इस ४८६ वर्षों में १२ वर्ष और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अधिक होजाते हैं और फिर निर्वाण-सम्वत विक्रमसे ४९८ वर्ष पूर्व जा पहुँचता है (बी० सी० ५५५)। कहा जाता है कि महात्मा बुद्धने ३६ वर्षकी अवस्था प्राप्त होने पर बुद्ध पद प्राप्त करके धर्म का प्रचार आरम्भ किया था; और भगवान बुद्धका जन्म विक्रम से ५६१ वर्ष पूर्व होना सिंहलवासी मानते हैं, अतः वि० पू० ५२९ में उन्हें बुद्ध पद प्राप्त हुआ और ११ वर्ष पीछे उन्होंने संघके संगठनका कार्य्य आरम्भ किया होगा। अस्तु।

शककाल, कलिमें से २६२५ घटाने से और विक्रम में ५१८, शाके शालिवाहन में ३५३, और सन् ईसवी में ५७५ जोड़ने से निकलता है; जैसे—

कलि०	सप्तर्षि०	विक्रम०	शाके	सन् ईसवी
५०२५	५००१	१९८१	१८४६	१९२४
-२५२६	-२५०२	५१८	६५३	५७५
२४९९	२४९९	२४९९	२४९९	२४९९

इस सम्वत का पञ्चांग विक्रम सम्वत की तरह ही चैत्रादि, मेषादि, चान्द्र अधिमास और अमान्त गिना जाता है।

महावीर या जैन सम्वत्।

जैन विद्वान ऐतिहासिक अपना सबसे पिछले तीर्थङ्कर श्रीमहावीर स्वामीके मोक्षपद प्राप्त करने के दिनसे वीर सम्वत गिनते हैं। श्वेताम्बर सम्प्रदायकी गणना के अनुसार विक्रमसे ४७० वर्ष पहिले, और दिगम्बर सम्प्रदायके हिसाबसे शक शालिवाहनसे ६०५ वर्ष पहिले (अर्थात् वही विक्रम० से ४७० वर्ष पहिले) दीपावलिके दिन महावीर भगवानको मोक्षपद प्राप्त हुआ था। ऐतिहासिकोंका भी यही मत है। यह सम्वत शुक्ला प्रतिपदा से बदलता है शाके शालिवाहन और विक्रम सम्वत की तरह इसके पंचांग में भी, मलमास, क्षयमास, सौर गणित और चान्द्रतिथि समझी जाती हैं। अगर कोई तिथि ५ घड़ी से कम होती है तो एक दिन पहिले ही उस तिथि के पर्वआदि जैनलोग करते हैं।

विक्रममें ४७० वर्ष, शाके शालिवाहनमें ६०५ वर्ष और सन् ईसवीमें ५२७ वर्ष जोड़ने से तथा कलिमेंसे २५२६ वर्ष, सप्तर्षिमें से २५५७ वर्ष और बौद्ध सम्वतमें से ४९ वर्ष घटानेसे यह सम्वत बन जाता है। किन्तु कार्तिक-शुक्लाकी गणना मिलानेके लिये एक अधिक कर लेना चाहिये।

विक्रम०	शाका०	सन् ई०	कलि०	सप्तर्षि०	बौद्ध०
१९८१	१८४६	१९२४	५०२५	५००१	२५००
४७०	६०५	५२७	-२५७४	-२५५०	-४९
२४५१	२४५१	२४५१	२४५१	२४५१	२४५१

G-36

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौर्य काल

कलिंग देश के सम्राट् खारवेलके एक शिलालेखमें इस सम्वत का उल्लेख मिलता है। यह एक प्रतापी जैन सम्राट थे। मौर्य सम्वत चन्द्रगुप्त मौर्य का चलाया हुआ है। इस सम्वत के विषयमें प्रसिद्ध जैन विद्वान हेमचन्द्रसूरिने परिशिष्ट पर्वमें लिखा है —

एवं च श्रीमहावीरमुक्तेर्वर्ष शते गते ।
पञ्चपञ्चाशदधिके चन्द्रगुप्तोऽभवन्नृपः ॥

श्री महावीर निर्वाणसे १५५ वर्ष पीछे चन्द्रगुप्त राजा हुआ था। इससे स्पष्ट है कि विक्रमसे ३१५ वर्ष पहिले चन्द्रगुप्तके शासन और मौर्यसम्वत का आरम्भ हुआ। प्राचीन इतिहास सम्बन्धी लेखों और ग्रन्थोंमें प्रायः जिन सम्वतोंका काम पड़ता है उनके और प्रचलित विक्रम सम्वत, शाके शालिवाहन तथा सन् ईसवीके साथ इस सम्वत को मिलाने का चक्र यह है—

	महावीर संवत	बौद्ध०	सप्तर्षि०	कलि०	विक्रम०	सन् ई०	शाके०
सम्वत	२४५१	२५००	५००१	५०२६	१९८१	१९२४	१८४६
क्षेपक	-१५५	-२०४	-२७०५	-२७३०	३१५	३७२	४५०
मौर्य सम्वत्	२२९६	२२९६	२२९६	२२९६	२२९६	२२९६	२२९६

यह वही इतिहास-प्रसिद्ध चन्द्रगुप्त है जिसने यूनानियोंको परास्त करके अफ़गानिस्तान तक अपना साम्राज्य फैलाया था और जिसे यूनानियोंने सैंड्रोकोटस लिखा है। यह सम्वत कार्तिक शु० और चैत्र शु० दोनों तरहसे आरम्भ होता है— पूर्वोत्तर भारतमें चैत्र शु० से और दक्षिण तथा पश्चिम भारतमें कार्तिक शु० से इसकी गणना की जाती है; शेष पञ्चांग विक्रम वर्षकी तरह है।

सल्य केतुका सम्वत्।

सल्यकेतुका सम्वत पहिला विदेशी सम्वत है जिसे भारत वर्षके पञ्चांगमें स्थान मिला। यह सिकन्दर की चढ़ाई का प्रभाव था। सिकन्दर के मरनेके १२ वर्ष पीछे १ अक्टूबरसे उसके जनरल सिल्यूकसने यह सम्वत चलाया था। उसी वर्ष उसने ऐण्टीगोनसके सेनापति निकानोरको परास्त किया था। यह सम्वत अधिकतर सिक्कों पर ही पाया जाता है। रोमन सम्राट हैडियन और करकल्ला के सिक्कों परभी यह पाया जाता है। इन दोनों सम्राटों की अभिषेक तिथि क्रम से आश्विनकृ० ८ सम्वत २२८ वि० रविवार (१२ अगस्त सन् १७१ ईस्वी) और चैत्र कृ० १३-१५ मंगलवार सं० २९४ वि० (अप्रैल सन २१७ ईस्वी) हैं।

इस वर्ष का पञ्चांग यूनानी जैसा है। अक्टूबरकी पहिली तारीख़से यह चला था और उस पञ्चांग के अनुसार इस महीनेका नाम हाईपरबैरीटियस (Hypeberitæus)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है, अतः सिल्युकसके सम्वतका भी पहला महीना यही है। वर्ष १२ चन्द्रमासका होता है। शाममें भी यह सम्वत चलता है, वहां १६ वर्षका एक चान्द्रयुग भी माना जाता है। चन्द्रमा १६ वर्षमें अपना एक युग पूरा कर लेता है अर्थात् १६ वर्ष पीछे उसकी गति (मास, तिथि ग्रहण आदि) ठीक पहिले की तरह होने लगते हैं। शाम में इसी १६ वर्षीय युगके पञ्चांगका भी प्रचार है

भारतवर्षमें इस सम्वतका प्रचार अत्यन्त परिमितरूपसे रहा है-केवल उत्तर पश्चिमके उन सिक्कों और शिलालेखोंमें यह सम्वत पाया जाता है जिन्हें शक या यूनानियोंने उत्कीर्ण कराया था। तक्षशिलाकी सीमा तक ऐसे शिलालेख पाये जाते हैं।

महाराज चन्द्रगुप्तके ६० वर्ष पीछे यह सम्वत चला था और मुद्राराक्षस नाटकमें इसके सम्बन्धमें लिखा है कि यह चन्द्रगुप्तकी सहायता के लिये आया था। वहां उसका नाम मलयकेतु दिया है। इसके अनुमान होता है कि चन्द्रगुप्तकी मृत्युके पीछे सिल्युकसने ऐण्टीगोनसकी अधीनताकी बेड़ी काट डाली थीं और अपना संवत चलाया था।

पार्थ-सवंत्।

बिक्रम सम्वतसे १६० वर्ष पूर्व २य ऐण्टीओकस (Antiochus-Theos) जो शामका राजा था, मर चुका था। उसकी मृत्युके साथ २ फ़ारसवासी पार्थ लोगोंने भी अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करके एक नया सम्वत जारी किया। सबसे पहिले स्मिथ साहब (George-Smith) को इस सम्वत का पता चला था। उन्हें बाबुलिनकी सारणिमोंसे इस सम्वत का हाल मालूम हुआ था। यद्यपि भारतके इतिहासमें इस सम्वत का अधिक व्यवहार नहीं देखा जाता, तो भी बौद्धकालीन भारतीय इतिहासमें इसका काम पड़ता है।

इस सम्वतका नया वर्ष अप्रेल से (चैत्र शु०), और कहीं कहीं अक्टूबरसे भी, आरम्भ होता है। मास गणना सिल्यूकसके सम्वतके जैसी चान्द्र होती है परन्तु वर्ष गणना सौर ही मानी जाती है।

विक्रम सम्वत् और शाकेशालिवाहन।

सम्पूर्ण भारत में विक्रम सम्वत का प्रचार और सम्वतों की अपेक्षा अधिक है, भेद केवल इतना है कि कहीं तो नया वर्ष चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से गिना जाता है और कहीं कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से। नर्मदा नदीके उत्तर में, गुजरात को छोड़कर, वर्ष सर्वत्र चैत्र

दूसरे सम्वतों के साथ सिल्युकसी संवतके मिलान का चित्र

सम्वत का नाम	कलि०	सप्तर्षि०	बौद्ध०	जैन०	विक्र०	शालि०	सन ई०	मौर्य०
वर्तमान सम्वत	५०२६	४५०१	२५००	२४५२	१९८१	१८४६	१९२४	२२६६
क्षपक	-२७६०	-२२६५		-२१५	२२५	३६०	३१२	-६००
सिल्युकसका सम्वत	२२३६	२२३६	२२३६	२२३६	२२३६	२२३६	२२३६	२२३६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुक्ला प्रतिपदासे बदलता है और महीना पौर्णिमान्त माना जाता है अर्थात् चैत्रमें केवल शुक्लपक्षकी १५ तिथि ही गिनी जाती हैं और फिर बैसाखका कृष्णपक्ष चलने लगता है। इस प्रकार फाल्गुनकी पौर्णिमा तक केवल ३४५ चान्द्र तिथि होती हैं, परन्तु आगे चैत्र कृष्णपक्ष की १५ तिथियें भी इसी वर्ष के साथ गिनी जाती हैं और इस तरह ३६० चान्द्र तिथियों का एक वर्ष हो जाता है। इससे यह स्पष्ट अनुमान होता है कि चाहे व्यौहारमें पौर्णिमान्त मास चलता है परन्तु वास्तविक वर्षगणना (और उसी प्रकार मासगणना भी) अमान्त ही की जाती है। गुजरात तथा शेष भारतवर्ष (दक्षिण) में वर्षगणना कार्तिकादि और मास-गणना शुक्लपक्ष से आरम्भ होकर अमावस्या पर समाप्त होती है— दोनों प्रकार की गणनामें शुक्लपक्ष तो समान पड़ता है परन्तु कृष्णपक्षमें इतना अन्तर रहता है कि गुजरात और दक्षिण में उत्तर भारत की अपेक्षा, कृष्णपक्ष पहिले महीनेका ही गिना जाता है। जैसे दोनों प्रान्तोंमें विजयदशमी आश्विन शुक्लपक्षमें गिनी जाती है किन्तु पितृपक्ष, यद्यपि होता है दोनों भागों में विजयदशमीसे पहिले वदिमें गिनते हैं परतु उत्तर भारतमें आश्विन कृष्णपक्षमें और गुजरात आदिमें भाद्रकृष्ण पक्ष में? इसी प्रकार दीपावली यद्यपि सर्वत्र विजय दशमी से २० दिन पीछे आती है परन्तु उत्तर भारत में कार्तिक वदी में गिना जाती है और गुजरात आदिमें आश्विन कृष्णामें। दूसरा उदाहरण और लीजिये: रामनवमी चैत्र शुक्ला ९ को होती है जो विक्रम सम्वत १९७८ में तारीख ७ अप्रेल सन १९२१ को भारतवर्ष में मनाई गई थी, परन्तु गुजरात आदि प्रान्तोंमें यही पर्व इसी दिन मनाया जानेपर भी सम्वत १९७७ में गिना गया है। यदि बैसाख कृष्णा ९ सम्वत १८७८ (१ मई सन १९२१) को आप गुजराती या दक्षिणी पञ्चांगों से मिलावें तो वह वहां चैत्रवदि ९ सम्वत १९७७ लिखा मिलेगा। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी सब पञ्चांगोंमें उसी मासके उसी पक्षमें लिखी मिलेगी, परन्तु संवत में एकका अन्तर रहेगा। तो भी दीपावली के पीछे चैत्र शुक्ला तक इन पञ्चांगों में सम्वत की समानता रहेगी केवल कृष्णपक्षमें महीने का अन्तर रहेगा। इसी प्रकार बैसाख वदि से आश्विन शुक्लातक इन पञ्चांगोंमें सम्वत का, और कृष्णपक्ष में महीनेका भी, अन्तर बना रहेगा। अस्तु।

शाके शालिवाहन की गणना सब जगह एक सी है और वह चैत्र शुक्लादिसे चैत्र अमान्तादि सर्वत्र गिनी जाती है। जहां अमान्त

अन्य सम्वतों के साथ पर्व सम्वत का मेल।

नाम सम्वत	कलि०	सप्तर्षि०	बौद्ध०	महावीर०	मौर्य०	संवत०	वि०	शाका	सन ई०
वर्तमान वर्ष अंक	५०२६ -२८५५	४५०१ -२३३०	२५०० -३२६	२४५१ -२८०	२२६४ -१२५	२३३६ -६५	१९८२ १९०	१८४६ ३०५	१९२४ २४७
वर्तमान पार्थ सं.	२१७१	२१७१	२१७१	२१७१	२१७१	२१७१	२१७१	२१७१	२१७१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मास गिनते हैं वहां चैत्रशुक्लपक्षके पीछे चैत्रकृष्णपक्ष गिना जाता है, फिर वैशाख शुक्ल और वैशाख कृष्णपक्ष आता है। इसी प्रकार आगे भी गिनते हैं। इस तरह सम्वत का अन्त फाल्गुन शुक्लपक्ष के पीछे फाल्गुन कृष्णपक्ष की अमावस्याको माना जाता है चैत्र कृष्णा अमावस्याको नहीं, यद्यपि विक्रम सम्वतके हिसाब से उत्तर भारतमें उसी फाल्गुन वदि अमावस्याको चैत्र कृष्णा अमावस्या भी कहेंगे।

विक्रम सम्वत सन ईस्वी से ५७ वर्ष पहिले, (२५ फ़र्वरी बुधवार) और शाके शालिवाहनसे १३५ वर्ष पहिले तथा कलिके ३०४४ वर्ष बीतने पर चला था।

कलि सम्वत्के सम्बन्धमें यह याद रखनेकी बात है कि कलाब्द और कलिसम्वत लिखते समय गतवर्ष गिनते हैं जैसे कलि सम्वत ५०२५ का यह अर्थ है कि कलिसम्वत के ५०२५ वर्ष बीतगये और अब ५०२६वां वर्ष चलरहा है। परन्तु १८४६ शाकेका अर्थ यह नहीं है कि अब १८४७वां वर्ष चलरहा है। इसीतरह विक्रमका प्रथम वर्ष सन् ई. से ५७ वर्ष पहिले उस तारीखको पूरा हो चुका था। अंग्रेज़ी और मुसलमानी सम्वतों के सम्बन्धमें भी यही बात है अर्थात वह बीतता हुआ वर्ष ही लिखते हैं, बीताहुआ नहीं

अब तक ४१६ विक्रमाब्द से ८५० विक्रमाब्द तकके मिले हुये शिलालेखों में इस विक्रम सम्वतको 'मालवकाल' 'मालवानां सम्वत' और 'मालवगण स्थित्यब्द' के नाम से उल्लिखित किया गया है। संवत ८६२ के शिलालेखमें पहिले पहिल इस सम्वतके साथ विक्रमादित्यका नाम लिखा मिलता है। इसे देखकर ही, अनुमान होता है कि, शक सम्वत में शालिवाहन का नाम जोड़ा गया था।

सब पञ्चांगों में मास गणना चान्द्रमानसे की जाती है, परन्तु सौर गणित से मिलानेके लिये मेषादि सौर पञ्चांग भी रक्खा जाता है। क्षयमास तथा अधिमास की क्रिया द्वारा हर तीसरे वर्ष ये दोनों सम्वत सौर मान से मिला दिये जाते हैं। विक्रम सम्वत में १३५ घटानेसे या शक सम्वत में १३५ जोड़ने से ही दूसरा सम्वत मिल जाता है और तिथि या महीना मिलाने के लिये अलग हिसाब नहीं करना पड़ता। आगे हमने सब जगह विक्रम सम्वतका व्यौहार किया है, जहां आवश्यकता हो वहां इसी नियम के अनुसार शाका शालिवाहन किया जा सकता है। सबही ज्योतिष के नये करण ग्रन्थोंमें शाकेशालिवाहनका उल्लेख है और इसीसे गणित भी कीजाती है। इसका कारण यह जान पड़ता है कि यह सर्वत्र चैत्र शुक्लादि एवं मेषसे गिना जाता है, कहीं भी इस में विक्रम सम्वतकी तरह कार्तिकादिका व्यत्यय नहीं देखा जाता। अन्य सम्वतोंसे इसका मेल करने का चित्र नीचे दिया जाता है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नाम संवत	कलियुग०	सप्तर्षि०	बौद्ध०	मौर्य०	महावीर०	सत्यकेतु०	सन ईसवी
वर्तमानवर्ष	५०२६	४५०१	२५००	२२९६	२४५१	२२३६	१९२४
क्षेपक	-३१८०	-२६५५	-६४५	-४५०	-६०५	-४९०	-७८
शाकाब्द	१८४६	१८४६	१८४६	१८४६	१८४६	१८४६	१८४६
क्षपक	+७८	+७८	+७८	+७८	+७८	+७८	+७८
सनईसवी	१९२४	१९२४	१९२४	१९२४	१९२४	१९२४	१९२४
क्षेपक	+५७	+५७	+५७	+५७	+५७	+५७	+५७
विक्रम सं०	१९८१	१९८१	१९८१	१९८१	१९८१	१९८१	१९८१

चेदि या कलचुरि सम्वत्।

चेदि सम्वत्का चलन प्रायः शिलालेखोंमें ही मिलता है। चालुक्य नरेश मंगलीशके एक प्रसिद्ध स्तम्भके उत्कीर्ण लेखमें 'कलत्सूरि' राजवंशका उल्लेख मिलता है। यह वंश अपना सम्बन्ध सहस्रार्जुनसे बतलाता था। इतना तो अनुमान इससे अवश्य पुष्ट होता है कि यह सम्वत दक्षिणमें ही प्रचलित था। किन्हीं का अनुमान यह भी है कि महाराज समुद्रगुप्तने अपनी प्रयागकी स्तम्भलिपिमें जिन लोगों को आजुनायन लिखा है वे ये ही थे।

सम्वत ७२९ से ९३४ तकके अनेक लेख ऐसे पाये जाते हैं जिनमें इस सम्वतका प्रयोग किया गया है। ये लेख उन्हीं कलत्सूरि' वंशी राजाओंके उत्कीर्ण कराये हुये हैं। परन्तु सबसे पुराना लेख, जिसमें इस सम्वतका व्यौहार किया गया है, महाराज उच्चकल्पकी दानप्रशस्ति है। इस शिला-लेखमें इसी कलत्सूरि वंशके महाराज सर्वनाथका नाम भी आया है। महाराज सर्वनाथ गुप्तवंशीय महाराज हस्तिके समकालीन थे। डाक्टर कीलहार्नका मत है कि इस संवतका आरम्भ चैत्रशु० प्रतिपदा संवत ३०५ विक्रम से होता है। अध्यापक कनिंघम यह तो स्वीकार करते हैं कि यह संवत उक्त ३०५ विक्रममें ही आरम्भ हुआ था, परन्तु उनका मत है कि महाराज सर्वनाथ और हस्ति समकालीन नहीं थे। भारतीय विद्वान् श्रीयुत शंकर बालकृष्णजी दीक्षित (ज्योतिर्विद्) का विचार है कि यह सवत उक्त वर्षमें भाद्रकृष्णा प्रतिपदासे हुआ था। इससे अनुमान होता है कि इसकी मासगणना अमान्त और पौर्णिमान्त दोनों प्रकार का है। इतिहास संबन्धी गणनामें हमारे विचार में चैत्रशुक्ला प्रतिपदासे पौर्णिमान्त मास (विक्रम संवत के जैसा ही) की गणना उचित है।

शाके शालिवाहन, विक्रमाब्द और सन ईस्वीमें से क्रमसे १७१, ३०५ और २४८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

क्षेपकांक घटानेसे यह संवत निकल आता है, और अगर कलचुरि संवतमें ये ही अंक जोड़े जावें तो क्रम से शाका, विक्रम तथा सन् ईस्वी बन जाते हैं

	शाका शालिवाहन	विक्रम संवत	सन ईस्वी
	१८४६	१९८१	१९२४
क्षेपक	-१७०	३०५	२४८
चेदि सम्वत	१४७६	१४७६	१४७६
क्षेपक	१७	३०५	२४८
वर्तमान संवत	१८४६	१९८१	१९२४

गुप्त सम्वत्।

गुप्त संवतका चलन २४२ शाकेशालिवाहन या ३७७ विक्रमसे माना जाता है। अल् बरुनीने अपने भारत-विवरण (तहकीकुलहिन्द) नामक ग्रन्थ में लिखा है कि गुप्तवंशके ह्रासके पीछे उस वंशकी प्रतिष्ठाके कारण यह संवत चलाया गया था। सब से पहिले महाराज चन्द्रगुप्तके चांदीके सिक्कों में ९४ और ९५ संवतके अंक पढ़े गये थे। फिर कुमारगुप्त के सिक्कोंमें १४४, १४५, १४७, १४८ और १४९ के अंक पढ़े गये तथा बुधगुप्तके सिक्कोंमें १७५ और १८० के अंक मिले। इनके अतिरिक्त गुप्त और वल्लभीवंशके शिला लेखों, तथा मन्दसौर की उत्कीर्ण लिपिसे, भी अनुमान होता है कि न तो गुप्त वंशके ह्रासके पीछे यह संवत चलाया गया था क्योंकि उनके ह्रास-कालसे बहुत पहिले यह संवत चल रहा था; और न उनके ह्रास के पीछे इस संवतका प्रचार बन्द ही होगया था क्योंकि उसका व्यौहार वल्लभी महाराजाओं के लेखोंमें पाया जाता है, अतः अल्बरुनीका लेख विश्वासके योग्य नहीं है, उसे भ्रम हुआहोगा। गुप्तवंशका आरम्भ, अगर अल्बरुनीके लेखके अनुसार उनके दिये संवतसे ही गिना जावें तो भिन्न २ विद्वानोंके मत में उसे अलग २ वर्षोंमें मानना पड़ेगा, जैसे टामसके मतमें विक्रम संवत २१ (सन् ७७-७८ ईस्वी), कनिंग्हमके मत में वि० ११० (सन् १६६-१६७ ईस्वी), फ्लाइबवेलीके मतमें वि. १३४ (सन् १९०-९१ ईस्वी), तथा फर्गुसनके मतके वि० २६२ (सन् ३१८-९ ईस्वी) गुप्तवंशका आरम्भ काल होगा; और इस हिसाबसे इन विद्वानोंके मतमें बुधगुप्तका समय क्रमसे २०२ वि०, २९० वि०, ३१४ वि० और ४४८ वि० था और उस समय गुप्तसंवत १८० था। परन्तु गुप्तवंशकी प्रशस्तियोंके आधार पर तो यही कहा जासकता है कि गुप्तवंशके संवतका पहिले पहिल व्यौहार संवत ३७७ वि० में ही किया गया था।

इसकी मास गणना विक्रम और शाके शालिवाहन के अनुसार ही चैत्रशुक्ला प्रतिपदा से होती है। कलचुरि संवतमें ७२ क्षेपक जोड़ने से यह संवत बनता है। अन्य संवतोंसे इसका मिलान इस प्रकार है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

	शाका०	विक्रम	सन् ई०
	१८४६	१९८१	१९२४
क्षेपक	-२४२	-३७७	-३२०
गुप्त संवत	१६०४	१६०४	१६०४
क्षेपक	२४२	३७७	३२०
वर्तमान वर्ष	१८४६	१९८१	१९२४

अगर इसी गुप्त संवत से कलि आदि वे संवत बनाये जावें जो विक्रम संवत से पहिले चले हैं तो यह नियम वर्तना चाहिये—जिस संवतसे मिलान करना हो उसी संवत के विक्रमाब्द आरम्भ होने तकके के वर्षों में ३७७ जोड़ कर योगफलको उस संवतके वर्तमान अंकोंमें से घटा दीजिये तो उन संवतों का मेल हो जावेगा।

उदाहरण १६०४ गुप्त संवते के साथ कलि, शककाल और मौर्य संवत का मिलान कीजिये।

इन संवतोंके विक्रमाब्द आरम्भ होने तकके अंक—

	कलि०	शककाल	मौर्य०
विक्रम० से पहिले अंक	३०४५	५२६	३१५
क्षेपकांक	३७७	३७७	३७७
	३४२२	८९३	६९२

इन्हें वर्तमान संवतोंमें से घटाया

	५०२६	२५००	२२९६
	३४२२	८९६	६९२
गुप्त संवत	१६०४	१६०४	१६०४

वल्लभी सम्वत्

यह सम्वत पश्चिमी भारतमें ६ वर्ष तक चलता रहा था। इसके अंक पुरानें ताम्रपत्रों और उत्कीर्ण लेखोंमें ८२ से ६४१ तकके पाये जाते हैं। इसका प्रचलन गुप्त संवत के साथ २ होता रहा था। इसकी गणना में गुप्त संवतके नियम भी लागू होते हैं। मास गणना गुजरात और काठियावाड़के पञ्चांगके अनुसार होती है। कहीं कहीं पौर्णिमान्त मास भी व्योहार किया गया है। वर्ष परिवर्तन यद्यपि चान्द्रमास से होता है, परन्तु अधिमासके द्वारा उसका हिसाब सौर वर्ष से मिलाया जाता रहता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री हर्ष का संवत

विक्रमादित्य के संवत से ६६४ वर्ष पीछे यह संवत शुरू होता है। ब्रज और पांचाल (मथुरा, आगरा, भरतपुर, जालौन, काल्पी, कन्नौज, बिजनौर, बदायूं का पूर्व-दक्षिण भाग, अलीगढ़, बुलन्दशहर का दक्षिण भाग और इसी के बराबर का जमना के दूसरे तट का कुछ भाग ब्रज कहलाता है, और वर्तमान मेरठ कमिश्नरी, रुहेलखण्ड कमिश्नरी तथा आगरा कमिश्नरी का शेषभाग-जहां गंगा, जमुना, रामगंगा, कालिन्दी या काली नदी तथा कौशिल्या नदी बहती हैं-मध्य कालीन इतिहास का पांचाल और पड़ता है) में यह संवत प्रायः उपयोग में आता रहा था। अलबरुनी ने भी इस संवत का जिक्र अपने इतिहास में किया है। थानेश्वर (स्थाण्वीश्वर) के वर्ध वंश में यह सम्राट् हर्ष वर्धन उत्पन्न हुये थे। यह वही सम्राट् हर्षवर्धन हैं जिन का हाल प्रसिद्ध विद्वान बाण ने अपने ग्रंथ 'श्री हर्ष चरित्' में लिखा है। संवत ६६४ में (सन् ६०७ ईस्वी) श्री हर्ष का राज्याभिषेक हुआ था तब ही से इसका उल्लेख दान पत्र और शिलालेख आदि में होने लगा था। मास आदि की गणना वही सामान्य चैत्रादि (चान्द्र) और मेषादि (सौर) है। अन्य संवतों से इसका मेल—

	संवत विक्रम	शाका शालिवाहन	सन् ईस्वी
	१९८१	१८४६	१९२४
क्षेपक	-६६४	-५२९	-६०७
हर्ष संवत	१३१७	१३१७	१३१७

नैपाल का संवत

नैपाल भी बहुत प्राचीन समय से भारत का एक भाग माना जाता रहा है परन्तु अब वह एक स्वतंत्र हिन्दू राज्य है। वहां का प्रचलित सम्वत भी इतिहासोपयोगी होने से लिखा जाता है। इस समय वहां के सिक्कों पर और राज्य-व्योहार में विक्रम संवत का उपयोग देखा जाता है। नैपाली सम्वत को नेवार या नेवारी सम्वत भी कहते हैं। वास्तव में यह दोनों शब्द क्रम से 'नेपाल' और 'नेपाली' शब्दों के अपभ्रंश हैं। यह सम्वत कार्तिक शुक्ल-पक्ष से आरम्भ होता है। नैपाल में इस संवत का आरम्भ राजा राघवदेव ने संवत ९२७ विक्रम में किया था और संवत १८२३ में महाराज पृथ्वीनारायण शाह ने इसे बन्द करके इस के स्थान में शकारि संवत और शकाब्द प्रचलित किये थे। अन्य संवतों से नैपाली संवत का मिलान—

	विक्रमाब्द	शाका०	सन् ईस्वी
	१९८१	१८४६	१९२४
क्षेपक	-९२७	-७९२	-८७०
नैपाली संवत	१०५४	१०५४	१०५४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कोलम्बो संवत

कोलम्बो या कोलुम्बो संवत को परशुरामी संवत भी कहते हैं। त्रावाङ्कुर और कुमारी अन्तरीप के निकट के दक्षिण के प्रदेशों में यह संवत बहुत प्रचीन कालीनसे प्रचलित है। यह संवत भी सप्तर्षि या लौकिक संवत की तरह परिवर्तित होता रहता है-प्रति सहस्र वर्ष पीछे इस का नया क्रम चलने लगता है। इस की गणना सौर संवत के अनुसार है। इस समय चतुर्थ युग चलरहा है जिसका आरम्भ संवत १८८१ विक्रम से हुआ था सब से पहिले विक्रम से १११९ वर्ष पूर्व यह संवत गिना जाना आरम्भ हुआ था। और विक्रम से ११९ वर्ष पहिले प्रथम चक्र समाप्त हो गया था। संवत ८८१ में तीसरा और संवत १८८१ में चौथा या वर्तमान चक्र चला था। इस समय संवत (१०००+) ९८ गिना जाता है। १३ या १४ अप्रेल सन ईस्वी को नया वर्ष लगता है। दूसरे संवतों से मिलान करने की सारिणी—

	विक्रम सम्वत	शाका	सन् ईस्वी
	१९८१	१८४६	१९२४
क्षेपक	-८८१	-७४६	-८२४
नैपाली संवत	११००	११००	११००

नोट—सन् ईस्वी से सौर सम्वत मिलाने की विस्तृत व्यवस्था आगे दी गई है।

चालुक्य सम्वत।

चालुक्य वंश के सम्वत का उल्लेख ११३३ वि० तक के शिलालेखों में पाया जाता है, परन्तु उक्त वर्ष में चालुक्यराज महाराज विक्रमादित्य त्रिभुवन मल्ल ने एक नया सम्वत चलाया जिस का नाम "चालुक्य-विक्रम-वर्ष" रखा। चालुक्य वंश में वह बड़े बलवान नृपति थे, इसी लिये उन के राज्य काल में ही (अर्थात् सवत ११८४ वि० तक) आस पास के राष्ट्रों में भी यह सम्वत व्यौहार में आने लगा था। महाराज कदम्बराज तैलप्प देव (तिलंगानाधिपति) ने भी इस सम्वत को अपने राज्य में प्रचलित किया था। मास गणना और पञ्चांगादि शालिवाहन के शकाब्द के अनुसार चैत्रादि चान्द्रमास गणना तथा वर्ष सौर है। कभी चालुक्य वंश अत्यंत वैभवशाली रह चुका है।

अन्य संवतों से चालुक्य सम्वत का मेल—

	विक्रमाब्द	शाका	सन् ईस्वी
	१९८१	१८४६	११२४
क्षेपक	-१०३३	-८१८	-९७६
चालुक्याब्द	९४८	९४८	९४८

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिंह सम्वत ।

गुजरात में वहां के जैन राजाओं के शासन के नष्ट होने के समय से यह संवत गिना जाता है। इस संवत को कभी कभी शिवसिंह संवत भी कहते हैं। नया वर्ष कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा से माना जाता है। सम्वत ११७० वि०, शाके १०३५ तथा सन १११३ ईस्वी से यह संवत आरम्भ हुआ था और अब सम्वत १९८१ (तथा शाके १८४६ और सन् १९२४) में ८११ गिना जाता है जैसे—

	विक्रम०	शाका	सन ईस्वी
	१९८१	१८४६	१९२४
क्षेपक	-११७०	-१०३५	-१११३
सिंह सम्वत	८११	८११	८११

लक्ष्मणसेन-सम्वत

लक्ष्मणसेन-सम्वत का उल्लेख इतस्ततः बंगाल में पाया जाता है। वास्तव में यह संवत भी एक प्रकार का सिंह सम्वत है- बंगाल में मुसलमानों के द्वारा हिन्दू-राज्य की समाप्ति होने के समय ही यह संवत गिना जाता है-इस सम्वत का उल्लेख वहां भी मिलता है वहां स्पष्ट इस बात का उल्लेख किया गया है कि उक्त महाराज लक्ष्मणसेन का राज्य नष्ट होने की घटना से ही यह संवत गिना जाता है, जैसे—

"श्रीमल्लक्ष्मणसेन देवपादानामतीतराज्ये संवत ७४ वैशाख वदी १२ गुरौ"
(बौधगया का शिलालेख)

जान पड़ता है कि जैसे सिंह सम्वत जैन राजाओं के शासन के अन्त होने के पीछे गिना जाने लगा था तथा लक्ष्मणसेन के राज्य समाप्ति के पीछे सेन संवत गिना जाने लगा था उसी प्रकार भारत में और भी ऐसे सम्वत चलाने की प्रथा थी, तथा, ऐसा संवत चलाने वालों का अभिप्राय चाहे कुछ भी रहा हो किन्तु, अपने पराभूत शत्रु की पराजय की घोषणा की स्मृति की ध्वनि इस प्रकार के सम्वतों से अवश्य निकलती है।

इसी प्रकार का एक संवत पाल वंश के नष्ट होने के पीछे गौड़ और बंगाल में चलता रहा था और उसका उल्लेख भी इसी प्रकार से पाया जाता है, जैसे—

"...गोविन्दपाल देवपादानामतीतराज्ये"
तथा "गोविन्दपाल देवपादानां विनष्ट राज्ये"
हिन्दी विश्वकोष भा० १ पृ० ७३१

किन्तु इस सम्बन्ध में ऐतिहासिकों में आपस में बड़ा मत भेद है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबर का दर्बारी अबुलफ़ज़ल सब से पहिला विदेशी विद्वान है जिसने श्री लक्ष्मणसेन संवत की चर्चा अपने ग्रन्थ में की थी। उस ने लिखा है कि 'लघुभारत' में लिखे प्रवाद के अनुसार बल्लाल सेन ने संवत ११७६ में इस सम्वत को चलाया था। "लघु भारत" में लिखा है कि गौड़ाधिपति महाराज बल्लाल देव ने मिथिला विजय करके जब अपनी राजधानी में प्रवेश किया तब ही उसे अपने पुत्र लक्ष्मणसेन के जन्म का शुभ समाचार मिला था। उसी समय इन दोनों युगान्तर घटी घटनाओं की स्मृति में महाराज बल्लालसेन ने यह संवत चलाया था।

तबक़ात-इ-नासिरी के कर्ता का मत है कि जब लक्ष्मणसेन ८० वर्ष का वृद्ध था तब, संवत ११७६ विक्रम में बख़्तार ख़िलजी ने नदिया विजय किया था। इस हिसाब से जाना जाता है कि लक्ष्मणसेन का जन्म संवत १०९६ में हुआ था और उसी समय मिथिला विजय की घटना भी हुई थी। परन्तु हम ऊपर शिलालेख के आधार पर दिखा आये हैं कि यह संवत राजा लक्ष्मणसेन के पीछे से गिना जाता है।

कोलब्रुक साहब ने सन १७९६ ईस्वी की १७वीं दिसम्बर को लक्ष्मणसेनाब्द ६९२ लिखा है अतः उन के मतानुसार यह संवत सन ११०४ ई० तदनु संवत ११६१ विक्रम (१७९६-६९२=११०४) में चला होगा। इसी प्रकार बुकानन साहब ने भी अपनी पुस्तक (The Eastern India Pt. iii P. 41) में लिखा है कि सन १८१० ईस्वी में लक्ष्मणसेन संवत ७०५-६ था जो उक्त कोलब्रुक साहब के मतानुसार ही है। परन्तु आगे चलकर बुकानन साहब ने अपनी पुस्तक के पृष्ट १३९ पर मिथिला में तत्कालीन प्रचलित पञ्चांगों का उल्लेख करते हुये लिखा है कि संवत ११६५ वि० में यह संवत चलने लगा था। उन्हों ने यह भी लिखा है कि उस समय यह वर्ष पौर्णिमान्त था तथा वर्ष परिवर्तन श्रावण कृ० प्रतिपदा से होता था; अस्तु।

कीलहार्न महाशय ने संवत १२५० से १६०७ तक के प्राप्त हुये अंकों को मिला कर निर्णय किया है कि संवत ११७६ में कार्तिकी और अमान्त गणना के हिसाब से यह संवत प्रचलित हुआ था, किन्तु डाक्टर राजेन्द्रलाल मित्र और कनिंगहम साहब संवत ११६४ वि० से ही इस अब्द की गणना का आरम्भ होना स्वीकार करते हैं। उनके मत में, वर्ष परिवर्तन माघ कृष्णा पड़वा से होता था। जो भी हो, इस संवत का अधिक प्रचार मिथिला और दर्भंगा आदि में ही रहा जान पड़ता है।

मुसलमानों ने अपनी विजय स्थापना के साथ साथ बंगाल में जो अपना सन चलाया था वह 'पर्गनाति' या 'परगनाती' (परिगणाति?) कहा जाता था। यह संवत ढाका, नवाखोली और त्रिपुरा आदि कुछ ज़िलों के पुराने काग़ज़ों में लिखा पाया जाता है। इस की गणना संवत १२५६ वि० (सन ११९९ ई०) से की जाती है। सम्भव है कि यह परगनाति सन और लक्ष्मणसेनातीताब्द एक ही सन हों, तथा इन दोनों में

CC-0: Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

केवल इतना अन्तर है कि एक वेद हिन्दू प्रजा ने प्रचलित कर दिया है और दूसरा मुसलमानी शासकों का विजय-संवत रहा है।

राजशक या श्रौशिव सम्वत।

महाराष्ट्र के ऐतिहासिक साहित्य में यह संवत पाया जाता है। हिन्दू छत्रपति श्रीशिवाजी महाराज ने अपने राज्याभिषेक के समय से इस संवत को चलाया था। उन का अभिषेक संवत १६५१ के ज्येष्ठ की शुक्ला त्रयोदशी के दिन हुआ था, तब ही से यह संवत दाक्षिणात्य पञ्चांग के अनुसार (अमान्त चान्द्र मास तथा सौर वर्ष गणना) गिना जाता है। अतः शक सम्वत २६० है। अन्य सम्वतों में, क्षेपक दे कर राजशक इस प्रकार बनाया जा सकता है—

	विक्रम	शाकाब्द	सन ईस्वी
	१९८१	१८४६	१९२४
क्षेपक	-१७८१	-१५८६	-१६६४
राजशक	२६०	२६०	२६०

श्रीमद्दयानन्दाब्द।

इस संवत का प्रचार आर्यसमाज में ही परिमित है, किन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से इस का महत्व अधिक है। महर्षि दयानन्द नवीन संसार के इतिहास में वेदों के सब से बड़े विद्वान और हिन्दू धर्म के एक महान् संशोधक थे। उन्हों ने हिन्दू राष्ट्र में युगान्तर ला दिया था। संवत १९८१ से पूर्व यह सम्वत उक्त महात्मा की मृत्यु से गिना जाता था, परन्तु कुछ कारणों से उक्त संवत की फाल्गुन कृ० १४ (शिवरात्रि) से यह सम्वत उन की जन्म तिथि से गिने जाने की व्यवस्था की गई। उक्त शिवरात्रि को महाराज दयानन्द जी को उसी प्रकार बोध प्राप्त हुआ था जिस प्रकार महात्मा बुद्धदेव ने ज्ञान प्राप्त करके बुद्ध-पदवी ग्रहण की थी। सम्वत १९८१ की शिवरात्रि को (सन् १९२५ ईस्वी में) उक्त घटना को १०० वर्ष होते हैं अतः उस समय से इस संवत को १०१ गिन ने आरम्भ किया गया है। उसी अवसर पर एक बहुत बड़ा उत्सव 'श्री मद्दयानन्द शताब्दि' के नाम से सम्पूर्ण भारतवर्ष में मनाया गया था। उक्त महापुरुष का जन्म संवत १८८१ (सन ईस्वी १८२४), बोध-प्राप्ति संवत १८९४ (सन ईस्वी १८३७) और मृत्यु संवत १९४० कार्तिक कृष्णा ३० (दीपावलि सन १८८३) हुई थी। सम्वत १९८१ की शिवरात्रि से पहिले दयानन्दाब्द ४२ था। उसी में ५९ क्षेपक मिलाकर सम्वत १०१ बनाया गया अतः संवत् १९८१ के पीछे दयानन्दाब्द में से ५९ घटाने से पुराने क्रम का सम्वत निकल आता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ब्रह्मा का सम्वत।

ब्रह्मदेश वासियों में इस सम्वत का प्रचार बौद्ध धर्म के साथ साथ हुआ था। इस संवत की गणना करके उन्हों ने अपने सम्वत को विक्रम से ४८६ वर्ष पहिले से आरम्भ कर दिया था। ब्रह्देश के बौद्ध साहित्य में ही प्रायः इस सम्वत का उल्लेख मिलता है।

मगी सम्वत।

यह भी एक प्रकार का बौद्ध सम्वत है। सिंहल पीगू, आवा, ब्रह्मा आदि प्रान्तों में इस सम्वत की गिनती सन् ईस्वी ६३९ से (सम्वत् ६९६ वि०) होती है। उन लोगों के मत में यही बौद्ध सम्वत भी है। इस प्रकार के बौद्ध सम्वत के सम्बन्ध में जो देशभेद से मतभेद पाये जाते हैं उन का कारण, हमारी सम्मति में, यह है कि कहीं कहीं इस सम्वत का चलन बौद्ध-विहार की (Establishment of the Buddhist Church) से माना जाता है अर्थात् जिस देश में जब बौद्ध धर्म के संघ या चर्च की स्थापना की गई थी, उस देश में उसी समय से बौद्ध सम्वत गिना जाता है। जैसे ब्रह्मा में ४८६ वि० पू० में बौद्ध सम्वत का आरम्भ होने का यह मतलब है कि उक्त वर्ष में वहां बौद्ध धर्म की स्थापना की गई थी। इसी प्रकार आसाम, चीन, लंका स्याम आदि के विषय में भी समझिये। ब्रह्मा में भी समुद्रराज ने विक्रम सम्वत १३६ ऐसा सम्वत चलाया था। इसी प्रकार इस मगी सम्वत का आरम्भ पाप्पा चाम राहन ने उक्त वर्ष में चलाया था। गौतम के पिता-मह अञ्जन ने भी सम्वत ७४८ में एक और सम्वत इसी प्रकार का चलाया था जो महाव्द कहलाता था, किन्तु इस सम्वत का ऐतिहासिक महत्व अधिक नहीं है।

रोमन सम्वत।

रोम की स्थापना के साथ वहां एक एक नया संवत भी चलने लगा था जो रोमन संवत कहलाता है। यद्यपि निर्विवाद रूप से यह आज तक भी स्थिर नहीं हो सका है कि रोम की स्थापना किस तिथि को की गई थी, तो भी रोमन संवत के नये वर्ष का आरम्भ सदा ही २१ अप्रेल (७ मेष) से मनाया जाता रहा है। कोई विद्वान रोमनगर की स्थापना की घटना विक्रम से ६६० वर्ष पूर्व की बताते हैं और कोई इस घटना को ६६३ वर्ष पूर्व ठहराते हैं। इसी प्रकार किन्हीं किन्हीं ने ६६४ वि० पू० तथा ७६५ वि० पू० में भी उक्त घटना का होना निश्चित किया है। इस संवत का संक्षिप्त ए० यू० सी A. U. C. है जिस का अर्थ 'नगर की स्थापना से—वर्ष पीछे' (Anno urbis conditœ, or ab urbe condita) है। रोमन लोग ईसाई धर्म के अभ्युत्थान से पहिले अपने पंचांग को कैलैण्डर कहते थे। उनका यह पञ्चांग चान्द्र गणना से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुसार माना जाता था-प्रत्येक मास में २९ या ३० दिन, एवं वर्ष में ३५४ दिन होते थे। महीने के पहिले दिन को वे लोग कैलैण्ड्स (Calends) कहते थे। इसे हमारे चान्द्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा समझिये। इस दिन नगर निवासी एक स्थान पर बुलाये जाते थे और वहां उस नये मास के पञ्चांग का निर्णय किया जाता था। पौर्णिमा, जो जल्दी से जल्दी १३वें दिन और अधिक से अधिक १५वें दिन पड़ती है, को वे लोग ईड्स (Ides या Idus) कहते थे। 'ईड्स' शब्द का धात्वर्थ 'दोभाग करना' करना है अर्थात् इस तिथि के द्वारा चान्द्र मास दो भागों में बंट जाता था। रोमन लोग इस एक पक्ष को भी दो भागों में बांटते थे और उस विभाजक दिन को वे नवमी (Nonœ) कहते थे क्योंकि वह (पहिले दिन को मिला कर) चन्द्रदर्शन से नवां दिन होता था। इस से उन का अभिप्राय अष्टमी तिथि से था। यह तिथि कम से कम पांचवें दिन और अधिक से अधिक ७वें दिन पड़ती है क्यों कि चन्द्रदर्शन कभी २ अमावस्या को भी हो जाता है (और ऐसी अमावस्या को सिनीवाली कहते हैं)।

जब कभी कोई घटना उक्त कैलैन्ड्स, नान्स या ईड्स को नहीं पड़ती थी तो रोमन लोग अगले विभाजक दिन से पीछे को गिन कर दिन का हिसाब लगाते थे। जैसे कोई बात कैलैन्ड्स से ३ दिन पीछे होती थी तो उसे बताने के लिये नान्स से गिन कर कहते थे कि वह घटना नान्स से इतने दिन पीछे की है। अगर कोई बात नान्स के पीछे होती थी तो उसे 'ईड्स' से इतने दिन पहिले हुई बताते थे, किन्तु नान्स से 'इतने दिन पीछे हुई' नहीं कहते थे। इसी प्रकार 'ईड्स' के हो जाने के पीछे जो घटना होती थी उसे 'ईड्स के पीछे की घटना नहीं कहते थे, किन्तु 'कैलैन्ड्स से इतने दिन पहिले की घटना' कहते थे। गिनती में वे दोनों दिन गिने जाते थे जिस दिन घटना होती थी और जब से उस का हिसाब लगाया जाता था, जैसे इस ढंग से गिनने पर १५ तारीख़ की घटना को २० तारीख़ तक ६ दिन होते हैं, पांच दिन नहीं होते। जनवरी के नान्स से ६ दिन पहिले जो दिन होगा वह इस तरह कहा जावेगा "जनवरी के नान्स से ६ दिन पहिले"।

अगर कोई घटना ऐसे दिन पड़े जो ऊपर गिनाये हुये ३ विभाजक पर्वों में से किसी पर्व का पहिला दिन हो तो उक्त पर्व से पहिले 'प्रीडाई' Pridie लिखते हैं, जैसे "फ़र्वरी मास का प्रीडाई कैलैन्ड्स" इस का अभिप्राय यह है कि जनवरी की ३१ तारीख़।

सन ईस्वी के अंकों के साथ साथ अंग्रेज़ी में दो अक्षर और भी लिखने की चाल है—A. D. ये अक्षर एण्टी डायम 'Ante diem' का संक्षिप्त रूपान्तर हैं और इस का अर्थ है "दिन पहिले;" जैसे A. D. VI Dec. ('ए० डी० छः दिसम्बर)" का यह अर्थ है कि दिसम्बर के कैलैण्ड्स से ६ दिन पहिले अर्थात् २६ नौम्बर।

आगे की सारिणी में इस रोमन पञ्चांग के महीनों व तारीख़ों के नाम दिये जाते हैं—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तारीख	अप्रेल जून सितम्बर, नोवम्बर	जनवरी अगस्त दिसम्बर	मार्च मई, जूलाई अक्टूबर	फ़ेबरी
१	कैलैण्डी	कैलैण्डी	कैलैण्डी	कैलैण्डी
२	ए० डी० ४ नौनस	ए० डी० ४ नौनस	ए० डी० ६ नौनस	ए० डी० ४ नौनस
३	ए० डी० ३ नौनस	ए० डी० ३ नौनस	ए० डी० ५ नौनस	ए० डी० ३ नौनस
४	प्रीडाई नौनस	प्रीडाई नौनस	ए० डी० ४ नौनस	प्रीडाई नौनस
५	नौनी	नौनी	ए० डी० ३ नौनस	नौनी
६	ए० डी० ८ ईडस	ए० डी० ८ ईडस	प्रीडाई नौनस	ए० डी० ८ ईडस
७	ए० डी० ७ ईडस	ए० डी० ७ ईडस	नौनी	ए० डी० ७ ईडस
८	ए० डी० ६ ईडस	ए० डी० ६ ईडस	ए० डी० ८ ईडस	ए० डी० ६ ईडस
९	ए० डी० ५ ईडस	ए० डी० ५ ईडस	ए० डी० ७ ईडस	ए० डी० ५ ईडस
१०	ए० डी० ४ ईडस	ए० डी० ४ ईडस	ए० डी० ६ ईडस	ए० डी० ४ ईडस
११	ए० डी० ३ ईडस	ए० डी० ३ ईडस	ए० डी० ५ ईडस	ए० डी० ३ ईडस
१२	प्रीडाई ईडस	प्रीडाई ईडस	ए० डी० ४ ईडस	प्रीडाई ईडस
१३	ईडस	ईडस	ए० डी० ३ ईडस	ईडस
१४	ए० डी० १८ कैल०	ए० डी० १८ कैल०	प्रीडाई ईडस	ए० डी० १७ कैल०
१५	ए० डी० १७ कैल०	ए० डी० १७ कैल०	ईडस	ए० डी० १६ कैल०
१६	ए० डी० १६ कैल०	ए० डी० १६ कैल०	ए० डी० १७ कैल०	ए० डी० १५ कैल०
१७	ए० डी० १५ कैल०	ए० डी० १५ कैल०	ए० डी० १६ कैल०	ए० डी० १४ कैल०
१८	ए० डी० १४ कैल०	ए० डी० १४ कैल०	ए० डी० १५ कैल०	ए० डी० १३ कैल०
१९	ए० डी० १३ कैल०	ए० डी० १३ कैल०	ए० डी० १४ कैल०	ए० डी० १२ कैल०
२०	ए० डी० १२ कैल०	ए० डी० १२ कैल०	ए० डी० १३ कैल०	ए० डी० ११ कैल०
२१	ए० डी० ११ कैल०	ए० डी० ११ कैल०	ए० डी० १२ कैल०	ए० डी० १० कैल०
२२	ए० डी० १० कैल०	ए० डी० १० कैल०	ए० डी० ११ कैल०	ए० डी० ९ कैल०
२३	ए० डी० ९ कैल०	ए० डी० ९ कैल०	ए० डी० १० कैल०	ए० डी० ८ कैल०
२४	ए० डी० ८ कैल०	ए० डी० ८ कैल०	ए० डी० ९ कैल०	ए० डी० ७ कैल०
२५	ए० डी० ७ कैल०	ए० डी० ७ कैल०	ए० डी० ८ कैल०	ए० डी० ६ कैल०
२६	ए० डी० ६ कैल०	ए० डी० ६ कैल०	ए० डी० ७ कैल०	ए० डी० ५ कैल०
२७	ए० डी० ५ कैल०	ए० डी० ५ कैल०	ए० डी० ६ कैल०	ए० डी० ४ कैल०
२८	ए० डी० ४ कैल०	ए० डी० ४ कैल०	ए० डी० ५ कैल०	ए० डी० ३ कैल०
२९	ए० डी० ३ कैल०	ए० डी० ३ कैल०	ए० डी० ४ कैल०	प्रीडाई कैलैण्डस
३०	प्रीडाई कैल०	प्रीडाई कैल०	ए० डी० ३ कैल०	मार्टिस
३१			प्रीडाई कैल०	

कोष्ठ के भीतर कैलैण्डी का अर्थ "अगले महीने के कैलैण्ड" है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऊपर कह चुके हैं कि रोमन संवत का आरम्भ २१ अप्रेल सन ७५३ बी० सी० तदनु (६९४ वि० पू० की ७ मेष) से होता है। यद्यपि वर्ष के सम्बन्ध में विद्वानों का मतभेद है, परन्तु तिथि के विषय में सब एक मत हैं। वह २१ अप्रेल उक्त रोमन पञ्चांग के अनुसार ए० डी० ११ कैल० मई (A. D. XI Kal. Mai) गिना जाता है।

और सम्वतों से रोमन सम्वत का मिलान—

इष्ट सन ईस्वी या विक्रम संवत को ७५३ (या ६९४) से घटा शेष में १ जोड़ दो इस तरह वे संवत मिल जावेंगे जो वि० पू० या बी० सी० (B. V. or B. C.) होंगे। जैसे ४३२ बी० सी० (या वि० पू०) का समकालीन रोमन संवत = ७५३—४३२ = ३२१ + १ = ३२२ है। अगर रोमन सम्वत मालूम हो और उस का समकालीन बी. सी. या वि० पू० बनाना हो तो उस की क्रिया इस प्रकार होगी—

(१) बी० सी० को ७५४ में से घटाने से रोमन संवत होगा, जैसे २ बी० सी० = ७५४ – २ = ७५२ रोमन संवत।

(२) यदि सन ईसवी बी० सी० न हो तो उस सन को ७५३ में जोड़ने से ही उक्त सम्वत बन जावेगा, जैसे ७४ सन ईस्वी = ८२७ रोमन सन (७४ + ७५३ = ८२७)

(३) विक्रम सम्वत अगर वि० पू० न हो तो उस में ६९६ जोड़ने से रोमन संवत बनेगा। जैसे १९८१ वि० सं० + ६९६ = २०७७ रोमन सम्वत।

यूनानी सम्वत

प्राचीन काल में यूनान में बहुत से छोटे छोटे प्रजातंत्र राज्य थे, और ऐसे हर एक प्रजातंत्र राज्य में किसी प्रधान पदस्थ अधिकारी के नाम से एक संवत चलता था। उस पद पर जब कोई नया अधिकारी अभिषिक्त होता तो उस के नाम का फिर नया संवत चलता था, अर्थात् वे संवत एक तरह से 'जलूसी सन' होते थे। परन्तु टिमीयस के पीछे प्रायः २४३ वि० पू० (३०० बी० सी०) से यूनानी इतिहास लेखकों ने ओलिम्पियद वर्ष को सार्वदेशिक रूप से ग्रहण कर लिया था। ओलिम्पिया वासी अपने इस संवत की गिनती वि० पू० ७२० (बी० सी० ७७६) से करते थे जब कि उन के देशवासी कौरीबस (Coræbus) को विजय श्री मिली थी।

यूनान देश के ऐलिस प्रान्त में ओलिम्पिया नामक एक विस्तृत मैदान है। वहां की प्राकृतिक सुन्दरता से मुग्ध होकर सम्पूर्ण यूनान वासियों ने एक राष्ट्रीय रंग-भूमि की रचना इतिहासातीतकाल में ही करली थी जहाँ प्रति चार वर्ष पीछे, वसन्त विषुवसम्पात के पश्चात् पहिली पौर्णिमा को राष्ट्र के नवयुवक अपनी अपनी शारीरिक और मानसिक परीक्षा के लिये जुटते थे—कबड्डी, उछल—कूद का खेल, भाले

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और यूनानी चक्र (Discus) के हाथ, मल्लयुद्ध, घूंसेबाजी, घुड़दौड़, रथदौड़, वीणा-वादन और उच्च स्वर से व्याख्यान देना आदि अनेक प्रकार की क्रीड़ाएं उस क्षेत्र में दिखाने के लिये वे युवक जुटते थे। उस राष्ट्रीय पौरुष-क्रीड़ा-स्थल में स्त्री और गुलाम (भारत वर्ष के "स्त्रीशूद्रौ०"), वहां आकर उन खेलों को देख भी नहीं सकते थे-विशुद्ध यूनानी रक्त जिन युवा पुरुषों की नसों में बहता था वे ही वहां आ और रंगभूमि में भाग ले सकते थे। परन्तु यूनानियों का यह गौरव उस समय धूल में मिल गया जब रोमन लोगों ने उन्हें पराभूत करके परतंत्र बना दिया था; अस्तु।

अखाड़े के महीने में सम्पूर्ण यूनान देश में युद्ध बन्द होजाते थे, तथा प्रत्येक राष्ट्र उस समय मित्र समझा जाता था। सब प्रान्तों के यूनानी बिना किसी भेदभाव के, केवल स्त्री और शूद्रों को छोड़ कर, इसी अवसर पर एक नुमायश में अपने शिल्पकला के चातुर्य का भी प्रदर्शन करते कराते थे और विद्वान लोग अपने २ ग्रंथ पढ़ कर सुनाते थे। विजयी महाभाग को एक ताम्रमण्डित तिपाई पर या हाथीदांत और सोने की तिपाई अथवा चौकी पर खड़ा करके विजय-माल उस के शिर पर रखते थे। यह जयमाल आल्टिस जंगल के एक विशेष शाह बलूत की बनाई जाती थी। उस के और उस के पिता का नाम तथा उसका शुभ प्रान्त राजदूत के द्वारा उद्घोषित किये जाते थे। उत्सव समाप्त होने पर उस की विजय-वार्ता सम्बन्धी कोई काव्य भी उसे पढ़कर सुनाया जाता था। इस प्रकार वह स्वदेश, स्वराष्ट्र और अपने कुल का भूषण युवक सम्मानित होकर अपने घर को लौटता था।

पारितोषिक देने एवं रंगभूमि में शान्ति रखने का प्रबन्ध वे अध्यक्ष लोग करते थे जो चिट्ठी डालकर एलिया जाति के यूनानियों में से चुने जाते थे। वास्तव में ऐलिस देश के महाराज इफ़ीटस (Iphitus) ने ही स्पार्टा देश के प्रसिद्ध स्मृतिकार लाइकरगस और पिसा देशवासी क्लियोस्थनीज़ की सम्मति ने इस उत्सव को संवत ८३७ वि० पू० या ७८१ वि० पू० में दूसरी बार प्रचारित किया था जब वह एक बार बन्द हो चुका था। एलिस देश वालों से पहिले यह उत्सव पिसा के निवासियों द्वारा संचालित होता था अतः कई बार इन दोनों देश वासियों में उत्सव की अध्यक्षता के लिये वाद विवाद उठा, किन्तु संवत ५१५ वि० पू० में पीसा वालों की हार होने से ऐलिस वासियों का ही इस पर अधिकार रहा। यह उत्सव सम्वत ४४८ वि० तक होते रहे, तत्पश्चात् जब गोथ लोगों ने अलारिकस की प्रधानता में आक्रमण किया तो ये बन्द कर दिये गये।

पहिला उत्सव ७१६ वि० पू० में हुआ था और १६५वें उत्सव का प्रथम वर्ष सन ईस्वी १ (सम्वत ५७ वि०) में पड़ा था तथा अन्तिम उत्सव २३६ वां था जो संवत ४४८ वि० सन् ३६१ ई० में मनाया गया था। अस्तु।

जिस तरह यूनान के राज्यों में अलग २ सम्वत चलते थे उसी तरह हर एक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संवत के अलग २ महीने थे और उन महीनों के दिनों की संख्या भिन्न २ होती थी; किन्तु प्राचीन यूनानी लेखकों ने एथिन्स राज्य में प्रचलित महीनों का ही ग्रहण किया है, अतः हम भी केवल उसी का उल्लेख करते हैं।

यूनानी (एथिन्स) महीनों के नाम और दिनों की संख्या—

(१) हैकेटोम्बियन Hecatombeon	३० दिन	इस महीने में १०० गोबलि होती थीं; अमान्त श्रावण।
(२) मटगीटनियन Metageitnion	२९ दिन	अमान्त भाद्र; ब्यूटिया में इस का नाम पानिमस (Panemos) और स्पार्टा में कारनियस (Carneios) था।
(३) बोइड्रामियन Boidromion	३० दिन	अमान्त आश्विन; थीसस की एक विजय जयन्ति।
(४) प्यनेप्सियन Pyanepsion	३०	अमान्त कार्तिक; जौ, चना और दालों के अन्नकूट का पर्वमास।
(५) मिमैक्टीरियन Mæmacterion	२९	अमान्त मार्गशीर्ष; ब्यूटिया में इस का नाम अललकमनियस था; जूपिटरपर्व।
(६) पासीडियन Posidion	२९ दिन	अमान्त पूस; वरुण पर्व का मास।
(७) गमीलियन Gamelion	३० दिन	अमान्त माघ; इस का पुराना नाम लीनियन था; विवाहों का समय।
(८) एन्थेस्टीरियन Anthesterion	२९	अमान्त फाल्गुन; बैकस के पुष्पभोज में पर्व का महीना; बसंत का पर्व।
(९) एलफबोलियन Elphebolion	३०	अमान्त चैत्र; डायना के पर्व का मास।
(१०) म्यूनिशियन Munychion	२९	अमान्त वैशाख; डायना के दूसरे पर्व का महीना।
(११) थार्जीलियन Thorgelion	३०	अमान्त ज्येष्ठ; अपोलो और डायना के पर्वों का महीना।
(१२) साईरोफोरियन Scirophorion	२९ दिन	अमान्त आषाढ़; ऐथल देवी के पर्व का महीना।

यूनानियों के ये महीने दस दस दिन के ३ पक्षों में बांटे गये थे जो प्रायः वैसे ही गिने जाते थे जैसे रोमन महीनों के दिन।

यूनानी सम्वत से सन ईस्वी बनाना—

जुलाई से दिसम्बर तक के लिये-(क) यूनानी पंचवर्षीय युगों में से एक घटाओ (ख) बाक़ी को चारसे गुणो और गुणन-फलमें पंचवर्षीय युगके प्रचलित वर्ष जोड़दो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अगर यह जोड़ ७७६ से कम हो तो उसे ७७७ में से घटा दो और शेष बी० सी० सन् ईस्वी होगा। अगर जोड़ ज्यादः हो तो उस में से ७७६ घटा दो उत्तर सन् ईस्वी होगा।

जनवरी से जून तक के लिये यह सब क्रिया की जाती हैं, केवल १ घटाया नहीं जाता। किन्तु अगर अन्त का योग ७७६ से कम हो तो बाक़ी में से एक और घटा दो उत्तर सन ईस्वी बी० सी० होगा। अगर ७७६ से अधिक हो तो उस में १ जोड़ दो। इस तरह सन् ईस्वी ए० डी० बन जावेगा।

उदाहरण

(१) ७५वें युग की २ य बोईडामियन की किसी घटना का ईस्वी वर्ष—

७५-१=७४; ७४×४=२९६+२=२९८

७७७-२९८=४७९ बी० सी०

(२) छठे युग की ३ य म्यूनिशियन मास की घटना का ईस्वी वर्ष—

६-१=५; ५×४=२०+३=२३;

७७७-२३=७५४-१=७५३ बी० सी०

(३) २२४वें युग की पहिले वर्ष की एन्थिस्टिरियन मास की घटना का सन ईस्वी वर्ष—

२२४-१=२२३×४=८९२+१=८९३

८९३-७७६=११७+१=११८ सन ईस्वी।

नोट—१९५वें युग से पहिले घटनाएँ ईस्वी बी० सी० में पड़ेंगी। सन ईस्वी १९६वें युग के पहिले वर्ष से आरम्भ होता है। सन ईस्वी को विक्रमाब्द में परिवर्तन करने के नियम आगे लिखे हैं।

सन ईस्वी।

भारतवर्ष में विदेशियों के संसर्ग से जिन संवतों का प्रचार हुआ है उन सब में सन ईस्वी ही प्रधान है, यद्यपि सन हिजरी का महत्व भी इस दृष्टि से कम नहीं है। सन ईस्वी का प्रचार तो इतना अधिक बढ़ गया है कि घरों में स्त्री और बालक भी इस पञ्चांग की 'तारीख़ें' जान गये हैं, यहां तक कि चिट्ठी पत्री और विवाह शादी आदि निजी कार्य भी इसी तारीख़ के आधार पर किये जाते हैं, विशेष क्या बिना अंगरेज़ी पढ़े लिखे भी ऐसे बहुत से सज्जन मिल जावेंगे जिन्हें अपनी तिथियों का तो पता न होगा, किन्तु सन ईस्वी के पञ्चांग की बहुत सी बातें उन्हें ज्ञात होंगी। सरकारों अदालतों में तो एक मात्र इसी का उपयोग होता है। सारांश यह कि यह सम्वत बिल्कुल योरोपीय होने पर भी इस समय हमारे नैतिक व्योहार का एक अंग बन गया है। यह निस्सन्देह एक चिन्ता की बात है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जूलियस सीज़र ने चान्द्र रोमन वर्ष को सौर सम्वत बनाने के लिये यह व्यवस्था की कि एक वर्ष ३६५¼ दिन का गिना जावे और प्रति चौथे वर्ष, इस ¼ को गणित में लाने के लिये, ३६६ दिन का वर्ष गिना जाता था। इस हिसाब से प्रति वर्ष लगभग ११ मिनट अधिक गिने जाते थे। ईसाई धर्म के प्रचार के साथ साथ योरोप में इस परिशोधित पञ्चांगका उपयोग धार्मिक कामोंमें होने लगा था तथा उनकी संस्कार विधि की आवश्यकता के अनुसार कई संशोधन और किये गये थे। उन्हें शुद्ध पञ्चांग की अधिक आवश्यकता ईस्टर पर्व नियत करने के लिये पड़ती थी, क्योंकि इन्हीं पर्वों के नियत करने के पीछे ईसाई धर्म के और पर्वों का निर्णय होता था। ईस्टर के दिन, ईसाइयों के विश्वास के अनुसार महात्मा ईसा मृत्यु शैय्या से उठ कर स्वर्ग को गये थे; उन्हीं की श्राद्ध-स्मृति का यह दिन है, और ईसाई जनता का धार्मिक पञ्चांग भी इसी दिन से आरम्भ होता है।

जूलियस सीज़र ने २९ दिन १२ घण्टे ४४ मिनिट और २·८७ सैकिण्ड के चान्द्र मास को ३० दिन १० घण्टे २९ मिनिट और ४·१ सैकिण्ड का सौर मास बनाने के लिये निम्न लिखित व्यवस्था की थी, अर्थात् वर्ष में ३६५ दिन गिने जावें, और प्रति चौथे वर्ष फ़र्वरी महीने में शुक्ल प्रतिपदा से छठा दिन दो बार गिना जावे। इस तरह प्रति चौथे वर्ष ३६६ दिन होने पर भी प्रति वर्ष ११ मिनिट १० सैकिण्ड अधिक गिने जाते थे। संवत १६३९ वि० में यह अन्तर लगभग ११ दिन का हो गया था। उसी वर्ष पोप ग्रेगोरी ने इस में संस्कार करके इटली के पञ्चांग में ११ दिन कम कर दिये थे और आगे को इस अन्तर को रोकने के लिये उक्त पोप ग्रेगोरी ने यह नियम भी बना दिया कि ऐसी पूर्ण शताब्दि के फ़र्वरी में ही २९ दिन गिने जावें जो ४०० से पूरी २ बंट सके, और पूर्ण शताब्दियों में नहीं। इस तरह ग्रेगोरी की गणना के अनुसार वर्ष का मान ३६५ दिन ५ घण्टे ४९ मिनिट और १२ सिकण्ड हो गया किन्तु वर्ष का वास्तविक मान ३६५ दिन ५ घण्टे ४८ मिनिट और ४९·२ सिकण्ड है। इस प्रकार यह अन्तर अब भी २२·८ सिकण्ड प्रति वर्ष होता है। दश वर्ष में यह अन्तर ३ मिनिट ४८ सिकण्ड, सौ वर्ष में ३८ मिनिट और हज़ार वर्ष में ६ घण्टे २० मिनिट तक बढ़ जावेगा, एवं ४ हज़ार वर्ष पीछे एक पूर्ण दिन घटाना पड़ेगा। अस्तु; यह ग़लती बहुत कम है।

पोप ग्रेगोरीने उक्त संशोधन करने के समय २ सितम्बर के आगे ११ दिन कम करदिये और ३ सितम्बर के स्थान में १४ सितम्बर लिखे जानेकी आज्ञा दी अतः उस वर्ष २ और १४ सितम्बर के बीच के दिनों का उल्लेख नहीं किया गया था उसी समय से वर्ष भी २५ मार्च के स्थान में १ जनवरी से गिना जाने लगा। यह संशोधित पञ्चांग रोमन कैथोलिक सम्प्रदाय के ईसाई राष्ट्रों ने (तथा डेन्मार्क और हालैन्ड ने भी) संवत १६३९ में ही स्वीकार कर लिया था, किन्तु जर्मनी और स्वेत्सरलैण्ड

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(Switzerland) ने सं० १७५७ में, प्रुसिया ने १८३५ में, इंगलैण्ड ने सं० १८०६ में, आयर्लैण्ड ने सं० १८३६ में और रूस ने १८५६ वि० में उसे स्वीकार किया था। अब भी कहीं कहीं वही पुरानी गणना प्रचलित है जैसे बलकान देश आदि। फ्रांस विप्लव के साथ साथ वहां पञ्चांग में भी विप्लव हुआ था। उक्त विप्लव ५ कन्या सं० १८४६ (२२ सितम्बर सन् १७६२ शनिवार) को हुआ और तब ही वहां ३०। ३० दिनके १२ महीनों का वर्ष चलाया गया जो १६ सितम्बर को समाप्त होता था। किन्तु सौर गणित की समता रखने के लिये ही बाक़ी पांच दिन भी 'पर्व दिन' नाम से वर्ष में स्वीकार किये गये– धर्म (Virtue) प्रज्ञा (Genius) उद्योग (Labour) सुमति (Opinion) और फल (Reward) उनके नाम थे। प्रति चौथ वर्ष और चौथी सदी में ३६६ दिन भी गिने जाने की व्यवस्था की गई थी। परन्तु यह पञ्चाग संवत् १८६२ के दिसम्बर में बन्द हो गया।

सन् ईस्वी महात्मा खीस्ट के जन्म से ईसाई मानते हैं परन्तु वास्तवमें इसकी गिनती उनके जन्म से तीन साल पीछे से होती है। विक्रम की आठवीं सदी से पहिले इसका प्रचार नहीं था क्योंकि छठी शताब्दि में ही डायेनिसियस ऐक्सीजस ने गणित करा कर इसे चलाया था और तबही इसे पिछली घटनाओंसे मिलाया गया था; तबही से वर्ष भी जनवरीसे गिना जाता है।

सन् ईस्वी का आरम्भ ५८ चैत्र शु० शनिवार से होता है। उस वर्ष वैशाख कृ० ६ सोमवार (१५ मार्च) को मेष संक्रमण हुआ था। शक शालिवाहन और विक्रमाब्द से इसका मेल इस तरह होता है।

	विक्रम	शक
	१९८१	१८४६
क्षेपक	–५७	+ ७८
सन ईस्वी	१९२४	१९२४

सन ईस्वी की तारीख़ और चान्द्र तिथियों के मिलाने की व्यवस्था आगे देखिये।

जावा और बाली के सम्वत्।

जावा और बाली आदि पूर्वी द्वीपों में जिन संवतोंका प्रचार है वे भारतवासियों ने ही वहां जाकर बसने के पीछे चलाये थे। वे संव सन् ईस्वी से नये हैं। इन द्वीपोंमें यद्यपि भारतवासी अति प्राचीन काल से आते जाते हैं, परन्तु वर्तमान संवत भारतवासियों के नवीन युग के उपनिवेश स्थापित करने के स्मृति हैं। जावामें विक्रम १३१ से और बाली में १३८ वि० से संवत गिना जाता है। उनका मिलान इस तरह है—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

	जावा			बाली		
	विक्र०	शाके	सन्०	विक्र०	शाके	सन्०
	१९८१	१८४६	१९२४	१९८१	१८४६	१९२४
क्षेमक	-१३१	+४	-७४	-१३८	-३	-८१
	१८५०	१८५०	१८५०	१८४३	१८४३	१८४३

सन् हिजरी।

सन् हिजरी मुसलमानों का राष्ट्रीय और धार्मिक संवत है भारतवर्ष में मुसलमानों की बादशाहत के साथ२ यह संवत आया; परन्तु सन् ईसवी की तरह इसका प्रचार कदापि नहीं बढ़ा था। मुसलमानी धर्म के प्रवर्तक मुहम्मद साहब श्रावण शु०१ गुरुवार (१५ जुलाई सन् ६२२) को शत्रुओंसे त्राण पाने लिये मक्का से मदीना को भागे थे ; तब ही से यह संवत गिना जाता है अर्थात् मुहम्मद साहब के जीवन में ही यह सन प्रचलित हो गया था।

यह सम्वत चान्द्रमान से गिना जाता है, हमारे पञ्चांग की तरह इसका हिसाब सौर गणित से कभी भी नहीं मिलाया जाता। वास्तव में हिजरी वर्ष का पञ्चांग ज्योतिर्विज्ञान के नियमानुसार नहीं बनाया जाता किन्तु सामान्य रीति से चन्द्रोदय के साथ साथ महीना (और वर्ष भी) आरम्भ हो जाता है और दूसरा चन्द्रोदय होने तक एक महीना गिना जाता है। गणित के अनुसार चन्द्रोदय को पहिले से जान लेना शायद धार्मिक दृष्टि से निषिद्ध है क्योंकि कट्टर मुसलमान बादशाह औरंगज़ेब ने तबही तो पञ्चांग बनाने के विरुद्ध आज्ञा निकालीथी; अस्तु।

वर्ष में ३५४ या ३५५ दिन होते हैं; तारीख़ चांद की पहिली, चांद की दूसरी आदि कह कर गिनी जाती हैं। एक बात और भी ध्यान में रखने की है- हम लोग सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय होने तक १ दिन गिनते हैं; अंग्रेज़ लोग रात के १२ बजे से दिन मानते हैं, किन्तु उनका Civil day भी सूर्योदय से ही माना जाता है ; परन्तु मुसलमान सूर्यास्त के साथ साथ अपना दिन बदलते हैं अर्थात् सूर्योदय के पीछे वे लोग एक दिन आगे गिनते हैं। जैसे, हज़रत ने गुरुवार की रात को हिजरत की थी, किन्तु मुसलमाल उसे शुक्रवार के दिन की गई मानते हैं। गुरुवार का नाम इसीलिये 'जुमअ़रात' यानी जुमाअ़ की रात है।

हिजरी वर्ष प्रतिवर्ष ११ दिन से कुछ अधिक आर्य वर्ष और ईसवी सन से आगे बढ़ता है और यह वृद्धि निरन्तर होती रहती है। इस हिसाब से ३२½ महीने में १ महीना, ३५½ वर्ष में एक साल, १२९ वर्ष में ४ वर्ष और १२९० वर्ष में ४० वर्ष तथा ३२२५ वर्ष में १० वर्ष, तथा ३२२५ वर्ष में १०० वर्ष) आगे यह हिजरी सन हिजरत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर जाता है अर्थात आगे बढ़ जाता है-जब सन हिजरी और गणित से ३२५५ होगी और विक्रम ३६०४ होगा तो हिजरी गिना जावेगा ३३२५। इसी हिसाब से ही जब सन हिजरी को केवल १२६० वर्ष बीते थे तो ये लोग १३३० गिन रहे थे। वास्तवमें १३३० हिजरी पड़ता है ६७६ + १३३० = २००६ विक्रम में।

एक बात और भी है। इतिहास में हिजरत की तिथि आश्विन शु० ३ सम्वत् ६७६ (१३ सितम्बर सन् ६२२) लिखी है, परन्तु हिजरी का आरम्भ श्रावण शु० २ सं० ६७६ (१६ जूलाय सन् ६२२ से माना जाता है अस्तु। इस प्रकार के पञ्चाग में एक सुविधा यह अवश्य है कि १६ वर्ष पीछे फिर वही पंचांग बिना किसी फेर फार के काम में लाया जा सकता है।

हिजरी को सन ईस्वी से मिलाने का तरीक़ा यह है-

सन् ईस्वी में से ६२२ घटाओ; बाकी को १.०३०० से गुणा करो; फल में .४६ और जोड़ो; पूर्णांक हिजरी वर्ष होंगे और दशमलवांकों को ३५४ में गुणा करने से तारीख़ भी निकल आवेगी।

उदाहरण—१ जनवरी सन् १५४२, सन् १५४८, सन् १६६०, सन् १६६७, को हिजरी वर्ष और तारीख़ बताओ।

(१)
```
      १५४२
     -६२२
  ---------
      ९२० × १.०३०७
  ---------
      ९४८.२४४
        + .४६
  ---------
वर्ष ९४८ | .७०४ × ३५४
         | ---------
         | २४८.०० दिन
```

(२)
```
      १५४८
     -६२२
  ---------
      ९२६ × १.०३०७
  ---------
      ९५४.४२८०
        + .४६
  ---------
वर्ष ९५४ | .८८८९ × ३५४
         | ---------
         | ३१४.३५२ दिन
```

(३)
```
      १६६०
     -६२२
  ---------
      १०३८ × १.०३०७
  ---------
      १०६९.८६६६
        .४६
  ---------
वर्ष १०७० | .३२६६ × ३५४
          | ---------
          | ११६.८९ दिन
```

(४)
```
      १६६७
     -६२२
  ---------
      १०४५ × १.०३०७
  ---------
      १०७७.०८१५
        .४६
  ---------
वर्ष १०७७ | .५४१५ + ३५४
          | ---------
          | १९१.१६ दिन
```

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन क्रियाओं का अभिप्राय: यह है कि इतने वर्ष और इतने दिन बीतने पर उक्त ईस्वी आरम्भ हुई थी; जैसे (१) १५४२ सन ईस्वी तब शुरू हुई जब सन हिजरी ९४८ के २४८ दिन बीत गये थे। इसी तरह (२) में ९५४ हिजरी के ३१४ दिन बीतने पर १५४८ सन ईस्वी शुरुअ हुई थी। ऐसे ही आगे समझिये।

नीचे अर्बी महीनों के नाम और दिनों की संख्या देते हैं-

क्रम संख्या	महीनों के नाम	दिन	क्रम संख्या	महीनों के नाम	दिन
१	मुहर्रम	३०	७	रज्जब	३०
२	सफ़र	२९	८	शाबान	२९
३	रबीउलअव्वल	३०	९	रमज़ान	३०
४	रबीउस्सानी	२९	१०	शव्वाल	२९
५	जमादीउलअव्वल	३०	११	ज़ीक़ाद	३०
६	जमादीउलआख़िर	२९	१२	ज़िलहज	२९

नोट-(१) रबीउस्सानी को रबी-उल-आख़िर और जमादी-उल-आख़िर को जमादी-उस्सानी भी कहते हैं।

नोट- (२) अगर सन हिजरी को ३० से भाग देने पर २, ५, ७, १०, १३, १६ १८, २१, २४, २६, २९, में से कोई अंक बचे तो उस वर्ष ज़िलहज में ३० दिन होंगे और उस से अगले वर्ष अंग्रेजी सन १ दिन बाद को आरम्भ होगा।

इस सारिणी के अनुसार मुहर्रम से २४८ वां दिन रमज़ानकी १२ तारीख़ होगी और उससे अगले दिन से सन ईसवी १५४२ शुरू होगी। इसी तरह (२) में ३१४ वां दिन ज़ीक़ाद की १९ तारीख़ थी उस से अगले दिन २० तारीख़ से सन १५४८ ई० लगा था। (३) में सन १०७० हिजरी के ११७ वें दिन अर्थात् रबीउल-आख़िर की २८ वी तारीख़ से और (४) में १०७७ हिजरी के १९२वें दिन अर्थात् १५ रज्जब को उक्त ईस्वी का वर्ष आरम्भ होता है। अब हम ऐसे उदाहरण देते हैं जिनमें किसी सन ईस्वी वर्षके किसी महीनेकी किसी तारीख़ से हिजरी सन आदि मिलाये गये हैं।

आगे के उदाहरण ? देखिये—(५) २५ दिसम्बर सन १६६७ की हिजरी सन और तारीख़।

```
        १६६७
       —६२२
      ———————
      १०७५ × १.०३०७
      ———————————————
      ११०८.००२५
        .४६
      ———————————————
वर्ष ११०९ | ४६२५ × ३५४
          |————————————
          | १६३.७२ दिन अर्थात १५ जमादीउलआख़िर
```

मुहर्रम	३०
सफ़र	२९
रबीउलअव्वल	३०
रबीउस्सानी	२९
जमादी०	३०
जमादी०	१५
	१६३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहां १५ जमादीउलआख़िर से आगे २५ दिसम्बर तक के (३६५- ६ = ३५९ दिन) दिन गिने तो सन् ११०९ के जमादीउलआख़िर की १४ तारीख़ पड़ेगी-

१४ जमादीउल आख़िर केशेष दिन		सन् ११०९ का	
३०	रज्जब	३०	मुहर्रम
२९	शाबान	२९	सफ़र
३०	रमज़ान	३०	रबीउलअव्वल
२९	शव्वाल	२९	रबीउस्सानी
३०	ज़ीक़ाद	३०	जमादीउलअव्वल
२९	ज़िलहज	२०	जमादीउलआख़िर
१६१	सन ११०८ के बाकी दिन	१६८	
		१६१	
		३५९	

ये तारीख़ें अंगरेज़ी पंचांग की पुरानी गणना के अनुसार समझनी चाहियें, नई गणनाका हिसाब लगानेके लिये इतना और है कि संस्कारसारिणी संख्या १०-१२ के अनुसार अभीष्ट सन के वर्षों का कालान्तर जान कर इष्ट तिथियों में जोड़ने से हिजरी तारीख़ आती है।

इतिहास में प्रायः १७५२ ईस्वी तक पुरानी गणना का ही व्यौहार किया जाता है और उसके बाद नये पञ्चांगका, इस लिये सन् १७५२ के आगे की जो तारीख़ें हिजरी से मिलाई जायें उनमें इतना विशेष है कि-

" सन ईस्वी में से ६२२ घटा कर १'०३०७ से गुणना और गुणनफल में '४३७०३ जोड़ना तब पहिले के अनुसार गणित करना; जैसे-

(६) ९ अपरैल सन् १९२३ की हिजरी तारीख़ आदि ?

(६) १९२३
-६२२
१३०१ × १'०३०७
१३४०'९४०७
'४३७०३

सन् १३४१ | ३७०७ × ३५४
१३०'९४ दिन

अर्थात् सन् १३४१ हिजरी के १३० वें दिन १२ जमादीउल अव्वल को—१ जनवरी थी। उससे आगे ९ अपरैल तक के ९९ दिन १२ जमादी० से आगे गिने तो २२ शाबान मिला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् हिजरी से सन् ईस्वी बनाना।

सन हिजरी से सन ईसवी बनाने के लिये ऊपर कहे नियम को विलोम-रूप से काम में लाते हैं; जैसे-

"सन हिजरीमें से, पुराने पञ्चांग की तारीख़ सन ईस्वी जानने के लिए '४६, (और नये पञ्चांग की तारीख़ जानने के लिये '४३) घटा कर शेषको १'०३०७ से तीन दशमलव तक भाग दो। लब्धिमें ६२२ जोड़नेसे वर्ष और दशमलवांकको ३६५'२५ से गुणने से महीना और तारीख़ गिनी जावेगी।"

उदाहरण— (७) १ रमजान सन १०७९ की अंगरेज़ी तारीख़ पुराने पञ्चांग से और (९) ८ रज्जब सन १३४१ की अंगरेज़ी तारीख़ नये पञ्चांग से मिलाओ।

(७) यहां १०७९'०
घटाना —'४६

भाग १०७८'५४ ÷ १'०३०७

लब्धि १०४६.४१५
६२२'०

योगफल सन ईसवी १६६८ | '४१५
३६५'२५
५३'४०५०
दिन

अर्थात सन १६६८ के १५३ वें दिन ४ जून १०७९ हिजरी की १ मुहर्रम थी। १ रमजान तक २३६ दिन होते हैं जो उक्त ४ जून से २३ जनवरी सन १६६९ पड़ता है।

इसी प्रकार—(८) १३४१'०
'४३

१३४०'५७ ÷ १'०३०७

१३००'६४६
६२२

सन ईस्वी १९२२ | '६४६
३६५'२५
२३७'४१२५
दिन

सन ईसवी १९२२ के २५७ वें दिन—२५ अगस्त की—१३४१ के मुहर्रम की १ तारीख़ थी। ८ रज्जब तक १८५ दिन उक्त २५ अगस्त से आगे गिनने से २५ फ़रवरी सन १९२२ मिलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिजरी सनका शाका और विक्रम-सम्वतसे मिलान।

हिजरी सन प्रति ३२½ मास में शाका और विक्रम सम्वत से १ चान्द्र मास आगे पड़ता है और ३३ वर्ष में पूरे एक वर्ष आगे। इससे स्पष्ट है कि विक्रम सं० २२४०७ में ये दोनों सम्वत बराबर हो जावेंगे और शाका तो १७६५२ में ही इस के बराबर हो जावेगा। इसके पीछे ये सम्वत पीछे रहने लगेंगे और सन हिजरी आगे बढ़ने लगेगा। इसका कारण हम पीछे लिख आये हैं।

हिजरी महीनों के सम्बन्ध में यह बात भी याद रखने की है कि जब चन्द्र दर्शन प्रतिपदा को होजाता है तो अर्बी महीनों में ३० दिन गिनते हैं और जब चन्द्र दर्शन द्वितीया को होता है तो उन महीनों में २९ दिन होते हैं। अर्थात् द्वितीया उन की पहिली भी होजाती है। अस्तु।

हिजरी और विक्रम संवत मिलाने का नियम यह है— सन हिजरी को ३३ से दो दशमलव तक भाग दो; लब्धि को सन हिजरी में से घटा कर उसमें ६७८ क्षेपक जोड़ो तो पूर्णांकों से विक्रम संवत मिल जावेगा। अगर ६७८ के स्थान में ५४३ क्षेपक दो तो शाका शालिवाहन ज्ञात होगा।

मास जानने के लिये नियम— उक्त गणना में लब्धि को घटा कर जो बचे उसे दो भागों में बांटो – ढाई तक के अंक और बाक़ी अंक। बाक़ी अंकों को फिर उन्हीं बचे अंकों में जोड़ दो जो लब्धि को घटाने से मिले हैं। इस जोड़को ३३ से भाग देकर शेष को फिर २७५ से भाग दिया जावे। लब्धि के अंक को मास-बोधक चक्र से मिला कर देख लो कि मुहर्रम उस वर्ष कब आरम्भ होता है।

मासबोधक चिह्न

अर्बी महीना	विक्रम मास	लब्धि
मुहर्रम १	अ० ढ़ै० प्रा० २	०
,,	ज्येष्ठ प्रा० २	२
,,	वैशाख प्रा० २	४
,,	चैत्र प्रा० २	६
,,	फाल्गुन प्रा० २	८
,,	माघ प्रा० २	१०
,,	पौष प्रा० २	१२
,,	मार्गशीर्ष प्रा० २	१
,,	कार्तिक प्रा० २	३
,,	क्वांर प्रा० २	५
,,	भाद्र० प्रा० २	७
,,	श्रावण प्रा० २	९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नोट-(१) जो अर्बी महीना २९ दिन का होता है वह शुक्ला ३ से चलना आरम्भ होता है और जो ३० का होता है वह शुक्ला २ से गिना जाता है।

नोट-(२) जिस वर्ष विक्रम संवत में अधिक मास पड़जाता है उस वर्ष मास का अन्तर देने के लिये लब्धि के अंकों में एक अधिक गिनना चाहिये। मलमास जानने का नियम यह है-

विक्रम संवत में से १०६० घटा कर शेषको १९ पर भाग दो जो शेष बचे उसके अनुसार महीना इस प्रकार जान लो-

० या ८ बचें तो आषाढ़, ३ बचें तो वैशाख, ५ बचे तो भाद्रपद, ११ बचें तो चैत, १३ बचें तो क्वाँर, १६ बचें तो श्रावण।

उदाहरण-(१) सन १३४० हिजरीका विक्रम सं० निकालो।

(२) सन १०८० हिजरीका विक्रम पञ्चांग ?

(१) १३४० ÷ ३३

४० लब्धि

१३४० - ४०

१३००

६७८

१९७८ विक्रमाब्द

१३०० के दो भाग

१३ | ०० (दहाई तकके अंक)

(बाक़ी शताब्दिके अंक)

१३०० में शताब्दि के अंक

१३ जोड़े

१३१३ ÷ ३३ = २६ शेष

२६ ÷ २·७५ = ६

लेकिन पिछले वर्ष अधिमास था अतः मासांक १० मान लिया और मासबोधक चक्र में १० के आगे भाद्रपद है इस लिये भाद्र० कृ० २ से मुहर्रम १३४० आरम्भ होता है।

इसी तरह (२)

१०८० ÷ ३३ = ३२ लब्धि;

१०८० - ३२ = १०४८ + ६७८ = १७२६ विक्रम संवत;

१० शताब्दि के और ४४ दहाई के अंक;

१०४८ + १०·८० = १०५८·८० ÷ ३३ = २·८० शेष ÷ २·७० = १ लब्धि ज्येष्ठ शुक्ला २ से सन १०८० आरम्भ होता है।

विक्रम संवतको सन हिजरी बनाना।

विक्रम संवत और तिथि को मिलानेके लिये हिजरी सन और तारीख़ बनानेका नियम यह है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संवत में से ६७८ घटाओ; बाकी को ·०३ से गुणो। गुणनफल को उसी बाकी में जोड़ दो। उत्तर में पूर्णांक सन हिजरी समझो। दशमलवांकों को पूर्णांक समझ कर २·७५ से भाग देने से लब्धि के अंक के अनुसार हो महीना चैत्र शु० २ (या ३) से समझो।

उदाहरण–(१) सम्वत १७५२ की चैत्र शुक्ला में कौनसा संवत होगा ?

१७५२ – ६७८ = १०७४ × ·०३ = ३२·१२ + १०७४

= ११०६ सन हिजरी २·७५ | ·२२

८वां महीना अर्थात् शाबान। इससे आगे वैशाख आदि में रमज़ान आदि गिनना चाहिए। अधिक मास का ध्यान रख कर १२ महीने एक दूसरे के सामने लिखने से पञ्चांग तैयार हो जावेगा।

नोट– संवत १७५२ में दो अषाढ़ थे।

और उदाहरण–(२) स० १७२० के दोनों पञ्चांग ? (३) सं० १४६१ के दोनों पञ्चांग ?

(२)
१७२०
–६७८
१०४२ × ·०३

३१·२६ + १०४२ = १०६३ | ·२६
सन हिजरी

२६·०० ÷ २·७५ = ९वां महीना
अर्थात् रमज़ान ३० दिन।

पञ्चांग

३० रमज़ान	चैत्र शुक्ला २
२९ शव्वाल	वैशाख शु० ३
आदि	आदि

पञ्चांग

३० जमादीउल अव्वल	चैत्र शु० २
२९ जमादीउल आख़िर	वैशाख शु० ३
आदि	आदि

(३)
१४६१
–६७८
६८३ × ·०३

२३·४९ + ६८३ = ८०६ और
सन हिजरी

·४९०० ÷ २·७५ = १७

यहां १२ से अधिक हैं अतः १२ कम किए तो ५ रहे इसलिये पांचवां महीना जमादीउल अव्वल चैत्र शुक्ला २ को पड़ा।

इस तरह सन हिजरी और संवत का पूरा २ मिलान हो जाता है। कभी कभी सम्भव है कि एक दिन का अन्तर पड़ जावे, किन्तु हिजरी तारीख़का वार और चान्द्र तिथिका वार जान कर यह अन्तरभी इस तरह दूर किया जासकता है कि हिजरी ता० के वारको मुख्य जानकर उसीके अनुसार तिथिकी कल्पना कर लेना चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिजरी तारीख़ के वार जानना।

नीचे लिखी दो सारिणियों से हिजरी तारीख़ के वार भी जाने जा सकते हैं-

सारिणियों की उपयोग विधि-सन हिजरी को २१० से भाग दो; बाक़ी बचे अंकों को फिर ३० से भाग दो। इस भागफल (लब्धि) और शेषके अंकों को, सारिणी १ में ढूंढ कर सम-सूत्र के संकेताक्षर ढूंढ लो। सारिणी (१)

लब्धि के अंक	संकेताक्षर						
०	ज	ग	न	ला	ल	गु	प्त
१	प्त	न	ज	ग	गु	ला	ल
२	ल	ज	प्त	न	ला	ग	गु
३	गु	प्त	ल	ज	ग	न	ला
४	ला	ल	गु	प्त	न	ज	ग
५	ग	गु	ला	ल	ज	प्त	न
६	न	ला	ग	गु	प्त	ल	ज
शेषांक	१	२†	३	४	५†	६	७†
	९	१०†	११	१२	१३†	१४	१५
	१७	१८†	१९	२०	२१†	२२	२३
	२५	२६†	२७	२८	२९†	+	+
	+	+	१६†	+	८	+	+
	+	+	२४†	+	+	+	+

अपने इस संकेताक्षर को सारिणी संख्या (२) में इष्ट महीने के सामने देख कर और तारीख़ के कोष्ठक में इष्ट तारीख़के अंक देख कर पूर्वोक्त संकेताक्षर के साथ सम्बन्धयी दिन बोधक अंक जान कर उसीके अनुसार वार जानलो।

नोट- जिन शेषांकों पर † चिन्ह हैं उन वर्षों में जिलहिज्ज ३० दिन का होता है।

उदाहरण— (१) १३४१ हिजरी की १५ रबीउस्सानी का वार बताओ।

यहां १३४१ ÷ २१० = ८१ बाकी ÷ ३० = २ लब्धि और २१ बाकी; इनका सम सूत्री संकेताक्षर 'ला' है। दूसरी सारिणी में रबीउस्सानी के सामने के 'ला' अक्षर के नीचे और १५ के सामने सम सूत्राक्षर 'मं' है जो मंगलवार का सूचक है। इसी वर्ष जिलहिज्ज में ३० दिन होने की सूचना भी मिल रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सारिणी संख्या (२)।

महीना	संकेताक्षर						
मुहर्रम	न	ल	ग	प्त	ला	ज	गु
सफ़र	ज	गु	न	ल	ग	प्त	ला
रबीउलअव्वल	ला	ज	गु	न	ल	ग	प्त
रबीउस्सानी	ग	प्त	ला	ज	गु	न	ल
जमादीउलअव्वल	ल	ग	प्त	ला	ज	गु	न
जमादीउस्सानी	ग	न	ल	ग	प्त	ला	ज
रज्जब	ज	गु	न	ल	ग	प्त	ला
शाबान	प्त	ला	ज	गु	न	ल	ग
रमज़ान	ग	प्त	ला	ज	गु	न	ल
शव्वाल	न	ल	ग	प्त	ला	ज	गु
ज़ीक़ाद	गु	न	ल	ग	प्त	ला	ज
जिल्हज्ज	ला	ज	गु	न	ल	ग	प्त

तारीख़					दिन						
१	८	१५	२२	२९	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
२	९	१३	२३	३०	सो	मं	बु	बृ	शु	श	र
३	१०	१७	२४	×	मं	बु	बृ	शु	श	र	सो
४	११	१८	२५	×	बु	बृ	शु	श	र	सो	मं
५	१२	१९	२६	×	बृ	शु	श	र	सो	मं	बु
६	१३	२०	२७	×	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ
७	१४	२१	२८	×	श	र	सो	मं	बु	बृ	शु

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पारसी या ईरानी सम्वत् ।

पारसियों का मूल स्थान वर्तमान ईरान या फ़ारिस है। भारत के इतिहास में ये लोग 'पारस्य', 'पह्लव' और 'पारसीक' नाम से उल्लिखित किये गये हैं। मुसलमान इन्हें इनके धर्म के कारण 'आतिशपरस्त' (अग्निपूजक) एवं 'ज़र्दुस्ती' (ज़र्दुश्त के अनुयायी) भी कहते हैं। भारत में ये लोग, लगभग १२०० वर्ष बीते, अरब मुसलमानों के 'जहादों' से अपने धर्म को बचाने के लिये आ बसे थे। भारत के पश्चिमी तट पर ही इन लोगों का प्रधान उपनिवेश है। इस समय 'पारसी' भारतीय राष्ट्र से किसी प्रकार भी अलग नहीं हैं, किन्तु भारत की राजनीति में उन की गणना प्रधानता से होती है। यद्यपि भारत में इनकी जन संख्या केवल कुछ लाख ही है किन्तु यह गौरव शाली और जाति भुलाई नहीं जा सकती। पार्सियों का प्राचीन इतिहास भी कम महत्वशाली नहीं है; अस्तु।

पार्सी लोगों का पुराना संवत ईरान के प्रथम शासक के समय से गिना जाता है, जो इस समय विक्रम १९८१ में १८९८९३ है*। पारसी महीना तीस दिन का और वर्ष १२ महीने का होता है। पारसी लोग अपने तीसों दिनों को अलग अलग नामों से पुकारते हैं। वर्ष के अन्त में ५ दिन और गिन कर वर्ष में ३६५ दिन गिनते हैं। उन पांचों दिनोंके भी अलग २ नाम हैं। इसके अतिरिक्त प्रति १२० वर्षमें १३ महीनेभी गिने जाते हैं जिस से प्रति वर्ष जो लगभग $\frac{1}{3}$ दिन की सौर वर्ष में कमी रह जाती है वह भी १ महीना हो जाने पर पूरी हो जाती है। इस तरह पारसी पञ्चांग १२० वर्ष का युग मान कर सौर गणना के निकट ही बना रहता है।

ईरान के ज्योतिषी वर्ष का आरम्भ मेष से करते थे, किन्तु सर्व साधारण में ३६५ दिन बीतने पर ही नया वर्ष गिनने लगते थे। सम्वत ६८९ के मेष १ से यज्दीज़र्द ने एक नया ईरानी सम्वत ३६५ दिन का चलाया जिसमें १२० वर्ष पीछे अधिमास नहीं गिना जाता था। इस सम्वत की गणना से प्रति चौथे वर्ष १ दिन बढ़ता था, और जब यह अन्तर अधिक बढ़ गया तो ऋतुओं का मिलान भी इस से न रहा। जहां कहीं इस सम्वत का प्रचार इस समय है वहां यह अन्तर प्रत्यक्ष देखा जाता है। परन्तु राजकीय सुविधा के लिये विक्रम ११३६ में खुरासान के बादशाह सुलतान जलालुद्दीन मलिक ने जलाली सन की स्थापना की तथा पंचांग को इस तरह सौर बनाया कि प्रतिमास तीस दिन का और वर्ष १२ मास या ३६० दिन का माना जावे तथा अन्त के ५ दिन भी पहिले पंचांग की तरह गिने जावें किन्तु प्रति चौथे वर्ष १ दिन और बढ़ाया जावे। इस तरह प्रचलित पार्सी पंचांग अब प्राय सौर पंचांग ही हो गया है। इस समय

*आर्य यज्दी सन् १९०३। परन्तु ग़यासुल्लुग़ातके अनुसार इसकी गणना १८४९९९ होनी चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संवत १९८१ में यज्दीज़र्द सं० १२९२ और जलाली सन ८४५ है।

यद्यपि इस समय पारसी पञ्चांग मेषादि है, किन्तु भारतनिवासी पारसी कहीं २ कन्या से भी इसे गिनते हैं; अस्तु।

पारसी महिने और दिनों के नाम उनके धर्म ग्रन्थों में वर्णित देव-दूतों के नाम पर कल्पित किये गये हैं जो इस प्रकार हैं-

पारसी महीने-फ़र्वरदीन (१) उर्दी वहिश्त (२) खुर्दाद (३) तीर (४) मर्दाद (५) शहरयार (६) मिहर (७) आबान (८) आज़र (९) देय (१० वहमन (११) इस्फ़न्दयार (१२)

चारिणी ३

पारसी दिनों के नाम

तारीख़	नाम	तारीख़	नाम	तारीख़	नाम	अन्त के पांच दिन
१	हुर्मज्द	११	ख़ुरशैद	२१	राम	१ अहनवद
२	बहमन	१२	माह	२२	गोवाद (दा)	२ ओस्तबद
३	उर्दी वहिश्त	१३	तीर	२३	दे दीन(यवादीन)	३ स्पेन्तोबद
४	शहरवर	१४	गोश	२४	दीन	४ वाहक्षत
५	अस्फ़न्दार	१५	दे महर	२५	आज्द	५ वहिश्तो-
६	खुर्दाद	१६	मिहर	२६	अश्ताद	इश्त (वहिश्त-
७	अमरदाद	१७	सरोश	२७	आस्मान	विश)
८	दर आज़र	१८	रश्नः	२८	ज़मीआद	
९	आज़र	१९	फ़र्वरदीन	२९	मारस्फन्द	
१०	आबान	२०	वहराम	३०	अनेरात	

जलाली संवत का प्रचार-संवत ११३६ और उस संवत से आगे की घटनाएँ 'जलाली' सन से गिनी जाती हैं। ११३६ में ८४५ जोड़ने से विक्रम, १०७९ जोड़ने से सन ई० और १००१ जोड़ने से शाका संवत निकल आता है। ईस्वी सन की तारीख़ मिलाने के लिये आगे सौर और ईस्वी तारीख़ों की समानान्तर-गणना-प्रारिणी दी गई है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सारिणी संख्या ४

यज्दज़र्दी संवत- जलाली सन से पहिले यज्दज़र्दी सनमें घटनाऐं गिनी जाती थी। उक्त यज्दज़र्दीमें ६८६ जोड़ने से विक्रमसम्वत, ५५४ जोड़ने से शाकाब्द और ६३२ जोड़ने से सन ईस्वी निकल आता है। इन्हीं अंको को इन सम्वतों में से घटाने में से क्रम से वे ही सम्वत बन जाते हैं।

यज्दज़र्दी सम्वत से पहिले पुराने पारसी सन का व्यौहार था। कहीं कहीं दाऊशी आदि सम्वतों का उल्लेख भी मिलता है परन्तु इसका व्यौहार प्रायः इतिहासातीत काल की घटनाओं के सम्बन्ध में ही देखा जाता है।

आगे पारसी सम्वत की गणना सम्बन्धी सारिणी दी जाती हैं-

सारिणी संख्या ४ के द्वारा पारसी तारीख़ों के वार जाने जा सकते हैं:—

दहाई के अंक						
0	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31	32	33	34
35	36	37	38	39	40	41
42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55
56	57	58	59	60	61	62
63	64	65	66	67	68	69
70	71	72	73	74	75	76
77	78	79	80	81	82	83
84	85	86	87	88	89	90
91	92	93	94	95	96	97
98	99	×	×	×	×	×

सम्वत की शताब्दि और दहाई के अंकों कोसारिणीमेंढूंढ कर एक समसूत्रान्वयी वारके चिन्ह के अक्षर को जानोगे जो दहाई के अंकों के नीचे और सैंकड़े के अंको के सामने मिलेगा फिर इष्ट महीनेके सामने उसी सीधमें उस वारके चिन्ह वाले अक्षर को देख कर उसी तरह तारीख़ों का मेल मिलाओ जैसा सन ईस्वी की तारीख़ का वार जानने में मिलाना बता आये हैं।

सैंकड़े के अंक									वार के चिन्ह
	0	7	14	21	28	35	42	49	बु
	1	8	15	22	29	36	43	50	वृ
	2	9	16	23	30	37	44	51	शु
	3	10	17	24	31	38	45	52	श
	4	11	18	25	32	39	46	53	र
	5	12	19	26	33	40	47	54	सो
	6	13	20	27	34	41	48	55	मं
									बु
									वृ
									शु
									श
									र
									सो
									मं

तारीख़							
	1	2	3	4	5	6	7
	8	9	10	11	12	13	14
	15	16	17	18	19	20	21
	22	23	24	25	26	27	28
	29	30	1	2	3	4	5
महीना	आबान फ०	वह० तीर	मिहर	दैय खुर्दाद+	शहरवर +	आज० उर्दी०+	अस्फ अमर+

उदाहरण- (१) २०३७ के २३ तीर के दिनका वार बताओ?

यहां सैंकड़ा २७ के नीचे और दहाई ३७ के आगे समसूत्राक्षर 'बु' है, इधर तीरके सामने 'बु' के नीचे २, ९, १६, २३ और ३० के अंक हैं जिसका अर्थ यह है कि तीर की इन तारीख़ों को बुधवार था।

(२) १२७८ के ५ आज़र को क्या वार था?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यहां भी उसी तरह शताब्दि के १२ के सामने और ७८ के सम सूत्राक्षर 'र' है, और आज़रके सामने 'र' (इवि०) के नीचे ६, १३,२० और २७ ता० हैं अतः ५ को उससे पहिला शनिवार था।

नोट-इस सारिणी में चिन्हित पांच दिन ३६० दिन के आगेके दिन हैं।

दूसरा नियम-दहाई के अंक, शताब्दि के क्षेपक (सारिणी संख्या ५), तारीख़ के अंक और इष्ट महीने के क्षेपक अंक (सारिणी संख्या ६) जोड़ लो और योग को ७ से भाग दो; जो शेष बचे उस के अनुसार बार चक्र से बार जान लो।

उदाहरण वे ही दोनों

दहाई के अंक	३७	७८
तारीख़ के अंक	२३	५
शताब्दि के क्षेपक	०	५
महीने के क्षेपक	०	३
जोड़	६०	६१

$\frac{६०}{७}$ = ४ शेष = बुधवार; और $\frac{६१}{७}$ = ० शेष = शनिवार

सारिणी ५

शताब्दि के अंक								क्षेपक
०	7	14	21	28	35	42	49	2
1	8	15	22	29	36	43	50	4
2	9	16	23	30	37	44	51	6
3	10	17	24	31	38	45	52	1
4	11	18	25	32	39	46	53	3
5	12	19	26	33	40	47	54	5
6	13	20	27	34	41	48	55	0

पारसी पञ्चांगका सौर पञ्चांगसे मेल-सब पार्सी महीने ३० दिन के होते हैं लेकिन सौर महीने सब ३० दिन के नहीं होते किन्तु कोई २९ दिनका और कोई ३२ दिन का होता है, इसी लिये दोनों पञ्चांगों के मेल के लिये सारिणी (संख्या ७) दी जाती है।

सारिणी (६)

नाम महीना	क्षेपक
आबान, फ़र्वरदीन	१
अमरदाद, स्फ़न्दारमद	२
आज़र, उर्दीबहिश्त	३
शहरवर	४
खुरदाद, देय	५
मिहर	६
तीर, बहमन	०

सारिणी ७

पारसी महीना और तारीख	सौर मास और तिथि
फ़र्वरदीन १-३०	मेष १-३०
उर्दी बहिश्त १-३०	मेष ३१-वृष २९
खुरदाद १-३०	वृष ३०-मिथुन २८
तीर १-२०	मिथुन २९-कर्क २६
अमरदाद १-३०	कर्क २७-सिंह २५
शहरयार १-३०	सिंह २६-कन्या २५
मिहर १-३०	कन्या २५-तुला २२
आबान १-३०	तुला २४-वृश्चिक २३
आज़र १-३०	वृश्चिक २४-धनु २४
देय १-३०	धनु २५-मकर २५
बहमन १-३०	मकर २६-कुम्भ २५
स्फ़न्दयार० १-३०	कुम्भ २६-मीन २५

(बार चक्र)।

क्षेपक	बार
१	रविवार
२	सोमवार
३	मंगलवार
४	बुधवार
५	गुरुवार
६	शुक्रवार
०	शनिवार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नोट-(१) मीन के शेष ५ दिनों में पारसी पञ्चांग के अन्तिम पांच दिन गिने जाते हैं।

नोट-(२) मिथुन में ३२ दिन होते हैं और वृश्चिक और धनु में २९ तथा तुल, मकर, कुम्भ और मीन में ३० दिन होते हैं, बाक़ी महीनों में ३१ होते हैं। चौथे वर्ष कुम्भ में ३१ दिन गिने जाते हैं ये सब बातें यथा स्थान विस्तार से समझाई गई हैं।

चीनी पञ्चांग।

भारतवर्ष के साहित्य में चीनी संवत का व्यौहार नहीं पाया जाता है, किन्तु भारत और चीन का सम्बन्ध इतिहास में एक महत्व-पूर्ण घटना है। समय समय पर अनेक चीनी यात्री भारत में आते रहे थे, और उन्होंने यहां का आंखों देखा वर्णन लिखा था। उन लोगों के वे यात्रा-विवरण इतिहास-वेत्ताओं के लिये बहुमूल्यवान पदार्थ हैं और उन विवरणों में चीनी पञ्चांग का उल्लेख आता है, इसी लिये यहां उसका भी सूक्ष्म वर्णन दिया जाता है।

चीनी संवत-संसारके राष्ट्रोंमें चीन भी बहुत पुराना है और ऐसा ही उसका संवत है- इस समय संवत १९८१ में वे उसे ९६००२४२३ गिनते हैं। उनके मत में इस का आरम्भ उनके प्रथम शासक या 'आदि मनु' से होता है। हमारा विचार है कि यह संवतः उस वर्ष की स्मृति है जब आर्य लोग अपने मूल स्थान तिब्बत से चीन में बसने के लिये गये थे और तत्कालीन आर्य-सम्राट् से भिन्न सम्राट् की कल्पना उन्होंने की थी। चीन को फ़ार्सी इतिहासों में 'ख़ता' (Cathay) भी कहा गया है अतः वहां का संवत 'ख़ताई सन' भी कहा जाता है।

चीन में चान्द्र और सौर दोनों प्रकार का वर्ष माना जाता है- साधारण व्यौहार और धार्मिक पर्वों की गणना के लिए चीनी हमारी तरह चान्द्रमान रखते हैं और राजव्यौहार में सौर वर्ष रक्खा जाता है। वर्षमान ३६५$\frac{1}{4}$ दिन का है, किन्तु वार पांच माने जाते हैं अर्थात् उनके सप्ताह नहीं होता किन्तु पञ्चाह होता है। पाठकों को पारसी लोगों का 'त्रिंशदाह' और रोमन तथा यूनानियों का 'दशाह' भी याद होगा। अस्तु। दिन रातमें १०० 'के' गिने जाते हैं। यह 'के' हमारे पञ्चांगकी घड़ी का $\frac{1}{100}$ भाग अर्थात ३६ पल के बराबर होता है। इस 'के' को फिर १०० भागों में बांटा गया है और फिर $\frac{1}{100}$ के' को १०० भागों में कल्पित करके काल की सूक्ष्म गणना की जाती है किन्तु ईसाई धर्म के प्रचार के साथ २ अब वहां २४ घण्टे और ६० मिनट आदि का प्रचार बढ़ रहा है।

चीनी लोग ६० सौर वर्ष का एक युग मानते हैं। इतने वर्षों में पूरे चान्द्र और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सौर भगण हो जाते हैं। चीन में कई बार, पुराने समय में, नये नये संवत प्रचलित किए जा चुके हैं या पुराने ही संवतों का संस्कार होता रहा है ऐसा सब से पुराना संस्कृत संवत ८८८४०१६७ है। विक्रम से लगभग २००० वर्ष पहिले भी प्याऊ सम्राट् के समय में एक संस्कार किया गया था। अनुमान किया जाता है कि विक्रम से २३०० वर्षपूर्व ६० वर्ष वाले युगका चलन शुरू हुआ था। हम लोगों में भी एक साठ वर्ष वाले 'बार्हस्पत्ययुग' का प्रचार है। नहीं कह सकते कि यह युग-व्यवस्था किसने किस से सीखी या दोनों राष्ट्रों ने अपने अपने युग की कल्पना स्वतंत्र की थी। अस्तु, दूसरी बात अधिक सम्भव है। विक्रम से २००० वर्ष पहिये वहां 'जलूसी सनों' के गिनने की भी प्रथा थी। चीनी भाषा में 'जलूसी सन' को 'निन्हौं' कहते हैं। उसी समय भारतवर्ष में महाराज अशोक भी अपने अभिषेक-वत्सरों का उल्लेख अपने शासनों में करते थे।

तुर्की सन।

मुसलमान इतिहास लिखने वालोंने कहीं कहीं तुर्की सन की तारीख़ें भी लिखी हैं। तुर्की सन कुस्तुनतुनियाका संवत भी कहा जाता है। तुर्क अपने संवत को सृष्टि की आदि से गिनते हैं। यही संवत ग्रीकचर्च वाले ईसाई सम्प्रदाय में भी प्रचलित है। इस समय कुस्तुनतुनिया का सन ७५३१ है।

तुर्कों में एक संवत और भी प्रचलित है जो इस समय ४२१५ है। यह ग़ाजलम बादशाह के समय से गिना जाता है। शायद यह उक्त नगर की स्थापना की स्मृति में चलाया गया था। तुर्क लोग चान्द्र वर्ष और चान्द्र मास के अनुसार अपना पञ्चांग रखते हैं। चन्द्रमा को तुर्की भाषा में 'आई' कहते हैं इस लिये उनके महीनों के नाम के अन्त में 'आई' शब्द रक्खा जाता है। प्रति तीसरे वर्ष वे एक अधिक मास गिनते हैं। इससे सिद्ध होता है कि उनका वर्ष हमारे जैसा ही है। तुर्की महीनों के नाम ये हैं—

(१) आराम आई (२) आई कुन्दी आई (३) ओचुञ्ज आई (४) तरतञ्ज आई (५) मेशख आई (६) अल्तञ्ज आई (७) अपञ्जआई (८) सकरञ्ज आई (९) तोक़रञ्ज आई (१०) ओतोनञ्ज आई (११) ओनीरञ्ज आई (१२) ऊनएकञ्ज आई (१३) सबा आई (या अधिक मासे)।

तुर्की वर्ष कुम्भ की संक्रान्ति में उस समय बदलता है जब चन्द्रमा सूर्य के साथ उसी नक्षत्र में होता है अर्थात् कुम्भ संक्रान्ति में उस महीने की अमावस्या से वे अपना वर्ष गिनते हैं। ये लोग १२ वर्षका एक युग या करनभी मानते हैं। ऐसाही एक ३० वर्ष का क़रन ईरानी भी गिनते हैं। वे लोग वर्ष को 'ईल' या योल' कहते हैं। हम समझते हैं कि अंगरेज़ी शब्द 'इयर' (year) का मूल यही शब्द है क्योंकि 'र' के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान पर 'ल' बोला जाना भाषा-तत्व के नियमानुसार साधारण शैली है। अस्तु; युगके १२ वर्षों के नाम नीचे दिये जाते हैं—

	तुर्की नाम	अर्थ	वैज्ञानिक नाम
(१)	सचकान ईल	(चूहे का वर्ष)	मूषक
(२)	ऊद ईल	(गाय का वर्ष)	वृष
(३)	पारस ईल	(चीते का वर्ष)	सिंह
(४)	तोपकान ईल	(खरगोश का वर्ष)	शश
(५)	लोय ईल	(मगर का वर्ष)	मकर
(६)	पीलान ईल	(सांप का वर्ष)	वृश्चिक
(७)	यूनन ईल	(घोड़े का वर्ष)	धनु
(७)	तूई ईल	(भैंस का वर्ष)	मेष
(९)	बीची ईल	(बन्दर का वर्ष)	कपि
(१०)	तख़ाकू ईल	(मुर्ग़ का वर्ष)	कुक्कुट
(११)	ईत ईल	(कुत्ते का वर्ष)	यम
(१२)	तंगूज़ ईल	(वराह का वर्ष)	वराह

नोट-पण्डित खुन्नीलाल शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'नक्षत्र सूची' में इन नामों को चीनियों में प्रचलित होना लिखा है, तथा वह इन्हें १२ राशियों का नाम बताते हैं। उनका यह भी मत है कि तातार, तुर्क, मंगोल, तिब्बत, जापान और कोरिया आदि देशों में भी १२ राशियों के ये ही नाम प्रचलित हैं; अस्तु।

वर्ष का नाम इस तरह निश्चय किया जाता है कि पहिले संवत में ९ जोड़ते हैं फिर उसे १२ से भाग देते हैं, पीछे जो बचता है उसी अंक के अनुसार उस वर्ष का नाम रखते हैं जैसे १ बाक़ी रहने पर सचकान ईल, २ रहने पर ऊद ईल आदि।

हिजरी से पीछे के सन।

सूर सन, बंगलासन, सन फ़सली, धीर सन अमली आदि ऐसे सन हैं जो हिजरी सन के आधार पर चलाये गये हैं, या उक्त हिजरी के ही संस्कार दिये गये हैं। ये सब सन प्रान्तीय हैं। मुसलमान शासकोंने, जान पड़ताहै, हिजरीकी दुर्बोध व्यवस्था को देख भाल कर ही, इन्हें प्रचलित किया होगा। इतिहास ग्रन्थों में, विशेष कर भारतीय इतिहासों में, इन सम्वतों का उल्लेख देखा जाता है। वस्तव में ये सन मुसलमानी राज्य के अवशेष चिन्ह है जो धीरे २ लुप्त हो रहे हैं।

सूरसन-इसका दूसरा नाम शाहू का सन भी है। सम्वत् १४०० विक्रमसे इसका आरम्भ होता है। वर्ष परिवर्तन ७ या ८ जून को जब सूर्य मृगशिरा में जाते हैं, होता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। उस समय सन हिजरी ३४५ सन् ईस्वी १३४४ और शाका १२६५ था। अब सूर सन् ५८१ है। बम्बई और महाराष्ट्र प्रान्त में, जहां इसका कुछ प्रचार अब भी है, इस सम्वत का फ़सली सन से केवल ६ वर्ष का अन्तर है। नहीं मालूम कि छत्रपति श्री शाहूका नाम इस सनके साथ क्यों जोड़ा जाता है। शायद यह सम्वत विजयनगर का वह सम्वत् हो जो उक्त विशाल और विस्तृत हिन्दू राज्यकी प्रतिष्ठाके समय तत्कालीन हिजरी सम्वत के स्थान में चलाया गया हो।

बंगला सन्—यह बंगालका प्रान्तीय सम्वत है। यहभी सौर है। इसका आरम्भ मेष की संक्रान्तिसे, १४ अपरैलसे होता है। इस समय बंगला सन १३४१ है। संक्रान्तिको इस का महीना बदल जाता है। उत्तर भारतके सौर पंचांगसे जो कुछ इसकी भिन्नता है वह सौर पंचांग के प्रसंग पर समझाई जावेगी। मुसलमान ज्योतिषियोंका मत है कि इस बंगला सन को बादशाह अकबर ने सन हिजरी में एक कम करके स्थापित किया था। किन्तु उनका यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि अकबर के सिंहासनासीन होने से पहिले (सम्वत १६०३ विक्रम से पहिले) के भी ऐसे लेख मिलेहैं जिनमें उक्त बंगला सन का उल्लेख है। बंगाल में एक प्रवाद ऐसा भी है कि बिहार के शासक अलाउद्दीन हुसेन शाह ने देशी संवत और महीनों को हिजरी सन और महीनों से मिलाये रखने के लिये इस सन की स्थापना की थी—उसने सम्वत १५५४ विक्रम के निकट तत्कालीन हिजरी ९०३ को फ़सली सन मान कर आगे को अधिमास की रीति के अनुसार गणना करके सौर गणित प्रचरित की। परन्तु फिर भी ये दोनों सन् साथ न रह सके, कारण स्पष्ट है। इस समय इन दोनों सनों का अन्तर ११ वर्ष और आठ मास है तथा आगे भी साढ़े दस दिन प्रति वर्ष के हिसाब से यह बढ़ता रहैगा।

बंगला सन में ६५० जोड़ने से, या विक्रम में इतने घटाने से, विक्रम और बंगला सन कम से निकल आते हैं, और उक्त बंगला सन में ५९३ जोड़ने से या सन ईस्वी में से इतने घटाने से सन ईस्वी और बंगला कम से हो जाते हैं, जैसे—

विक्रम सम्वत्	सन ईस्वी
१९८१	१९२४
क्षेपक—६५०	—५९३
बंगला सन १३३१	१३३१
क्षेपक + ६५०	+ ५९३
विक्रम १९८१	ईस्वी १९२४

यहां इतना विशेष है कि अगर १७ धनु से ३० मीन तक की गणना करनी हो तो सन ईस्वी में ५९२ ही घटाने या बंगला सन में जोड़ने चाहियें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विलायती सन और अमली सन—ये दोनों सन एक ही जान पड़ते हैं क्यों कि दोनों की गणना एक है। यह भी एक प्रकार का फ़स्ली सन जान पड़ता है जिस के हिसाब से मुसलमान शासक भूकर लेते रहे होंगे। 'विलायती सन' का अर्थ है 'विदेशी संवत' और 'अमली सन' राजकीय व्यौहार के संवत को कहते हैं, इस से अनुमान होता है कि एक ही सन को देश भेद से दो प्रकार से बोलते हैं। इस की गणना कन्या संक्रान्ति से (१६/१७ सितम्बर) की जाती है। मिलान करने के लिये वेही अंक जोड़ने घटाने पड़ते हैं जो बंगला सन में लिख आये हैं। यह संवत सौर है और इसके महीने भी सौर हैं, किन्तु यहां इतना विशेष है कि अगर विक्रम सौर का मिलान मेष से सिंह तक ही करना हो तो ६४६ घटाने या जोड़ने चाहियें।

फ़स्ली सन— आईन-इ-अकबरी में अबुलफ़ज़ल ने लिखा है कि फ़स्ली साल सौर वर्ष है और इसका सम्बन्ध ऋतु एवं उपज से है। अकबर के समय में हिजरी सन राजकीय सन था; किन्तु वह वर्ष चान्द्र था और ऋतुओं तथा फ़स्ल का हिसाब उससे ठीक नहीं रहता था और भूमि कर वसूल करने में भी सुविधा नहीं होती थी। अकबर ने इसी सुविधा के लिये सौर हिजरी का प्रचार किया और उस नये संवत का नाम 'फ़स्ली' रक्खा। अकबर के दीवान राजा टोडरमल और दूसरे माल विभाग के अधिकारियों ने इस संवत को अपनी सुविधा की दृष्टि से तुरन्त स्वीकार कर लिया और वही फ़स्ली सन आज भी सरकारी काग़ज़ पत्रोंमें (रेवेन्यू विभाग में) प्रचलित है।

अकबर का राज्याभिषेक २ रबीउस्सानी सन ९६३ हिजरी तदनु वैशाख शु० ५ संवत १६१२, १४ फ़र्वरी सन १५५६, शुक्रवार को हुआ था, और अपने अभिषेक से कुछ समय पीछे उसने फ़स्ली सन चलाया था किन्तु उसने इसे प्रचलित करते समय आज्ञा दी थी कि यह सन उसके सिंहासनासीन होनेसे भी कुछ पहिलेसे गिना जावे। तबसे ही यह फ़सली वर्ष उसी तरह चला आ रहा है। आज फ़सली सन १३३२ है और हिजरी १३४३। यद्यपि अकबर ने दोनों संवत १ मुहर्रम ९६२ हिजरी (माघ शु० ३ संवत १६११) से साथ २ गिने थे, परन्तु जहांगीर के समय में ही यह अन्तर २ साल का और औरंगज़ेब के शासन के आरम्भमें ३ वर्ष का हो गया था। औरंगज़ेबकी मृत्यु की तारीखें मीर मुहम्मद जाफ़िर रूमीने "ज़हूर फ़स्ली" और "ज़ही हिजरी" लिखी हैं*। इन दोनों में ४ का अन्तर है। मुहम्मद शाह के समय में यही

*फ़ारसी विद्वानों में प्रचलित अबजद की गणना प्रणाली के हिसाब से इन शब्दों के अक्षर और अंक इस तरह हैं—

ज़ोय = ९००, हे (दोचश्मी) = ५ ज़ोय = ९००, हे (दो चश्मी) = ५
वाव = ६, रे = २००; कुल १११९ (फ़स्ली) ये = १०, रे = २०० कुल १११५ हिजरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। उस समय सन हिजरी ३४५ सन् ईस्वी १३४४ और शाका १२६५ था। अब सूर सन् ५८१ है। बम्बई और महाराष्ट्र प्रान्त में, जहां इसका कुछ प्रचार अब भी है, इस सम्वत का फ़सली सन से केवल ६ वर्ष का अन्तर है। नहीं मालूम कि छत्रपति श्री शाहूका नाम इस सनके साथ क्यों जोड़ा जाता है। शायद यह सम्वत विजयनगर का वह सम्वत् हो जो उक्त विशाल और विस्तृत हिन्दू राज्यकी प्रतिष्ठाके समय तत्कालीन हिजरी सम्वत के स्थान में चलाया गया हो।

बंगला सन्—यह बंगालका प्रान्तीय सम्वत है। यहभी सौर है। इसका आरम्भ मेष की संक्रान्तिसे, १४ अपरैलसे होता है। इस समय बंगला सन १३४१ है। संक्रान्तिको इस का महीना बदल जाता है। उत्तर भारतके सौर पंचांगसे जो कुछ इसकी भिन्नता है वह सौर पंचांग के प्रसंग पर समझाई जावेगी। मुसलमान ज्योतिषियोंका मत है कि इस बंगला सन को बादशाह अकबर ने सन हिजरी में एक कम करके स्थापित किया था। किन्तु उनका यह कहना ठीक नहीं है क्योंकि अकबर के सिंहासनासीन होने से पहिले (सम्वत १६०३ विक्रम से पहिले) के भी ऐसे लेख मिलेहैं जिनमें उक्त बंगला सन का उल्लेख है। बंगाल में एक प्रवाद ऐसा भी है कि बिहार के शासक अलाउद्दीन हुसेन शाह ने देशी संवत और महीनों को हिजरी सन और महीनों से मिलाये रखने के लिये इस सन की स्थापना की थी—उसने सम्वत १५५४ विक्रम के निकट तत्कालीन हिजरी ९०३ को फ़सली सन मान कर आगे को अधिमास की रीति के अनुसार गणना करके सौर गणित प्रचरित की। परन्तु फिर भी ये दोनों सन् साथ न रह सके, कारण स्पष्ट है। इस समय इन दोनों सनों का अन्तर ११ वर्ष और आठ मास है तथा आगे भी साढ़े दस दिन प्रति वर्ष के हिसाब से यह बढ़ता रहैगा।

बंगला सन में ६५० जोड़ने से, या विक्रम में इतने घटाने से, विक्रम और बंगला सन कम से निकल आते हैं, और उक्त बंगला सन में ५९३ जोड़ने से या सन ईस्वी में से इतने घटाने से सन ईस्वी और बंगला कम से हो जाते हैं, जैसे—

विक्रम सम्वत्	सन ईस्वी
१९८१	१९२४
क्षेपक—६५०	—५९३
बंगला सन १३३१	१३३१
क्षेपक + ६५०	+ ५९३
विक्रम १९८१	ईस्वी १९२४

यहां इतना विशेष है कि अगर १७ धनु से ३० मीन तक की गणना करनी हो तो सन ईस्वी में ५९२ ही घटाने या बंगला सन में जोड़ने चाहियें।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विलायती सन और अमली सन—ये दोनों सन एक ही जान पड़ते हैं क्यों कि दोनों की गणना एक है। यह भी एक प्रकार का फ़स्ली सन जान पड़ता है जिस के हिसाब से मुसलमान शासक भूकर लेते रहे होंगे। 'विलायती सन' का अर्थ है 'विदेशी संवत' और 'अमली सन' राजकीय व्यौहार के संवत को कहते हैं, इस से अनुमान होता है कि एक ही सन को देश भेद से दो प्रकार से बोलते हैं। इस की गणना कन्या संक्रान्ति से (१६/१७ सितम्बर) की जाती है। मिलान करने के लिये वेही अंक जोड़ने घटाने पड़ते हैं जो बंगला सन में लिख आये हैं। यह संवत सौर है और इसके महीने भी सौर हैं, किन्तु यहां इतना विशेष है कि अगर विक्रम सौर का मिलान मेष से सिंह तक ही करना हो तो ६४६ घटाने या जोड़ने चाहियें।

फ़स्ली सन— आईन-इ-अकबरी में अबुलफ़ज़ल ने लिखा है कि फ़स्ली साल सौर वर्ष है और इसका सम्बन्ध ऋतु एवं उपज से है। अकबर के समय में हिजरी सन राजकीय सन था; किन्तु वह वर्ष चान्द्र था और ऋतुओं तथा फ़स्ल का हिसाब उससे ठीक नहीं रहता था और भूमि कर वसूल करने में भी सुविधा नहीं होती थी। अकबर ने इसी सुविधा के लिये सौर हिजरी का प्रचार किया और उस नये संवत का नाम 'फ़स्ली' रक्खा। अकबर के दीवान राजा टोडरमल और दूसरे माल विभाग के अधिकारियों ने इस संवत को अपनी सुविधा की दृष्टि से तुरन्त स्वीकार कर लिया और वही फ़स्ली सन आज भी सरकारी काग़ज़ पत्रोंमें (रेवेन्यू विभाग में) प्रचलित है।

अकबर का राज्याभिषेक २ रबीउस्सानी सन ९६३ हिजरी तदनु वैशाख शु० ५ संवत १६१२, १४ फ़र्वरी सन १५५६, शुक्रवार को हुआ था, और अपने अभिषेक से कुछ समय पीछे उसने फ़स्ली सन चलाया था किन्तु उसने इसे प्रचलित करते समय आज्ञा दी थी कि यह सन उसके सिंहासनासीन होनेसे भी कुछ पहिलेसे गिना जावे। तबसे ही यह फ़सली वर्ष उसी तरह चला आ रहा है। आज फ़सली सन १३३२ है और हिजरी १३४३। यद्यपि अकबर ने दोनों संवत १ मुहर्रम ९६२ हिजरी (माघ शु० ३ संवत १६११) से साथ २ गिने थे, परन्तु जहांगीर के समय में ही यह अन्तर २ साल का और औरंगज़ेब के शासन के आरम्भमें ३ वर्ष का हो गया था। औरंगज़ेबकी मृत्यु की तारीखें मीर मुहम्मद जाफ़िर रूमीने "ज़हूर फ़स्ली" और "ज़ही हिजरी" लिखी हैं*। इन दोनों में ४ का अन्तर है। मुहम्मद शाह के समय में यही

*फ़ारसी विद्वानों में प्रचलित अबजद की गणना प्रणाली के हिसाब से इन शब्दों के अक्षर और अंक इस तरह हैं—

ज़ोय = ९००, हे (दोचश्मी) = ५ ज़ोय = ९००, हे (दो चश्मी) = ५
वाव = ६, रे = २००; कुल १११९ (फ़स्ली) ये = १०, रे = २०० कुल १११५ हिजरी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अन्तर ५ था और अब तो यह ११ वर्ष का है।

अकबर के पीछे ज्यों ज्यों मुग़ल राज्य बढ़ता गया त्यों २ यह संवत भी फैलता गया क्योंकि जब ८० वर्ष पीछे शाहजहांने दक्षिण के कुछ प्रान्त अपने राज्य में मिला लिये तो वहां भी यह सन पहुंच गया। परन्तु वहां कुछ भेद से यह सन गिना जाता है। इसका कारण यह है कि सवत १६९२ में उक्त प्रान्त विजय किये गये थे, और उस समय हिजरी सन १०४४ था, अतः इस १०४४ में से ही ८० वर्ष घटा कर सन ९६४ से वहां फ़स्ली सन गिनना आरम्भ कर दिया था।

एक भेद फ़स्ली सन के विषय में और भी है-मद्रास में कर्क से (१६ या १७ जूलाई से) और बम्बई में मृगशिरा नक्षत्र में सूर्य प्रवेश करने से (८ या ९ जून से) तथा शेष भारतवर्ष में चान्द्र कार्तिक पौर्णमा के पीछे से इसका आरम्भ माना जाता है, किन्तु अंगरेज़ी सरकार इसे एक जुलाई से ही बदल देती है।

कहीं २ फ़स्ली सन के महीने चैत्रादि के नाम के चान्द्र गणना के अनुसार गिने जाते हैं और कहीं २ मुहर्रम आदि अर्बी महीने गिने जाते हैं किन्तु अधिमास द्वारा संस्कार सर्वत्र किया जाता जाता है जिससे गणना सदा सौर ही रहती है।

मिलाने का नियम- जनवरी से जून तक का फ़स्ली और ईस्वी सन का अन्तर ५९७ है और बाक़ी महीनोंका ५९८। परन्तु बंगला-फ़स्ली और दक्षिण के फ़स्ली सन का अन्तर उसी मासभेद से ५१४-५ तथा ५१२-३ है अर्थात् सन ईस्वी में से इतने घटाने से और तत्तदेशीय फ़स्ली सन में इतने जोड़ने से क्रम से फ़स्ली और सन ईस्वी बन जाते हैं।

इलाही सन—इस सन को भी अकबर ने चलाया था। अब्बुलफ़ज़ल ने लिखा है कि उस समय की प्रचलित तारीख़ों की गड़बड़ के दूर करने के लिये अकबर ने यह सन चलाया था। कोई कोई यह भी कहते हैं कि उसमें अपने 'इलाही' नामक नये धर्म की स्थापना के साथ साथ नया धार्मिक संवत भी चलाया था; अस्तु। यह सौर सम्वत है। महीनों के नाम पार्सी हैं और दिनों की गणना संक्रान्ति के अनुसार है; जैसे—

इलाही महीने			इलाही महीने		
पारसी महीने	संक्रान्ति	दिन	पारसी नाम	संक्रान्ति	दिन
फ़र्वरदीन	मेष	३१	मिहर	तुला	३०
उर्दी बहिश्त	वृष	३१	आबान	वृश्चिक	३०
खुर्दाद	मिथुन	३२	आज़र	धनु	२९
तीर	कर्क	३१	देय	मकर	२९
अमरदाद	सिंह	३१	बहमन	कुम्भ	३०
शहरयार	कन्या	३१	अस्फ़न्दयार	मीन	३०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अकबर ने शासन के ३० वें वर्ष में (सं० १६४२ वि०) इलाही सन मेष की संक्रान्तिसे चलाया था। इस समय इलाही सन ३३६ है। इलाही सनमें १६४२ जोड़ने से विक्रम और विक्रम में से ५६-५७ घटाने से सन् ईस्वी निकल आता है।

जुलूसी सन।

जिन सम्वतों का उल्लेख ऊपर हो चुका है उनके अतिरिक्त कुछ और संवत भी फ़ारसी इतिहास के ग्रन्थों में मिलते हैं, जैसे नौरोज़ (हिजरी, पारसी या और किसी संवत का प्रथम दिन) क़मरी साल (चान्द्र वर्ष) जलूसी आदि। इन सब में केवल जुलूसी सनका विवरण देना ही यहां काफ़ी होगा, क्योंकि बाक़ी संवत उन्हीं संवतों के कोई न कोई विकृत रूप हैं जिनका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है।

कुछ मुसलमान बादशाहों ने अपने राज्याभिषेक के समय से संवत जारी किये थे और उन सम्वतों का ही व्यौहार उनके शासनभर राजकीय कागज़ पत्रोंमें होता था यहां तक कि उनका इतिहास भी उन्हीं संवतों में लिखा गया है। सिक्कों पर वह सन खुदता था और सर्व साधारणभी उस समयकी घटनाएँ उसी संवतके द्वारा लिखते पढ़ते थे। यही सन 'सन जुलूसी' कहलाता था। परन्तु जब कोई नया शासक गद्दी पर बैठता था तो पुराना सन जुलूसी बन्द हो जाता था और नया आरम्भ होता था। ऐसे अभिषेक संवत आर्य और चीनी राजा भी गिनते थे, परन्तु वे उसकी गणना सौर करते थे और मुसलमान बादशाह हिजरी के अनुसार करते थे। इससे स्पष्ट है कि हिजरी सन को विक्रम संवत या सन ईस्वी से मिलाने के जो नियम हम ऊपर दे आये हैं उनके अनुसार वे जलूसी सनभी वि० या सन ई० से मिलाये जा सकते है। तो भी सुविधाके लिये कुछ जुलूसी सन विक्रम और सन ईस्वी समेत दिखाते हैं।

आदिलशाही सन।

बीजापुर भारत के मुसलमानी इतिहास काल में एक प्रसिद्ध शिया सम्प्रदाय का मुसलमानी राज्य था। इसका संस्थापक यूसुफ़ आदिलशाह था, किन्तु आदिलशाही सन का प्रवर्तक ४ र्थ शासक था जिसका नाम अली आदिल शाह था। उसने सम्वत १३१३ में यह सन चलाया। इसकी गणना सौर मेषादि थी। बीजापुर राज्य के नाश के साथ साथ संवत १७५८ में यह संवत भी बन्द हो गया। यह संवत बिलकुल एकदेशीय था।

मुग़ल बादशाहों के जुलूसी सन।

यद्यपि मुग़ल राज्य की प्रतिष्ठापना बाबर ने की थी, किन्तु यह जुलूसी सन की प्रथा चलाई थी उसके पोते अकबर ने। सन जुलूस का प्रथम उत्सव जिस वर्ष होता था वही पहिला जलूसी वर्ष गिना जाता था। परन्तु कभी कभी यह वर्ष दस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिन से नहीं भी गिनते थे जिस दिन वास्तविक गद्दीनशीनी होती थी। वास्तव में मुसलमान बादशाह अपने शासन का १ वर्ष समाप्त करके ही जुलूसी वर्ष मानते थे ऐसा इतिहास से प्रकट होता है, किन्तु गणना के लिये हमारी सम्मति में वही ठीक है जो हम ऊपर लिख आये हैं; अस्तु।

सारिणी (८)

मुग़ल बादशाहों के जुलूसी सनों की सूची।

अनुक्रम संख्या	बादशाह का नाम	जुलूसी सन के आरम्भ होनेकी तारीख़				
		हिजरी	विक्रम	ईस्वी	इलाही	
१	अकबर	२८ रबीउस्सानी सन ९६३	चैत्र कृ० ३० सं० १६१२	११ मार्च सन १५५६	१ फ़र्वरदीन सन १	
२	जहांगीर	११ ज़ीक़ाद सन १०१४	प्रथम चैत्र शु० १३ सं० १६६३	११ मार्च सन १६०६	१ फ़र्वरदीन सन ५१	
३	शाहजहां	जमादी उस्सानी सन १०३७	माघ शु० २ सं० १६८४	२८ जनवरी सन १६२८	जलूसी वर्ष ३२	
४	औरंगज़ेब आलमगीर (१)	१ रमज़ान सन १०७०	प्रथम ज्येष्ठ शु. २ सं १७१७	१ मई सन १६६०	५१	
५	बहादुर शाह शाह आलम (१)	१ ज़िलहिज्ज सन १११८	फागुन शुदि ३ संवत १७६३	२३ फ़रवरी सन १७०७	६	जुलूसी वर्ष
६	जहांदार शाह	१४ रबीउलअव्वल सन ११२४	चैत्रशु० १५ सं० १७६९	१० अप्रेल सन १७१२	१	
७	फ़र्रुख़सियर	१ रबीउल अव्वल सन ११२५	चैत्र शु० २ सं० १७७०	१७ मार्च सन १७१३	७	
८	रफ़ीअ़ुद्दर जात	६ रबी उस्सानी सन ११३१	फागुन शु० १० सं० १७७५	१७ फ़र्वरी सन १७१९	१	
९	रफ़ीअ़ुद्दौला	२ रज्जब सन ११३१	आषाढ़ बदि ७ सं० १७७६	२९ मई सन १७१९	१	
१०	मुहम्मदशाह	६ रबीउस्सानी सन ११३१	फागुन शुदि १० सं० १७५६	१८ फ़र्वरी सन १९१९	३१	
११	अहमदशाह	1 जमादीउलअव्वल 1161	वैशाख शु० 3 सं० 1805	19 अप्रल सन 1748	७	
१२	आलमगीर (२य)	10 शाबान सन सन 1167	ज्येष्ठ शु० 12 सं० 1812	2 जून सन 1754	६	

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रम०	नाम	जुलूसी			जुलूसी वर्षों की संख्या
		हिजरी	विक्रम	सन ईस्वी	
१३	शाहजहां (२ य)	८ रबीउस्सानी सन ११७३	अगहन शु० १० संवत १८१६	२९ नवम्बर सन १७५९	१
१४	शाहआलम दूसरा	४ जमादीउल-अव्वल ११७३	पौष शु० ६ सं० १८१६	२५ दिसम्बर सन १७५९	४९
१५	अकबर (दूसरा)	७ रमज़ान सन १२२१	कार्तिक शु० ९ १८६३	१९ नवम्बर सन १८०६	३२
१६	बहादुरशाह (२य)	२९ जमादीउस्सानी	क्वार शु० १ सं० १८९४	३० सितम्बर सन १८३७	२१

नोट- (१) अकबर २ रबीउस्सानी सन् ९६३ (वि० १६१२ की फाल्गुन शु० ५ तदनुसार १४ फ़रवरी सन् १५५६) को गद्दी पर बैठा था, किन्तु उस समय जुलूसी वर्ष गिनने की प्रथा नहीं पड़ी थी। उसने अपने २९ वें वर्ष में इलाही सन चलाया और उसी दिन से उसने जुलूसी वर्ष भी गिनना शुरु किया, उसी समय पिछले जुलूसी वर्षों की तारीख़ें हिसाब लगा कर लिखी गई थीं। अकबर की मृत्यु ८ जमादीउस्सानी १०१४ हिजरी (कार्तिक शु० ११ सम्वत् १६६२ तदनुसार १२ अक्टूबर सन १६०५) ११ जमादी० उस्सानी (कार्तिक शु० १४ तदनु० १५ अक्टूबर) और २० जमादी उस्सानी (अगहन बदी ७, २४ अक्टूबर) में से किसी तारीख़ को हुई थी। ठीक तारीख़ का निश्चय नहीं। अकबर के कुल जुलूसी वर्ष ५० हैं।

(२) जहांगीर भी अपने पिताके जुलूसी वर्षको ही अपना जुलूसी वर्ष मानता रहा। उसकी मृत्यु २८ सफ़र सन १०३७ (कार्तिक कृ० ३० सम्वत १६८४ तदनुसार २८ अक्टूबर सन० १६२७) को हुई। उसके कुल जुलूसी वर्ष २२ हैं।

(३) शाहजहां ९ जमादीउस्सानी सन १०३७ (माघ शु० १० सं० १६८४ तदनुसार ४ फ़रवरी सन १६२८ को राज्याधिकारी हुआ। उसने शासन में इलाही सन का प्रचार राज काज में बन्द कर दिया था। १७ रमज़ान सन १०६८ (आषाढ़ कृ० ४ सम्वत १७१५ तदनुसार ९ जून सन १६५८ को औरंगज़ेबने इसे क़ैद किया था, और २६ रज्जब सन १०७६ माघ बदी १३ सं० १७२२ तदनुसार २२ जनवरी सन १६६६ में वह मरा।

(४) बाप को क़ैद करने के पीछे १ ज़ीकाद सन १०६८ हि० (श्रावण शु० ३ सम्वत १७१५ तदनुसार २३ जूलाई सन १६५८ ई०) को औरंगज़ेब राजगद्दी का अधिकारी हुआ था; किन्तु लगभग एक वर्ष पीछे उसने आलमगीरका ख़िताब धारण करके २४ रमज़ान सन १०६९ हिजरी (आषाढ़ कृ० ११ सं० १७१६ तदनु० ५ जून सन १६५९) को अभिषेकोत्सव मनाया और अपना सिक्का और खुतबा जारी किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परन्तु अगले वर्षसे ही १ रमज़ानसे जुलूसी वर्ष मनाया जाने लगा। हमने इसी हिसाब से १ रमज़ान लिखा है। उनके जुलूसी वर्ष की गिनती सन १०६८ से ही होती है। औरंगज़ेब की मृत्यु २८ ज़ीकाद सन ११११८ (फागुन बदी १४ सम्वत १७६३ तदनुसार २१ फरवरी १७०७ को हुई।

(५) बहादुरशाह को यद्यपि राजगद्दी अपने भाइयों से युद्ध करने के पीछे १८ रबीउल अव्वल सन ११०९ (आषाढ़ बदी ४ सं० १७१४ तदनु० ८ जून सन १७०७ को मिली थी, किन्तु उसने अपना दूसरा जुलूस १ जिलहिज्ज को ही मनाया था इस लिये वहीं से लिखा है। देहान्त २१ मुहर्रम सन ११२४ (फागुन बदी ७ सं० १७६८ तदनुसार १८ फ़रवरी सन १७२२) को हुआ।

(६) जहांदार १४ रबीउलअव्वल को गद्दी पर अधिकार प्राप्त कर सका था, किन्तु ९ महीने पीछे ही २३ जिलहिज्ज (माघ कृ० १० जनवरी सन् १७१३) को मार डाला गया।

(७) फ़र्रुख़सियर अपना जुलूस १ रबीउलअव्वल को ही मनाता था। वह ८ रबीउस्सानी सन ११३१ (फागुन शु० ६ सं० १७७५ तदनु० १७ फ़रवरी सन १७१९, को क़ैद करके अंधा किया गया और ३ महीने पीछे ९ रज्जब को मार डाला गया।

(८) रफ़ीउद्दरजात ९ रबीउस्सानी को गद्दी पर बैठा लेकिन ३ महीने पीछे १९ रज्जब (अषाढ़ बदी ६ तदनुसार २८ मई) को मर गया।

(९) रफ़ीउद्दौला का शासन २० रज्जब से ७ ज़ीकाद (प्रथम आश्विन सं० १७७६ तदनुसार ११ सितम्बर) तक रहा। इस दिन वह मर गया। मुहम्मदशाह ने (८) और (९) को बादशाह स्वीकार नहीं किया और अपना जुलूसी वर्ष फ़र्रुख़सियर के पीछे ९ रबीउस्सानी से ही माना।

(१०) इसकी मृत्यु २७ रबीउस्सानी सन ११६१ (वैशाख कृ० ३० सं० १८०५ तदनु० १६ अपरैल सन १७४८) को हुई।

(११) इसे १० शाबान सन ११६७ (ज्येष्ठ शु० १२ सम्वत १८११ तदनु० २ जून सन १७५४) को इसके मन्त्री इमादुलमुल्क ने क़ैद करके आलमगीर दूसरे को गद्दी पर बैठाया। देहान्त तिथी २७ शव्वाल सन ११८८ (पौष कृ० ३० सं० १८३१ तदनुसार १ जनवरी सन १७७५) है।

(१२) वह १० शाबान को अपना जुलूसी वर्ष मनाता रहा। ८ रबीउलअव्वल सन ११७३ (अगहन शु० १० सं० १८१६ तदनु २९ नवम्बर सन् १७५९) को इमादुलमुल्क के आदमियों ने इसे मार कर शाहजहां २य को गद्दी पर बिठाया।

(१३) इसे थोड़े ही दिनों में मरहटों ने गद्दी से उतार कर २९ सफ़र सन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

११७४ (क्वांर कृ० २ संवत् १८१७ तदनुसार १३ अगस्त सन १७६१) को जवांबख़्त को गद्दी पर बैठाया। उसका बाप अली गोहर उस समय बंगाल को भाग गया था।

(१४) शाह आलम दूसरा- ४ जमादीउलअव्वल सन ११७३ (पौष शु० ६ सं० १८१६ तदनु० २५ दिसम्बर १७५९ को गद्दी पर बैठा। और ७ रमज़ान सन १२३१ (कार्तिक शुदि ६ सं० १८६३ तदनुसार १६ नवम्बर सन १८०६ को मर गया।

(१५) इसका देहान्त २८ जमादीउस्सानी सन १२५३ (क्वांर बदी ३० सं० १८६४ तदनुसार २६ सितम्बर सन १८३७) को हुआ।

(१६) इसका जुलूस २६ जमादीउस्सानी से गिना जाता है। सन १८५७ सम्वत १९१४ के विद्रोह में इसे अंगरेज़ों ने क़ैद करके रंगून को भेज दिया और मुग़ल राज्य समाप्त हुआ।

सौर पंचांग।

सौर पंचांग सब से सीधा और सब से अधिक प्रचरित है। इस लिये इसकी तारीख़ों का मिलान सन ईस्वी की तारीख़ों से किया जाता है।

जैसा कि ऊपर कह आये हैं मेषादि वर्ष के सौर महीनों के दिनों की गिन्ती नियत करली गई है, इन दिनों में वास्तविक संक्रमण से १ दिन से अधिक का अन्तर नहीं पड़ता। जिस कुम्भ में प्रति चौथे वर्ष ३१ दिन गिने जाते हैं उसकी जांच इस तरह हो सकती है कि सम्वत में से ५६ घटाकर बाकी को देखो कि अगर वह ४ या ४०० से पूरा बट जावे तो उस कुम्भ में ३१ दिन होंगे अन्यथा ३० दिन। जिस वर्ष फ़रवरी में २९ दिन होते हैं उस वर्ष कुम्भ में भी ३१ दिन होते हैं।

सारिणी का उपयोग- (१) एक जनवरी से १३ अपरैल तक ईस्वी से सम्वत बनाने में ५६ जोड़ कर ऊपर की सारिणी से ईस्वी महीने की तारीख़ मिलाई जा सकती है, किन्तु १४ अपरैल से ३१ दिसम्बर तक के मेल के लिये ५७ जोड़ने चाहियें २९ दिन की फ़रवरी वाले वर्ष में ३१ दिनका कुम्भ होता है। ऊपर जो अंक (*) में चिन्हित किये हैं वे २९ दिन वाले फ़रवरीके मिलानके लिये हैं। जैसे, सन १९०४ के ४ मार्चकी सौर तिथि और विक्रम संवत ?

१९०४+५६=१९६० विक्रम संवत, इस वर्ष फ़रवरी २९ दिन की है इस लिये १ मार्च को १८ कुम्भ था और ४ मार्च को २१ कुम्भ था।

उपयोग- (२) १७ धनु से ३० मीन तकके लिये सन ईस्वी बनाने में ५६ और १ मेष से १६ धनु तक को सन ईस्वी बनाने में ५७ सन ईस्वी में से घटाने से विक्रम सम्वत बन जाता है और तिथि ऊपर लिखे अनुसार मिलाई जा सकती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदाहरण-६ कन्या संवत १९७९ की तारीख़ अंगरेज़ी तथा २२ कुम्भ संवत १९५६ की ईस्वी और सन ?

सारिणी ६

अनुक्रम सं०	सौर महीना और तारीख़	ईस्वी महीना और तारीख़	दिन संख्या	अनुक्रम सं०	सौर महीना और तारीख़	ईस्वी महीना और तारीख़	दिन संख्या
1	मेष 1	अपरेल 14	31	7	तुला 1	अक्टूबर 18	30
	,, 18	मई 1			,, 15	नौम्बर 1	
	,, 31	मई 14			,, 30	नौम्बर 16	
2	वृष 1	मई 15	31 (32)*	8	वृश्चिक 1	नौम्बर 17	29 (28)*
	,, 18	जून 1			,, 15	दिसम्बर 1	
	,, 31	जून 14			,, 29	,, 15	
	(वृष 32)*	(जून*) 15			(वृश्चिक)*28	(दिसं०)*14	
3	मिथुन 1	जून 15	32	9	धनु 1	दिसं० 16	29 (30)*
	(,, 16)*	(जून 16*)			धनु 16	दिसं०)*15	
	,, 17	जूलाई 1			(धनु 17)*	जनवरी 1	
	,, 32	जूलाई 16			धनु 29	,, ,,	
4	कर्क 1	जूलाई 17	31 (32)*		(धनु 30,*	,, 14	
	,, 16	अगस्त 1		10	मकर 1	,, 14)*	30 (29)*
	,, 31	अगस्त 16			(,, 1)*	जनवरी 14	
	(कर्क 32)*	(अगस्त*) 17			,, 19	(,, 15)*	
5	सिंह 1	अगस्त 17	31 (32)*		(,, 19,*	फ़रवरी 1	
	(,, 1)*	अगस्त)*18			मकर 30	(जनवरी 31)*	
	,, 16	सितम्बर 1			(मकर 29,*	12 फ़रवरी	
	(,, 15)*			11	कुम्भ 1	12 फ़रवरी)*	30 (29)*
	सिंह 31	सितम्बर 17			,, 18	फ़रवरी 18	
	(सिंह 30)*	सितम्बर 18			,, 30	मार्च 1	
6	कन्या 1		30		,, 29	(,, 13*)	
	,, 14	अक्टूबर 1		12	मीन 1	,, 14	31
	,, 30	अक्टूबर 17			,, 18	अपरैल 1	
					,, 31	,, 13	

* = इनमें सौर महीनों की तारीख़ों के हिसाब में कहीं कहीं एक दिन का अन्तर पाया जाता है जिसका कारण यह है कि यद्यपि इन संक्रान्तियों का भोग काल सर्वत्र ही एक माना जाता है किन्तु सूर्य की प्रविष्टाओं के दिन सर्वत्र एक से नहीं माने जाते फलतः बंगाल आदि और पंजाब की गणना में एक दिन का अन्तर रहता है जो हमने ऊपर * चिन्ह के द्वारा दिखाया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सारिणी संख्या १०

इकाई के अंक						
0	1	2	3	×	4	5
6	7	×	8	9	10	11
×	12	13	14	15	×	16
17	18	19	×	20	21	22
23	×	24	25	26	27	×
28	29	30	31	×	32	33
34	35	×	36	37	38	39
×	40	41	42	43	×	44
45	46	47	×	48	49	50
51	×	52	53	54	55	×
56	57	58	59	×	60	61
62	63	×	64	65	66	67
×	68	69	70	71	×	72
73	74	75	×	76	77	78
79	×	80	81	82	83	×
84	85	86	87	×	88	89
90	91	×	92	93	49	95
×	96	97	98	99	×	×

1979 – 57 = 1922 ईस्वी, 1 कन्या = 18 सितम्बर, इस लिये इस से आगे 9 कन्या होगी 26 सितम्बरको। इसी तरह 1956–56 = 1900 सन ई०, और 17 कुम्भ बराबर है 1 मार्च को इस लिये 22 कुम्भ को 6 मार्च होगी।

सन ईस्वी की तारीख़ के दिन जानना।

सारिणी १० के द्वारा सन ईस्वी के किसी महीने की किसी तारीख़ का वार जाना जा सकता है। जैसे पारसी पञ्चांग में तारीख़ों से दिन जानने की सारिणी पीछे लिख आये हैं वैसे ही यह सारिणी काम में आती है। सन ईस्वी के इकाई दहाई के अंकों को सारिणी के ऊपर के भाग में और सैंकड़े हज़ारके अंक नीचे बाईं तरफ़के भागमें देख कर उभयान्वयोवर्ण (ऐसा अक्षर जो दोनों कालमों के मिलने के ख़ानेमें हो, ढूंढलो। अगर पुरानी गणना की शताब्दि की तारीख़ जाननी हो तो पुराने पञ्चांग की सदी के ख़ाने में सैंकड़े या हज़ार का, और अगर दोनों अंक हों तो दोनों का अंक पढ़कर उसकी सीधमें उभयान्वयी अक्षर ढूंढो फिर सारिणीके नीचे के भाग में महीनेके ख़ाने में इष्ट महीना ढूंडो अगर यह वर्ष ऐसा है जिसमें फ़र्वरी के २९ दिन होते हैं तो जनवरी† और फ़र्वरी† (चिन्हित) ढूंढो। इस महीने की सीधमें ऊपर (दाहिनी ओर) को बढ़ कर अपना वही उभयान्वयी अक्षर मिलाओ और समझलो कि उस अक्षर के सामने वाले दिन वे चार या ५ तारीख़ तुम्हारे अभिष्ट महीने की आवेंगी। इससे तुम और तारीख़ों का मेल मिला सकोगे।

सैंकड़ा–हज़ार के अंक	
पुराने पंचांग की सदी	नये पंचांग की सदियों के नाम

0	7	14	17	21	25	29	33	37	शु	श	र	सो	मं	बु	बृ
1	8	15	×	×	×	×	×	×	र	शु	श	र	सो	मं	बु
2	9	16	18	22	26	30	34	38	बु	बृ	शु	श	र	सो	म
3	10	17	×	×	×	×	+	×	म	बु	बृ	शु	श	र	सो
4	11	×	19	23	27	31	35	39	वो	म	बु	बृ	शु	श	र
5	12	×	20	24	28	32	36	40	र	सो	मं	बु	बृ	शु	श
6	13	×	×	×	×	×	×		श	र	सो	मं	बु	बृ	शु

महीना	तारीख़						
मार्च० जन०	1	2	3	4	5	6	7
अप्रि० फ़र०	8	9	10	11	12	13	14
मई मार्च	15	16	17	18	19	20	21
जून अप्रि०	22	23	24	25	26	27	28
जुला० मई	29	30	31	×	×	×	×

सौर तिथि का वार जानना।

अभीष्ट सौर तिथि को पहिले सन ईस्वी की तारीख़ में परिवर्तित करलो और फिर ऊपर लिखे अनुसार दिन जानलो।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदाहरण- १ जनवरी सन १ [पुरानी गणना] को क्या वार था?

यहां सदी का, सैंकड़ा- हजारका, अंक ० है, इकाइ दहाई का अंक १ है, और शून्य के सामने और १ [इकाई] के नीचे जहां दोनों कालम मिलते हैं उस खाने में 'श' है। जनवरी के महीने के ऊपर 'श' लिखा है और उसके नीचे जनवरी की १, ८, १५, २२ और २९ तारीख लिखी हैं; इस लिये जाना गया कि १ जनवरी सन १ को शनिवार था।

[२] सन १९२२ ईसवी के १० अक्टूबर को क्या दिन था?

इकाई दहाई के अंक २२ और सैंकड़ा हज़ार के १९ हैं। इनका उभयान्वयी अंक 'र' है। अक० के सामने रविवारकी १, ८, १५, २२ और २९ तारीख़ दी हैं, इस लिये रविवार से आगे १० तारीख़ को मंगलवार था।

चान्द्र वर्षका सन ईसवीसे मिलान।

चान्द्र पंचांग की गणना के सम्बन्ध में ऊपर बहुत सी बातें कही जा चुकी हैं, जैसे अधिमास या तिथि गणना का नियम; परन्तु इन सब से अधिक विचित्र बात यह है कि चान्द्र गणना के अनुसार कभी कभी मास क्षय भी हो जाता हैं अर्थात् किसी वर्ष में ११ महीने भी हो जाते हैं और किसी वर्ष में १३ महीने भी होते हैं। परन्तु जिस वर्ष एक क्षय मास होता है उसी वर्ष एक अधिमास भी अवश्य होता है इस तरह से चान्द्र तिथियें वही ३६० होजाती हैं। यहां अधिमास और क्षय मास के होने के कारण संक्षेप में देते हैं।

अधिमास- जिस वर्ष एक ही संक्रान्ति अर्थात् सौर मास के भीतर दो पौर्णमासी हो जाती हैं उस वर्ष उसी संक्रान्ति के भोगकाल में पौर्णमासी के नक्षत्र के अनुसार, एक अधिमास गिना जाता है। चान्द्रमास स्थूलमान से २९½ दिन का होता है इस लिये उन संक्रान्तियों के भोगान्तर्गत होने वाली पौर्णमासी वाले महीने ही अधिक हो सकते हैं जिन संक्रान्ति या सौर मास का समय ३० दिन या इससे अधिक हो। २९ दिन वाली संक्रान्ति के सौर मास में जो पौर्णिमा आती है, वे एक संक्रान्ति में दो कदापि नहीं हो सकतीं यही कारण है कि वृश्चिक और धनु के भोग के अन्तर्गत वाली पौर्णिमा [कार्तिक और अगहन] कदापि एक संक्रान्ति में दो नहीं हो सकती क्योंकि उनका भोग काल ही २९ दिन है जो चान्द्रमाससे भी कम है। ३० दिन वाली संक्रान्तिके अन्तर में दो पौर्णिमाओं का आना सम्भव है अतः कन्या तुला, मकर, कुम्भ और मीन की संक्रान्तियों में अधिमास उन २ पौर्णिमाओं वाले कभी २ होते रहते हैं, जो उन संक्रान्तियोंमें पड़तीहैं, अर्थात् भादों, क्वांर, पौष, माघ, फाल्गुन। किन्तु ३१ या ३२ दिन वाली संक्रान्ति के महीनों में ऐसी सम्भावना और भी अधिक है, यही कारण है कि ऐसी संक्रान्तियों की पौर्णिमा के महीने बार बार अधिमास होते हैं,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जैसे चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़।

क्षयमास-जिन चान्द्र महीनों में कोई संक्रान्ति नहीं होती उनका 'क्षय' अर्थात अभाव गिना जाता हैं। चान्द्र मास में संक्रान्ति सम्भव न होने के कारण हम ऊपर दिखा आये हैं। अतः यह स्पष्ट है कि वे ही क्षय मास सम्भव हैं जिनकी संक्रान्ति २९ दिन या कम की होती हैं। ऐसे मास कार्तिक और अगहन हैं, कभी कभी पौषभी क्षय हो सकता है।

अतः चान्द्र पंचांग की तिथियें जानने के लिये यह आवश्यक है कि इन अधिमास और क्षय मास सम्बन्धी गणना भी कर ली जावे। अधिमास आनने का नियम हम पीछे दे आये हैं। यहां हम क्षयमास जानने का नियम लिखते हैं-

१४१-१४१-१९ वर्ष के अन्तर से क्षय मास पड़ता रहता है। क्षयमास से ३ महीने पहिले और ३ महीने पीछे भी अधिकमास आते हैं, अर्थात जब कार्तिक क्षय होगा ता श्रावण और फाल्गुन दो दो होंगे जब अगहन क्षय होगा तो भाद्रपद और (अगले सम्वत का चैत्र दो दो होंगे और पौष क्षय होगा तो आश्विन और वैशाख [अगले वर्ष का] दो दो होंगे। सम्वत ११०९ से पीछे जो क्षय मास हुये हैं उनका हिसाब यह है-

शाका	विक्रम	अन्तर	क्षयमास
९७४	११०९	१४१ वर्ष	
१११५	१२५०	१४१ ,,	
१२५६	१३९१	१२२ ,,	
१३७८	१४१३	८४ ,,	
१४६२	१५९७	१४१ ,,	पौष
१६०३	१७३८	१४१ ,,	मार्गशीर्ष
१७४४	१८७९	१९ ,,	मार्गशीर्ष या पौष
१७६३	१८९८		पौष

चान्द्र तिथियोंके मेलकी सारिणियां।

(१) ध्रुवाङ्क चक्र

१	२	३	४	५	६		७	
					तारीख			
ध्रुवाङ्क	ध्रुव चक्र	तिथि	वार	ईस्वी वर्ष	नई गणना	पुरानी गणना	सूर्य करण	चन्द्र करण
०	-७८	२०·५०	१·४५	०	१२·९०	१४·९०	१०१·०	२७८·०

नोट- अगर बी० सी० ईस्वी की तारीख़की गणना की जावे तो ५ म कोष्ठ में मूल्य १ (-१) रखना चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सारिणी ११

(२) कालान्तर संस्कार सारिणी शताब्दियों का कालान्तर

शाके के सैकड़े के अंक	तिथि	घाट	सन ईस्वी के सैकड़े के अंक	तारीख		चन्द्र करण	सूर्य करण
				नई गणना	पुरानी गणना		
100	26·24	6·64	100	1·64	·64	252 3	359·7
200	22·48	6 27	200	3·27	1 27	144·5	359·3
300	18·72	5·91	300	4 91	1 91	36·8	359 0
400	14·97	5 55	400	5 55	2 55	289·1	358·7
500	11·21	5·19	500	7 19	3·19	181·4	358 3
600	7·45	4·82	600	8 82	3 82	73·6	358 0
700	3·69	4·46	700	10 46	4 46	325 9	357 7
800	29 93	4 10	800	11·10	5 10	218·2	357 3
900	26·17	3·74	900	12·74	5 74	110·5	357 0
1000	22 41	3·37	1000	14 37	6·37	2·7	356 6
1100	11·66	3.01	1100	15·01	7·01	255·0	356 3
1200	14·90	2·65	1200	16·65	7·65	355 9	147 3
1300	11·14	2·29	1300	18·29	8·29	355·6	39·6
1400	7·38	1·92	1400	19:92	8·92	355·3	291 9
1500	3·62	1·56	1500	21·56	9·56	354 9	184 2
1600	29·86	1·20	1600	22.20	10 20	354·6	76.5
1700	26·10	0·84	1700	23 84	10·84	354·3	328 8
1800	22·35	0 47	1800	24·47	11·47	353 9	321 1
1900	11·59	0 11	1900	27·11	12 11	353·6	113 4
2000	14·83	6 75	2000	27·75	12·75	353·2	5·5
4000	29·66	6 50	4000	55 50	25 50	346 6	11 0
6000	14 48	6·25	6000	83·25	38·25	339·8	16 5
8000	29·31	5·.9	8000	110·99	50 99	330·0	22 0
10000	14·14	5 74	10000	138 74	63·74	326 5	27 5

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३) कालान्तर संस्कार सारिणी (१२)
सौ वर्ष से कम का संस्कार

वर्ष	तिथि	वार	सन ईस्वी		सूर्य करण	चन्द्र करण
			वर्ष	तारीख		
१	११·०६	१·२६	१	·२६	०	३१९·३
२	२२·१२	२·५१	२	·५२	०	२७८·६
३	३·१९	३·७७	३	·७७	०	२३८·०
४	१४·२५	५·०२	४	·०२	०	१९७·३
८	२२·५०	३·०५	८	·०५	०	३४·६
१२	१२·७५	१·०७	१२	·०७	०	२३१·९
१६	२७·०	६·०	१६	०·०	०	६९·२
२०	११·२५	४·१३	२०	·१३	३५९·९	२६६·५
२४	२५·५०	२·१५	२४	·१५	”	१०३·८
२८	९·७५	·१८	२८	·१८	”	३०१·१
३२	२४·०	५·२०	३२	·३०	”	१३२·४
३६	८·२५	३·२३	३६	·२३	”	३३५·६
४०	२२·५०	१·२५	४०	·२५	”	१७२·९
४४	६·७५	६·२८	४४	·२८	”	१०·२
४८	२१·०	४·३०	४८	·३०	”	२०७·५
५२	५·२५	२·३३	५२	·३३	३५९·८	४४·८
५६	१९·५०	·३५	५६	·३५	”	२४२·२
६०	३·७४	५·३८	६०	·३८	”	७९·४
६४	१८·०	३·४०	६४	·४०	”	२७६·७
६८	२·२५	१·४३	६८	·४३	”	११४·०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्ष	तिथि	वार	सन् ईस्वी वर्ष	सन् ईस्वी तारीख	सूर्य करण	चन्द्र करण
७२	१६.४८	६.४५	७२	.४५	३५९.७	३११.३
७६	.७३	४.४८	७६	.४८	"	१४८.६
८०	१४.९८	२.५१	८०	.५१	"	३४५.८
८४	२९.२३	.५३	८४	.५३	"	१८३.१
८८	१३.४८	५.५६	८८	.५६	"	२०.४
९२	२०.७३	३.५८	९२	.५८	"	२१७.७
९६	१२.०	१.६१	९६	.६१	"	५५.०

(५) कालान्तर संस्कार सारिणी (१३)
वर्ष से कम समय के संस्कार के लिये

१	२	३	४	५	६	७	८
तिथि	वार	तारीख	सूर्य करण	चन्द्र करण	वार	तिथि	तारीख
१	.९८	.९८	१.०	.९	१	१.०२	१
२	१.९७	१.९७	१.९	१.७	२	२.०३	२
३	२.९५	२.९५	२.९	२.६	३	३.०५	३
४	३.९४	३.९४	३.९	३.४	४	४.०७	४
५	४.९२	४.९२	४.८	४.३	५	५.०८	५
६	५.९१	५.९१	५.८	५.२	६	६.१०	६
७	६.८९	६.८९	६.८	६.०	०	७.१२	७
८	.८७	७.८७	७.८	६.९	१	८.१३	८
९	१.८६	८.८६	८.७	७.७	२	९.१४	९
१०	२.८४	९.८४	९.७	८.६	३	१०.१७	१०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१		२	३	४	५	६	७	८
तिथि	वार	तारीख	सूर्य करण	चन्द्र करण	वार	तिथि	तारीख
२०	५·६९	१९·६९	१९·४	१७·२	६	२०·३२	२०
३०	१·५३	२९·५३	२९·१	२५·८	२	३०·४८	३०
४०	४·३७	३९·३७	३८·८	३४·४	५	४०·६३	४०
५०	·२२	४९·२२	४८·५	४३·६	१	५०·८०	५०
६०	३·०६	५९·०६	५८·२	५१·६	४	६०·९५	६०
७०	५·९०	६८·९०	६७·९	६०·२	०	७१·१२	७०
८०	१·७५	७८·७५	७७·६	६८·८	३	८१·२७	८०
९०	४·५९	८८·५९	८७·३	७७·४	६	९१·४२	९०
१००	·४३	९८·४३	९७·०	८६·१	२	१०१·५८	१००
२००	·८७	१९६·८७	१८४·०	१७२·१	४	२०३·१८	२००
३००	१·३७	२९५·३७	२९१·०	२५८·२	६	३०४·७७	३००

(६) विशेष कालान्तर संस्कार सारिणी (१४)

शताब्दियों का कालान्तर

शताब्दि के अंक	वार	सूर्य करण	चन्द्र करण	शताब्दि के अंक	वार	सूर्य करण	चन्द्र करण
० शाके से पूर्व	-·०८७	-·४०	३·२१	१०००	-·०१	-·०८	·६४
१०० "	-·०९६	-·४५	३·५८	११००	०	-·०६	·४९
				१२००	०	-·०४	·३६
३०० "	-·१०८	-·५०	३·९६	१३००	०	-·०३	·२५
१००० "	-·५१	-·९५	७·७०	१४००	०	-·०२	·१६
१७०० "	-·३२	-१·४६	११·९५	१५००	०	-·०१	·०९
२४०० "	-·४६	-२·०१	११·०८	१६००	०	०	·०१६
३१०० "	-·६३	-२·८१	२३·०९	१७००	०	०	·२५
१०० शाके	-·०७८	-·३६	२·८७	१८००	०	०	·३७
२००	-·०६९	-·३२	२·५४	१९००	०	०	·५०
३००	-·०६१	-·२८	२·२५	२०००	०	०	·६५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शताब्दि के अंक	वार	सूर्य करण	चन्द्र करण	शताब्दि के अंक	वार	सूर्य करण	चन्द्र करण
४०० शाके	-.०५३	-.२४	१.९५	२१००	०	-.०१	.८३
५००	-.०४५	-.२९	१.६९	२२००	०	-.०२	१.०२
६००	-.०३	-.१८	१.४४	२३००	०	-.०३	१.२१
७००	-.०३	-.१५	१.२१	२४००	०	-.०४	१.४७
८००	-.०२	-.१२	१.०	२५००	०	-.०६	१.७३
९००	-.०२	-.१०	.८१	२६००	-.०१	-.०८	१.९९

(७) सूर्य करण सारिणी (१५)

सूर्य करण	वार भोग	सूर्य करण	वार भोग	सूर्य करण	वार भोग	सूर्य करण	वार भोग	सूर्य करण	वार भोग
६	.०१८	१२	.०३७	१८	.०५४	२४	.०७१	३०	.०८७
३६	.१०४	४२	.११७	४८	.१३०	५४	.१४१	६०	.१५२
६६	.१५९	७२	.१६६	७८	.१७०	८४	.१७३	९०	.१७३
९६	.१७३	१०२	.१६९	१०८	.१६४	११४	.१५६	१२०	.१४८
१२६	.१३८	१३२	.१२८	१३८	.११४	१४४	.१००	१५०	.०८५
१५६	.०७०	१६२	.०५३	१६८	.०३६	१७४	.०१८	१८०	०.०
१८६	-.०१८	१९२	-.०३६	१९८	-.०५३	२०४	-.०७०	२१०	-.०८५
२१६	-.१००	२२२	-.११४	२२८	-.१२८	२३४	-.१३८	२४०	-.१४८
२४६	-.१५६	२५२	-.१६४	२५८	-.१६८	२६४	-.१६९	२७०	-.१७३
२७६	-.१७३	२८२	-.१७०	२८८	-.१६३	२९४	-.१५९	३००	-.१५२
३०६	-.१४१	३१२	-.१३०	३१८	-.११०	३२४	-.१०४	३३०	-.०८०
३३६	-.०७१	३४२	-.०५४	३४८	-.०३७	३५४	-.०१८	३६०	०.०

चन्द्र करणांश	तिथि १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	-.१४१	-.२०६	-.३९९	-.५०३	-.५८०	-.६२८	-.६३९	-.६२७	-.५८२	-.५१६	-.४३२	-.३३६	-.२२९	-.११६	+.०००
१२	-.२९५	-.३४७	-.४६१	-.५५२	-.६१६	-.६४३	-.६३८	-.६०३	-.५४२	-.४५९	-.३६१	-.२५३	-.१३९	-.०२३	+.०९२
२४	-.२८५	-.४०५	-.५०६	-.५८०	-.६२४	-.६३९	-.६०७	-.५५४	-.४७५	-.३८०	-.२७२	-.१५५	-.०४२	+.०७२	.१७६
२६	-.३४३	-.४४९	-.५२४	-.५८५	-.६०५	-.५९४	-.५५०	-.४७९	-.३८७	-.२८१	-.१६७	-.०५२	+.०६०	.१६३	.२५७
४८	-.३९१	-.४०६	-.५३६	-.५६७	-.५६६	-.५३०	-.४६८	-.३८१	-.२७८	-.१६७	-.०५४	+.०५५	.१५७	.२४५	.३२१
६०	-.४२४	-.४८५	-.५१९	-.५२६	-.५०१	-.४४५	-.३६५	-.२६७	-.१५८	-.०४६	+.०६२	.१६२	.२४७	.३१६	.३६७
७२	-.४४०	-.४७४	-.४८४	-.४६४	-.४१५	-.३४१	-.२४७	-.१४१	-.०३१	+.०७६	.१७७	.२६०	.३२६	.३७१	.३९६
८४	-.४३८	-.४४५	-.४२६	-.३८१	-.३१२	-.२२२	-.११८	-.००९	+.१००	.२००	.२९४	.३६७	.३८१	.४०७	.४०६
९६	-.४१६	-.३९०	-.३९८	-.३५२	-.२९४	-.२९६	+.०९५	+.१३५	.२३६	.३१०	.३७७	.४०९	.४३५	.४२७	.३९८
३६०	-.१४१	-.२०६	-.३९९	-.५०३	-.५८०	-.६२८	-.६३९	-.६२७	-.५८२	-.५१६	-.४३२	-.३३६	-.२२९	-.११६	-.०००

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चन्द्र करणांश	तिथि १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
०	-.१४१	-.२०६	-.३९९	-.५०३	-.५८०	-.६२८	-.६३९	-.६२७	-.५८२	-.५१६	-.४३२	-.३३६	-.२२९	-.११६	+.०००
१२	-.२१५	-.३४७	-.४६१	-.५५२	-.६१६	-.६४३	-.६३८	-.६०३	-.५४२	-.४५९	-.३६१	-.२५३	-.१३९	-.०२३	+.०९२
२४	-.२८५	-.४०५	-.५०६	-.५८०	-.६२४	-.६३९	-.६०७	-.५५४	-.४७५	-.३८०	-.२७२	-.१५५	-.०४२	+.०७२	.१७६
३६	-.३४३	-.४४९	-.५२४	-.५८५	-.६०५	-.५९४	-.५५०	-.४७९	-.३८७	-.२८१	-.१६७	-.०५२	+.०६०	.१६३	.२५७
४८	-.३९१	-.४०६	-.५३६	-.५६७	-.५६६	-.५३०	-.४६८	-.३८१	-.२७८	-.१६७	-.०५४	+.०५५	.१५७	.२४५	.३२१
६०	-.४२४	-.४८५	-.५१९	-.५२६	-.५०१	-.४४५	-.३६५	-.२६७	-.१५८	-.०४६	+.०६२	.१६२	.२४७	.३१६	.३६७
७२	-.४४०	-.४७४	-.४८४	-.४६४	-.४१५	-.३४१	-.२४७	-.१४१	-.०३१	+.०७९	.१७०	.२६०	.३२६	.३७१	.३९६
८४	-.४३८	-.४४५	-.४२६	-.३८१	-.३१२	-.२२२	-.११८	-.००९	+.१००	.२००	.२८४	.३४७	.३८१	.४०७	.४०६
९६	-.४१४	-.३९६	-.३५१	-.२८४	-.१९६	-.०९५	+.०१५	+.१२५	.२२६	.३१२	.३७७	.४१९	.४३५	.४२७	.३९८
१०८	-.३७६	-.३३०	-.२६२	-.१७५	-.००३	+.०३७	.१४६	.२५०	.३४२	.४१२	.४५५	.४७२	.४६२	.४२७	.३७४
१२०	-.३१९	-.२४८	-.१६०	-.०५८	+.०५१	.१६३	.२७१	.३६६	.४४२	.४९२	.५१५	.५०६	.४७१	.४१३	.३३५
१३२	-.२४७	.१५७	-.०५२	+.०५८	.१७३	.२८३	.३८३	.४६५	.५२४	.५५४	.५५२	.५२१	.४६२	.३८१	.१८८
१४४	-.१६४	-.०५०	+.०५५	.१७०	.२८३	.३८९	.४७७	.५४४	.५८३	.५९२	.५६८	.५१५	.४३५	.३३६	.२२२
१५६	-.०७१	+.०४३	.१६०	.२७३	.३८१	.४७५	.५४९	.५९९	.६१८	.६०८	.५६३	.४९०	.३९४	.२७९	.१५२
१६८	+.०२३	.१४२	.२५५	.३६२	.४५८	.५३८	.५९४	.६२७	.६२८	.५९७	.५३६	.४४०	.३३८	.२१३	.०७८
१८०	.११५	.२३१	.३३५	.४३१	.५१२	.५७६	.६१०	.६३०	.६१२	.५६५	.४८९	.३९०	.२७२	.१४०	.०००
१९२	.२०१	.३०६	.३९९	.४७८	.५४३	.५८७	.६०९	.६०४	.५७१	.५१०	.४२५	.३१८	.१९६	.०६२	-.०७८
२०४	.२७६	.३६६	.४४१	.५०१	.५४५	.५७१	.५७५	.६५४	.५०८	.४३८	.३४६	.२३६	.११२	-.०१९	-.१५४
२१६	.३३५	.४०५	.४६०	.४९९	.५२३	.५२९	.५१६	.४८१	.४२५	.३४८	.२५४	.१४५	.०२५	-.१००	-.२२६
२२८	.३७८	.४२५	.४५५	.४७३	.४७४	.४६३	.४३३	.३८८	.३२५	.२४६	.१५४	.०४८	-.०६४	.१७८	-.२६०
२४०	.४००	.४२२	.४२९	.४२४	.४०६	.३१६	.३३५	.२८१	.२१५	.१३५	.०४५	-.०५०	-.१५१	-.२४९	-.३४३
२५२	.४०२	.३९९	.३७६	.३५३	.३१८	.२७३	.२२१	.१६१	.०९३	.०१७	-.०६३	-.१४७	-.२३१	-.३११	-.३८०
२६४	.४०२	.३५७	.३१८	.२६९	.२१५	.१५९	.०९८	.०३४	-.०३५	-.१००	-.१६८	-.२३८	-.३०३	-.३६१	-.४०६
२७६	.३५६	.३०३	.२३९	.१०३	.१०४	.०३७	-.०२९	-.०९३	-.१५५	-.२१०	-.२६७	-.३१९	-.३६३	-.३९६	-.४१७
२८८	.३०८	.२३१	.१४९	.०६७	-.०१४	-.०८९	-.१५७	-.२१८	-.२७१	-.३१६	-.३५५	-.३८३	-.४०६	-.४१२	-.४०५
३००	.२४८	.१५१	.०५३	-.०४१	-.१३२	-.२१४	-.२८१	-.३३५	-.३७६	-.४०६	-.४२६	-.४३४	-.४२७	-.४०९	-.३७८
३१२	.१७९	.०६५	-.०४६	-.१५२	-.२४३	-.३२७	-.३९१	-.४३७	-.४६५	-.४०८	-.४७६	-.४५९	-.४२९	-.३८५	-.३२६
३२४	.१०२	-.०३३	-.१४४	-.२५६	-.३५३	-.४३०	-.४८७	-.५२२	-.५३४	-.५२७	-.४९८	-.४६५	-.४१०	-.३४१	-.२६०
३३६	.०२२	-.११०	-.२३८	-.३५२	-.४४७	-.५१८	-.५६७	-.५८३	-.५७७	-.५५१	-.५०६	-.४४५	-.३६८	-.२७९	-.१८१
३४८	-.०६०	-.१९८	-.३२५	-.४३५	-.५२३	-.५८४	-.६१६	-.६१८	-.५९५	-.५४८	-.४८१	-.४०१	-.३०७	-.२०४	-.०९२
३६०	-.१४१	-.२०६	-.३९९	-.५०३	-.५८०	-.६२८	-.६३९	-.६२७	-.५८२	-.५१६	-.४३२	-.३३६	-.२२९	-.११६	-.०००

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्र करणांश	तिथि														
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	+·११६	·२२९	·३३६	·४३२	·५१६	·५८२	·६२७	·६३९	·६२८	·५८०	·५०३	·३९९	·२७६	·१४३	·०००
१२	·२०४	·३०७	·४०१	·४८१	·५४८	·५९५	·६१८	·६१५	·५८४	·५२३	·४३५	·३२५	·१९८	·०६०	-·०७८
२४	·२७९	·३६८	·४४५	·५०६	·५५१	·५७७	·५८३	·५६६	·५१८	·४४०	·३५२	·२३८	·११०	-·०२२	-·१४५
३६	·३४१	·४१०	·४६५	·४९८	·५५७	·५३४	·५२२	·४८७	·४३०	·३५३	·२५६	·१४४	·०२३	-·१०२	-·२२६
४८	·३८५	·४२९	·४५६	·४७६	·४७८	·५६५	·४३७	·२९१	·३२७	·२४३	·१५२	·०४६	-·०६५	-·१७९	-·२९१
६०	·४०९	·४२७	·४३४	·४२६	·४०६	·३७६	·३३५	·२८१	·२१४	·१३२	·०४३	-·०५३	-·१५१	-·२४८	-·३४४
७२	·४३२	·४०६	·३८३	·३५५	·३१६	·२७१	·२१८	·१५७	·०८९	·०१४	-·०६७	-·१४९	-·२३१	-·३०८	-·३८४
८४	·३९६	·३६३	·३१९	·२६७	·२१०	·१५५	·०९३	·०२९	-·०३७	-·१०४	-·१७३	-·२३६	-·३०३	-·३५६	-·४०८
९६	·३६१	·३०३	·२३८	·१६८	·१००	·०३५	-·०३४	-·०९८	-·१५९	-·२१५	-·२६९	-·३१८	-·३५७	-·४०२	-·४१५
१०८	·३११	·२३१	·१४७	·०६३	-·०१७	-·०९३	-·१६१	-·२२१	-·२७३	-·३१८	-·३५३	-·३७६	-·३९९	-·४०२	-·४०३
१२०	·२४९	·१५१	·०५०	-·०४५	-·१३५	-·२१५	-·२८१	-·३७६	-·३३५	-·४०६	-·४२४	-·४२९	-·४२२	-·४००	-·३७२
१३२	·१७८	·०६४	-·०४८	-·१५४	-·२४६	-·३२५	-·३८८	-·४६३	-·४३३	-·४७४	-·४७३	-·४२५	-·४२५	-·३७८	-·३२३
१४४	·१००	-·२५	-·१४५	-·२५४	-·३४८	-·४२५	-·४८१	-·५२९	-·५१६	-·५२३	-·४९९	-·४७०	-·४०५	-·३३५	-·२५०
१५६	·०१९	-·१२५	-·२३६	-·३१६	-·४३८	-·५०८	-·५४४	-·५७१	-·५७५	-·५४५	-·५०१	-·४४१	-·३६६	-·२७६	-·१७९
१६८	-·०६२	-·१९६	-·३१८	-·४२५	-·५१०	-·५७१	-·६०४	-·६०९	-·५८७	-·५४३	-·४७८	-·३९९	-·३०६	-·२०१	-·०९३
१८०	-·१४०	-·२७२	-·३९०	-·४८९	-·५६५	-·६१२	-·६३०	-·६१७	-·५७६	-·५१२	-·४३१	-·३३५	-·२३१	-·११५	·०००
१९२	-·२१३	-·३३८	-·४४७	-·५३६	-·५९७	-·६२८	-·६२७	-·५९५	-·५३८	-·४४८	-·३६२	-·२५३	-·१५२	-·०२३	+·०९२
२०४	-·२७९	-·३९४	-·४९०	-·५६३	-·६०८	-·६१८	-·५९९	-·५४९	-·४७५	-·३८१	-·२७३	-·१६०	-·०४३	+·०७१	·१७८
२१६	-·३३६	-·४३५	-·५१५	-·५६८	-·५९२	-·५८३	-·५४४	-·४७७	-·३८९	-·२८३	-·१७०	-·०५५	+·०५७	·१६४	·२५४
२२८	-·३८१	-·४६१	-·५२१	-·५५२	-·५५४	-·५३४	-·४६५	-·३८३	-·२८३	-·१७३	-·०५८	+·०५२	·१५७	·२४८	·३१८
२४०	-·४९३	-·४७१	-·५०६	-·५१५	-·४९२	-·४४२	-·३६६	-·२७१	-·१६३	-·०५१	+·०५८	·१६०	·२४८	·३१९	·३६५
२५२	-·४२०	-·४६२	-·४७२	-·४५५	-·४१२	-·३४२	-·२५०	-·१४६	-·०३७	+·०७३	·१७५	·२६२	·३३०	·३७६	·३९०
२६४	-·४२७	-·४३५	-·४१९	-·३७७	-·३१२	-·२२६	-·१२५	-·०१५	+·०९५	·१९६	·२८४	·३५१	·३९६	·४१४	·४०५
२७६	-·४००	-·३८९	-·३४७	-·२८४	-·२००	-·१००	+·००९	·११८	·२२२	·३१२	·३८१	·४२६	·४४५	·४३८	·३९८
२८८	-·३७१	-·३२६	-·२६०	-·१७७	-·०७९	+·०३१	·१४१	·२४७	·३४१	·४१५	·४६४	·४८४	·४७९	·४४०	-·३७५
३००	-·३१६	-·२४७	-·१६२	-·०६२	+·०४६	·१५८	·२६७	·३६५	·४४५	·५०१	·५२६	·५१९	·४८५	·४२४	·३३६
३१२	-·२४५	-·१५७	-·०५५	+·०५४	·१६७	·२७८	·३८१	·४६८	·५३०	·५६६	·५६७	·५३६	·४७६	·३९१	·२८५
३२४	-·१९३	-·०६०	+·०५२	·१६७	·२८९	·३८७	·४७९	·५५०	·५९४	·६०५	·५८५	·५२४	·४४९	·३४३	·२२२
३३६	-·०७२	+·०४२	·१५५	·२७२	·३८०	·४७५	·५५४	·६०७	·६३२	·६२४	·५८०	·५०६	·४०५	·२८५	·१५४
३४८	+·०२३	·१३९	·२५३	·३६१	·४५९	·५४२	·६०३	·६३८	·६४३	·६१६	·५५२	·४६१	·३४७	·२१५	·०७८
३६०	·११६	·२२९	·३३६	·४३२	·५१६	·५८२	·६२७	·६२९	·५८०	·५८०	·५०३	·३९९	·२७६	·१४१	·०००

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(८) चन्द्रकरण सारिणी १६

शताब्दि	४००	५००	६००	७००	८००																					
अंक	००	००	००	००	००																					
करण																										
	·३१८	·२४८	·१५७	+·०५२	−·०५८	−·१७३	−·२८३	−·३८३	−·४६५	−·५२४	−·५५४	−·५५२	−·५२१	−·४६१	−·४०१	−·३२९	−·२४०
	·३६५	·३९९	·१६०	+·०५८	−·०५१	−·१६३	−·२७१	−·३६६	−·४४२	−·४९२	−·५१५	−·५०६	−·४७१	−·४१३	−·३४०
	·३६९	·३७६	·३३०	+·०७३	·१७५	−·०३७	−·१४६	−·२५०	−·३४२	−·४१२	−·४५५	−·४७२	−·४६२	−·४२७	−·३८०
	·४०५	·४१४	·३९६	·३५१	·२८४	·१९६	+·०९५	−·१२४	−·२२६	−·३१२	−·३७६	−·४१६	−·४३५	−·४२७	−·३९४
	·३९८	·४३८	·४४५	·४२६	·३८१	·३१२	·२२२	·११८	+·००९	−·१००	−·२००	−·२८४	−·३४७	−·३८९	−·४००
	·४४०	·४४०	·४७४	·४८४	·४६४	·४१५	·३४१	·२४७	·१४१	+·०३१	−·०७९	−·१७७	−·२६०	−·३२६	−·३७१
	·३३६	·४२४	·४८५	·५१९	·५२६	·५०१	·४४५	·३६५	·२६७	·१५८	+·०४६	−·०६२	−·१६२	−·२४७	−·३१६
	·२८५	·३९१	·४७६	·५३६	·५६७	·५६६	·५३०	·४६८	·३८१	·२७८	·१६७	+·०५४	−·०५५	−·१५७	−·२४५
	·२२२	·२४३	·४४९	·५२४	·५८५	·६०५	·५९४	·५५०	·४७६	·३८७	·२८९	·१६७	−·०६०	+·०५२	−·१६३
	·१५४	·२८५	·४०५	·५०६	·५८०	·६२९	·६३२	·६०७	·५५४	·४७५	·३८०	·२७२	·१५५	+·०४२	−·०७२
	·०७८	·२१५	·३४७	·३९९	·५४२	·६१६	·६४३	·६३८	·५४२	·४६१	·३६१	·२५३	·१३९	+·०२३	−·०९०
	·०००	·२४१	·२७६	·३९९	·५०३	·५८०	·५८०	·५२९	·४६७	·३९६	·३३६	·२२९	·११६		

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन सारिणियोंके दो लाभ हैं-(१) चान्द्र तिथि जान कर तदनुसार तारीख़ सन ईस्वी बनाना, और (२) तारीख़ सन ईस्वी जानकर चान्द्र तिथि बनाना। उपयोग-विधि इस प्रकार है :—

(अ) ध्रुवांक सारिणी के अनुसार कोष्टक बनाकर पहिले उसमें ध्रुवांक और वर्ष तिथि वार आदि लिखे। फिर इष्ट वर्षोंका कालान्तरभी संस्कार उन २ सारिणियों से लेकर उसी प्रकार अपने अपने खाने में लिखे जिन जिन सारिणियों में उक्त संस्कार मिलें, जैसे शताब्दियों का अन्तर सारिणी (११) से और दहाई के वर्षों का अन्तर सारिणी (१२) से। फिर तारीख़ के खाने में ५६ और जोड़े, परन्तु अगर सन ईस्वी के वर्ष ४ या ४०० से पूरे बट जावें तो ५६ के स्थानमें ६० जोड़े। इस गणित से उस वर्ष की मेष संक्रान्ति की तिथि और तारीख़ निकलेगी।

(ब) अब बाक़ी तारीख़ों (या तिथियों) का संस्कार सारिणी १३ से करे, और फिर एक बार सारिणी (१४) के अनुसार शताब्दियों का संस्कार देवे। यह सब जोड़ने से तारीख़ और तिथियों का स्थूल मेल होता है।

नोट-(१) अगर तारीख़ से तिथि जाननी हो तो भी यह अन्तर सारिणी (१३) से निकलेगा किन्तु यहां इतना विशेष है कि इस अवसर पर सारिणी को दाहिनी ओर से बाईं ओर को पढ़ना चाहिये और खाने १, २ और ३ छोड़ देने चाहियें।

नोट-(२) 'अ' भाग की गणित में यदि तिथि ३० से अधिक, वार ७ से अधिक और सूर्यकरण तथा चन्द्रकरण ३६० से अधिक आवें तो इन्हें इन्हीं अंकों से क्रम से भाग दे जो बाक़ी बचे वह रखले; लब्धि को छोड़ दे।

(द) गणित का सूक्ष्म अन्तर निकालने के लिये दशमलवांशक तिथियों और तारीख़ों को पूर्ण बनाने के लिये आवश्यकतानुसार दशमलवांश और और सूर्यकरण तथा चन्द्रकरण जोड़ें और इन करणों के योगफल को सारिणी (१५) और (१६) के अनुसार दिन में परिवर्तित करके तिथि और वारमें घटा (या बढ़ा, कर (ऋण या धन के अनुसार) योग करले। उत्तर में अभीष्ट सन और तारीख़ का तथा शाके और सन ईस्वी का मेल होगा। शाके में १३५ जोड़ने से सम्पूर्ण मेल विक्रम संवत का होगा।

नोट-(३) अगर तारीख़ से तिथि बनानी हो तो तारीख़ की गिनती करके कालान्तर संस्कार देवे और अगर तिथि से तारीख़ बनानी हो तो तिथियों को गिन कर कालान्तर संस्कार देवे। उत्तर निकल आने पर दूसरे प्रकार की (तिथि या तारीख़ का, हिसाब लगाले। अंगरेज़ी और चान्द्र महीनोंके दिन पीछे दे आये हैं। यह नियम बी० सी० को छोड़ कर सब तरह की सन ईस्वी की गणना के लिये पर्याप्त है। इच्छानुसार तारीख़ें पुरानी या नई गणना के अनुसार निकालने के लिये यथास्थान दोनों प्रकार के संस्कार दिये गये हैं।

उदाहरण-(१) १२ अपरैल सन १९१२ की तिथिवार और चान्द्रमास तथा वर्ष ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(नई गणना की तारीख़)

(२) २६ अपरैल सन १५२६ की विक्रम संवत महीना और तिथि ? (पुरानी गणना की तारीख़)

(३) शाका ४०६ (संवत ५४१ विक्रम) की आषाढ़ शु० १२ की ईस्वी सन महीना और तारीख़ ?

(४) संवत १२४८ (शाके १११३) की माघ शु० ५ की सन ईस्वी आदि ?

(५ कलियुग किस सन महीने और तारीख़ से गिना जाता है ?

(६) द्वापर के १२० वर्ष बाक़ी रहने पर भाद्र कृ० ८ की ईस्वी तारीख़ आदि ?

क्रिया-(१)

	१	२	३	४	५	६	७	८
विवरण	शाक संवत	तिथि	वार	ईस्वी सन	तारीख़	सूर्य करण	चन्द्र करण	विशेष
ध्रुवांक सारिणी	-७८	२०.५०	१.६५	०	१२.६०	१०१.७	२७८.०	
शताब्दि के वर्ष	१६००	१८.५६	.११	१६००	२७.११	३५६.६	११.३४	सारिणी ११
दहाई के वर्ष	१२	१२.७५	१.०७	१२	.०७	०.०	२३१.२६	सारिणी १२
क्षेपक	...	...	...	...	६०	...	...	
जोड़	१८३४	२१.८४	२.८३	१६१२	१००.०८	६५.३	२६३.३	
तिथि के दशमलवांश	...	.१६	.१६	...	.१६	.२	.२	
१६०० वर्ष का कालान्तर	...	...	...	...	...	...	.१	सारिणी १४
जोड़	१८३४	२२.०	२.६६	१६१२	१००.२४	६५.५	२६३.६	
तारीख़ के शेष दशमलवांश	...	.८६	.८६	...	.८६	.६	.६	
तारीख़ †	...	२.०३	५.०	...	२.०	१.६	१.७	
					*दिन	६८.३ = .१७२	२६६.२ = .२३८	
						योग	÷ .४१०	
करण-दिनांश		.४१	.४१					नोट-† १२ अपरैल तक १०३ तारीख़ होती है इसलिये १०१ से अधिक तारीख़ और ओड़ें सारि०१३*;सा०१५;+सा०१६
	१८३४	२५.३०	६.२६	१६१२	१०३			

अर्थात १६१२ के १८३वें दिन (१२ अपरैल) को शाके १८३४ की चान्द्र तिथि २५वीं वैशाख शु० १० थी। संवत = १८३४ + १३५ = ११७१ (नई गणना) दिन शुक्रवार।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रिया(२)ध्रुवांक०	-७८	२०'५०	१'६५	०	१२'६०	१०१'७	२७८'०	
शताब्दि के वर्ष	१५००	३'६२	१'५६	१५००	६'५६	३५४'६	१६४'२	सारिणी ११
दहाई के वर्ष	२६	१७'६२	४'६६	१६	'६६	३५६'६	२१६'७	सारिणी १२
२४ + २								
क्षेपक	...	...	...	...	५६'०	...	...	
जोड़	१४४८	११'७४	०'८७	१५२६	८२'१२	६६'५	३२१'६	
तिथि के दशमलवांश	...	'२६	'२६	...	'२६	'३	'३	
कालांतर	...	...	...	...	...	'१	'०६	
जोड़	१४४८	१२'०	१'०३	१५२६	८२'३८	६६'८१	३२२'२६	†२६ अपरैल तक ११४ दिन होते हैं।
तारीख़ के शेष दशमलवांश	...	'६२	'६२	...	'६२	'६०	'६०	
बाक़ी तारीख़†	...	३१'५०	३'०	...	३१'०	३०'१	२६'७	
३१						११८'५१	३४६'२६	
					दिन	= '१३३	= '०७८	
करण-दिनांश	...	'२११	'२११			योग	'२११	
जोड़	१४४८	४४'३३१	४'५६१	१५२६	११४'००	...	'२११	

अर्थात् सन १५२६ के ११४ वीं तारीख़ (२६ अपरैल को) पुरानी गणना से वैशाख शु० १४ शाके १४४८ सं० १५८३ था, दिन बुधवार।

इसी प्रकार क्रिया करने से (३) शाका ४०६ विक्रम ५४६ आषाढ़ शुक्ला १२ शुक्रवार सन ४८३ ईस्वी २२ जून, (४) माघ शु० ५ सं० १२४८ शाके ११११ को २७ दिसम्बर सन १०६१ सोमवार, और (५) कलि का आरम्भ ईसा से ३१०२ वर्ष पूर्व १८ फ़र्वरी शुक्रवार चैत्र शु० १ (विक्रम से ३०४५ वर्ष पूर्व) और (६) कलि से १२० वर्ष पूर्व भाद्र कृष्णाष्टमी को शक-पूर्व ३२६६ वर्ष, वि० पू० ३१६४ और ईस्वी से ३२२२ वर्ष पूर्व शनिवार को १४ जून थी।

नोट- (१) ऊपर के उदाहरणों में बी० सी० की गणना में जो अन्तर हैं वे इस प्रकार हैं (१) क्षेपक संख्या ६० है ५६ नहीं है, (२) सन ईस्वी के ध्रुवांक के कोष्ठक में शून्य के स्थान मे ऋण एक (-१) रखा गया है, (३) पहिले तीन उदाहरणों में भोग्यांश जोड़ने से पहिले क्षेपक और पीछे कालान्तर जोड़े हैं, और अन्तके उदाहरणों में तिथि भोग्यांश जोड़ने के पीछे क्षेपक और कालान्तर जोड़े हैं, (४) ध्रुवा में प्रथम भाग को गणना के योग को घटाने की विधि यद्यपि पाटी गणित के सामान्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्रिया(२)ध्रुवांक०	-७८	२०'५०	१'६५	०	१२'६०	१०१'७	२७८'०	
शताब्दि के वर्ष	१५००	३'६२	१'५६	१५००	६'५६	३५४'६	१६४'२	सारिणी ११
दहाई के वर्ष	२६	१७'६२	४'६६	१६	'६६	३५६'६	२१६'७	सारिणी १२
२४ + २								
क्षेपक	...	...	...	...	५६'०	...	...	
जोड़	१४४८	११'७४	०'८७	१५२६	८२'१२	६६'५	३२१'६	
तिथि के दशमलवांश	...	'२६	'२६	...	'२६	'३	'३	
कालांतर	...	...	...	...	...	'१	'०६	
जोड़	१४४८	१२'०	१'०३	१५२६	८२'३८	६६'८१	३२२'२६	†२६ अप-रैल तक ११४ दिन होते हैं।
तारीख़ के शेष दशमलवांश	...	'६२	'६२	...	'६२	'६०	'६०	
बाक़ी तारीख़†	...	३१'५०	३'०	...	३१'०	३०'१	२६'७	
३१						११८'५१	३४६'२६	
					दिन	= '१३३	= '०७८	
करण-दिनांश	...	'२११	'२११			योग	'२११	
जोड़	१४४८	४४'३३१	४'५६१	१५२६	११४'००	...	'२११	

अर्थात् सन १५२६ के ११४ वीं तारीख़ (२६ अपरैल को) पुरानी गणना से वैशाख शु० १४ शाके १४४८ सं० १५८३ था, दिन बुधवार।

इसी प्रकार क्रिया करने से (३) शाका ४०६ विक्रम ५४६ आषाढ़ शुक्ला १२ शुक्रवार सन ४८३ ईस्वी २२ जून, (४) माघ शु० ५ सं० १२४८ शाके १११३ को २७ दिसम्बर सन १०६१ सोमवार, और (५) कलि का आरम्भ ईसा से ३१०२ वर्ष पूर्व १८ फ़र्वरी शुक्रवार चैत्र शु० १ (विक्रम से ३०४५ वर्ष पूर्व) और (६) कलि से १२० वर्ष पूर्व भाद्र कृष्णाष्टमी को शक-पूर्व ३२६६ वर्ष, वि० पू० ३१६४ और ईस्वी से ३२२२ वर्ष पूर्व शनिवार को १४ जून थी।

नोट- (१) ऊपर के उदाहरणों में बी० सी० की गणना में जो अन्तर हैं वे इस प्रकार हैं (१) क्षेपक संख्या ६० है ५६ नहीं है, (२) सन ईस्वी के ध्रुवांक के कोष्ठक में शून्य के स्थान मे ऋण एक (-१) रखा गया है, (३) पहिले तीन उदाहरणों में भोग्यांश जोड़ने से पहिले क्षेपक और पीछे कालान्तर जोड़े हैं, और अन्तके उदाहरणों में तिथि भोग्यांश जोड़ने के पीछे क्षेपक और कालान्तर जोड़े हैं, (४) ध्रुवा में प्रथम भाग को गणना के योग को घटाने की विधि यद्यपि पाटी गणित के सामान्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नियमों के अनुसार की गई है, किन्तु तारीखों के विषय में कुछ विशेषता है- सबही जगह तिथि ३० से, वार ७ से और सूर्य करण तथा चन्द्र करण ३६० स्पष्ट कर रखे गये हैं किन्तु तारीखों में यह घटाने का कार्य नहीं किया गया है किन्तु फल ज्यों का त्यों रख दिया गया है।

नोट (२)- सारिणियों में संख्या १२, १३ तिथियों से तारीख और तारीख से तिथि बनाने के समय कालान्तर संस्कार देने के काम आती हैं। सारिणी संख्या १३ में तारीख दो प्रकार की दी हैं- नये पञ्चांग के अनुसार और पुराने पञ्चांग के अनुसार। इन सारिणियोंके द्वारा ही सब तरहके कालान्तर संस्कार निकाले जा सकते हैं जैसे ३५०० वर्ष का कालान्तर = २००० वर्ष का कालान्तर + १५०० का कालान्तर; ३२२० वर्षका कालान्तर = २००० वर्षका कालान्तर + १००० वर्ष० + २०० वर्ष०। इसी इसी तरह तिथियों और वर्षों की संख्या के अनुसार भाग करके इष्ट कालान्तर निकालना चाहिये। सारणी १३ भी एक कालान्तर सारिणी है, किन्तु इसके द्वारा शालिवाहन के शाकाब्द का संस्कार किया जाता है। जैसे शालिवाहन में ७८ जोड़कर योग फल के वर्षों के अनुसार कालान्तर निकालते हैं किन्तु जहां ठीक वर्ष नहीं मिलते वहां अभीष्ट वर्ष के आगे और पीछे के उन वर्षों का कालान्तर लिख लेते हैं, जो सारिणी में मिलते हैं और अन्तर निकाल कर त्रैराशिक के द्वारा ठीक ठीक कालांतर बना लेते हैं। जैसे १७६ शाके शालिवाहन का कालांतर—

यहां १७६ + ७८ = १०५४, और

१००० का कालांतर =	-.०१	-.०८	.६४
११०० का कालांतर =	-०.०	-.०६	.४९
दोनों का अन्तर =	-.०१	-.०२	.१३

क्यों कि १०५४ संख्या उक्त १००० और ११०० के लगभग बीच की है इस लिये उक्त अन्तर का आधा कर लिया = -.००५, -.६५ और इसे १००० के कालांतर में में जोड़ दिया।

यसूकरण सारिणी में सूर्य करण के योगांको को देख कर उसके प्रमाण के दिन का परिमाण औरचन्द्र करण सारिणी में तिथियों तथा चन्द्र करणों की संख्या के अनुसार दिन का प्रमाण जान कर तिथि (या तारीख जैसी आवश्यकता हो) में और वार में जोड़ते हैं, जैसे १७.४ सूर्य करण का योग है, तो इसके दिनका प्रमाण—.१७२ क्यों कि ९६ सूर्य के आगे .१७३ लिखे हैं अतः १७.४ का प्रमाण अनुमान से यह ही रख लिया। इस प्रकार चान्द्र वर्ष मिलाने की संक्षिप्त विधि है।

ओ३म मधवे स्वाहा माधवाय स्वाहा शुक्राय स्वाहा शुचये स्वाहा। नभसे स्वाहा नभस्याय स्वाहेषाय स्वाहोर्जाय स्वाहा। सहसे स्वाहा सहस्याय स्वा। तपसे स्वाहा तपस्याय स्वाहाऽ हस्पतये स्वाहा। यजु २२-३१

इति शम्।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्रन्थकर्ता की अन्य पुस्तकें

(१) दि कैट्लटूस्पास ऐक्ट (ऐक्ट नं० १ सन १८७१) पशु अनधिकार प्रवेश सम्बन्धी ऐक्ट की विस्तृत भूमिका और अब तक की नज़ीरोंसे युक्त व्याख्या सहित (क़ानून प्रेस कानपुर द्वारा प्रकाशित) मूल्य

(२) महाभारत—और उसका समय-ऐतिहासिक ग्रन्थ माला का दूसरा अंक (छप रहा है)

(३) ब्रह्माण्ड—ऋग्वेद के १२४ वें सूक्त का आधिदैविक व्याख्यान-ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति के सम्बन्ध में वैदिक ऋषियों के विचार-श्री स्वामि अनुभवानन्द सरस्वती 'शान्त' छपवा रहे हैं।

(४) भूलोक रहस्य—भूगोल विद्या का बहुत बड़ा मौलिक ग्रन्थ-ज्ञान मण्डल काशी द्वारा प्रकाशित किया जावेगा।

(५) श्री स्वामिदयानन्द की शत-सांवतसरिक जयन्ति और हमारा कर्त्तव्य। मूल्य ।॥

पुस्तकें मिलने का पता—

(१) ला० जगनलाल अग्रवाल पुस्तकाध्यक्ष
आर्यसमाज, बुलन्दशहर

(२) देवपाल गुप्त एण्ड ब्रादर्स बुकसेलर्स
बुलन्दशहर

ऐतिहासिक ग्रन्थ माला

का उद्देश्य ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित करना है जिनके द्वारा स्वतंत्र खोजका कार्य आरम्भ किया जा सके तथा किसी समय उसी खोज के आधार पर भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास तैयार किया जासके। इस माला के ग्राहकों और पाठकों को समय २ पर उन पुस्तकों के सम्बन्ध में सूचना दी जाया करेगी जो इस माला में प्रकाशित होती रहेंगी।

निवेदक

जगनलाल अग्रवाल
पुस्काध्यक्ष आर्यसमाज
बुलन्दशहर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh